हिन्दी दैनिक पटना (बिहार) तथा लुधियाना (पंजाब) से एक साथ प्रकाशित

रोजनामा इन्डो गल्फ

www.Newsindogulf.com/Email:-Newsindogulf730@gmail.com

सच्चाई में है दम, सच लिखते हैं हम

लुधियाना(पंजाब),शनिवार 18 जनवरी 2025 वर्ष : 01 अंक :01 पृष्ठ -12 T.PB.2024/901/1085 मूल्य - ₹ 3 लुधियाना संस्करण

ब्रीफ न्यूज

संभल: मकान निर्माण मामले में सबूत पेश करने के लिए सांसद बर्क को मिली 23 जनवरी तक की मोहलत

एजेंसी

संभल से समाजवादी पार्टी (सपा) के सांसद जिया-उर-रहमान बर्क को कथित रूप से नगर पालिका से नक्शा मंजूर कराये बगैर एक घर का निर्माण कराने के मामले में सबूत पेश करने के लिए बृहस्पतिवार को 23 जनवरी तक का समय दिया गया।इस मामले में सांसद को नोटिस जारी करने वाली उप जिलाधिकारी (एसडीएम) वंदना मिश्रा ने संवाददाताओं को बताया कि 16 जनवरी तक की मोहलत दी गयी थी, हालांकि, सांसद के वकील ने बृहस्पतिवार को एक आवेदन प्रस्तुत किया जिसमें कानूनी प्रतिनिधित्व में बदलाव के बारे में उप जिलाधिकारी न्यायालय को सूचित किया गया और सबूत पेश करने के लिए और समय मांगा गया।सांसद के वकील ने बृहस्पतिवार को एक आवेदन प्रस्तुत किया जिसमें कानूनी प्रतिनिधित्व में बदलाव के बारे में उप जिलाधिकारी न्यायालय को सूचित किया गया और सबूत पेश करने के लिए और समय मांगा गया।

पंजाब के सीएम भगवंत मान ने पटेल नगर में किया रोड शो,

बीजेपी के संकल्प पत्र को बताया 'पापड़'

पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने दिल्ली के पटेल नगर में आप प्रत्याशी प्रवेश रत्न के समर्थन में रोड शो किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि दिल्ली के लोग पढ़े-लिखे हैं और 8 फरवरी को चुनाव के नतीजे बीजेपी को चौंकाने वाले हैं।

एजेंसी

पंजाब: दिल्ली विधानसभा को लेकर जोर-शोर से चुनाव प्रचार किया जा रहा है। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने आज दिल्ली के पटेल नगर में आम आदमी पार्टी के उम्मीदवार प्रवेश रतन के समर्थन में रोड शो किया और जनता से वोट देने की अपील की। इस दौरान उन्होंने विपक्षी पार्टियों पर जमकर हमला बोला है। बता दें कि पटेल नगर से 2020 के विधानसभा चुनाव में आप के राजकुमार आनंद ने शानदार जीत दर्ज करके विधायक बने थे, लेकिन हाल ही में वह बीजेपी में शामिल हो गए। जिसके बाद 'आप' ने युवा नेता प्रवेश रत्न को पटेल नगर से उम्मीदवार बनाकर चुनावी मैदान में उतार दिया है।

चुनाव के नतीजे इखढ के लिए चौंकाने वाले होंगे- भगवंत मानपटेल नगर में एक रोड शो के दौरान भगवंत मान ने दावा करते हुए कहा कि दिल्ली में वह जहां भी जाते हैं, वहां पर लोगों का नारा है कि दिल्ली में अरविंद केजरीवाल को फिर से लाना है। उन्होंने कहा कि 8 फरवरी को दिल्ली विधानसभा चुनाव के नतीजे बीजेपी को चौंकाने वाले होंगे। इसके साथ ही उन्होंने कांग्रेस पर तंज कसते हुए कहा कि कांग्रेस को पहले से ही पता है कि उन्हें चुनाव में क्या मिलने वाला है।रोड शो के दौरान भगवंत मान ने एक सवाल का जवाब देते हुए कहा कि बीजेपी के मेनिफेस्टो पर तंज कसते हुए कहा कि पहले वे लोग आप सरकार की योजनाओं को 'रेवड़ी' कहते थे, और अब खुद क्या 'पापड़' रही है। उन्होंने कहा कि यह उनकी हार और बौखलाहट है, लेकिन हम जो कहते हैं वह करके दिखाते हैं। पंजाब में भी किया और दिल्ली में भी किया है। इसके अलावा भगवंत मान ने कहा कि वह पैसा कमाने के लिए राजनीति में नहीं आए हैं। एक तरफ दिल्ली का बेटा केजरीवाल है और दूसरी तरफ गाली-गलौच पार्टी, जिसके पास कोई मुद्दा नहीं है।

आयुष्मान भारत को अरविंद केजरीवाल ने बताया सबसे बड़ा घोटाला,

एजेंसी

नई दिल्ली: आम आदमी पार्टी (आप) के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने शुक्रवार को आयुष्मान भारत स्वास्थ्य योजना को देश का सबसे बड़ा घोटाला करार दिया। इससे पहले आज सुप्रीम कोर्ट ने उच्च न्यायालय के उस आदेश पर रोक लगा दी, जिसमें दिल्ली सरकार को इसे लागू करने के लिए केंद्र के साथ एक समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा गया था। केजरीवाल ने कहा कि मुझे खुशी है कि सुप्रीम कोर्ट ने पुष्टि की है कि यह एक फर्जी योजना है।' आयुष्मान भारत देश का सबसे बड़ा घोटाला है. जब केंद्र सरकार बदलती है और इन घोटालों की जांच होती है, तो लोगों को एहसास होगा कि आयुष्मान भारत वास्तव में कितना बड़ा घोटाला था।न्यायमूर्ति

SC ने हाई कोर्ट के आदेश पर लगाई थी रोक

बीआर गवई और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की शीर्ष अदालत की पीठ ने उस आदेश पर रोक लगा दी, जिसमें दिल्ली सरकार को पीएम-आयुष्मान भारत स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे को लागू करने के लिए 5 जनवरी तक केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के साथ एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा गया था। मिशन (पीएम-अभिम)।पीठ ने दिल्ली उच्च न्यायालय के 24 दिसंबर, 2024 के निर्देश के खिलाफ दिल्ली सरकार द्वारा दायर याचिका पर केंद्र और अन्य को नोटिस जारी कर जवाब मांगा।

उन्नाव रेप के दोषी कुलदीप सिंह सेंगर को लगा झटका, 20 जनवरी को सरेंडर करने का आदेश

एजेंसी

दिल्ली : दिल्ली हाई कोर्ट ने 2017 के उन्नाव बलात्कार मामले में चिकित्सा आधार पर निष्कासित भाजपा नेता कुलदीप सिंह सेंगर को दी गई अंतरिम जमानत बढ़ाने से शुक्रवार को इनकार कर दिया और उन्हें आत्मसमर्पण करने के लिए कहा। न्यायमूर्ति प्रतिभा एम सिंह और न्यायमूर्ति धर्मेश शर्मा की पीठ ने राहत को और बढ़ाने की मांग करने वाली सेंगर की याचिका पर सुनवाई से खुद को अलग कर लिया और मामले को 27 जनवरी को दूसरी पीठ के समक्ष रखने का निर्देश दिया। न्यायमूर्ति प्रतिभा एम सिंह और न्यायमूर्ति धर्मेश शर्मा की पीठ ने राहत को और बढ़ाने की मांग करने वाली सेंगर की याचिका पर सुनवाई से खुद को अलग कर लिया और मामले को 27 जनवरी को दूसरी पीठ के समक्ष रखने का निर्देश दिया।2019 में ट्रायल कोर्ट के जज रहते हुए जस्टिस धर्मेश शर्मा ने सेंगर को मामले में दोषी ठहराया और सजा सुनाई। न्यायमूर्ति सिंह ने कहा कि हम शामिल नहीं हो रहे हैं।

मनु-गुकेश समेत 4 को खेल रत्न, पेरिस पैरालंपिक में गोल्ड जीतने वाले नवदीप समेत 34 को अर्जुन अवॉर्ड

एजेंसी

नई दिल्ली: पिछले साल खेल की दुनिया में धमाकेदार प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को शुक्रवार को राष्ट्रीय खेल पुरस्कार बांटे गए। राष्ट्रपति भवन में हुए कार्यक्रम में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने विजेताओं को सम्मानित किया। उन्होंने सबसे पहले भारतीय ग्रैंडमास्टर डी गुकेश को मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया। डी गुकेश के अलावा पिछले साल पेरिस ओलंपिक में दो पदक जीतने वालीं निशानेबाज मनु भाकर को भी खेल रत्न पुरस्कार मिला। मनु भाकर के अलावा भारतीय मेंस हॉकी टीम के कप्तान हरमनप्रीत सिंह और पैरा एथलीट प्रवीण कुमार को भी मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार

से सम्मानित किया गया। पेरिस पैरालिंपिक 2024 में जेवलिन थ्रो का स्वर्ण पदक जीतने वाले नवदीप सिंह समेत 34 खिलाड़ियों को अर्जुन अवॉर्ड मिला।हरमनप्रीत सिंह टोक्यो और पेरिस ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने वाली भारतीय मेंस हॉकी टीम का हिस्सा थे। दूसरी ओर, प्रवीण ने पिछले साल पेरिस में टोक्यो पैरालंपिक के अपने रजत पदक को स्वर्ण में बदला था। उनका बायां पैर जन्म से ही छोटा था।मनु भाकर ने पेरिस ओलंपिक में 2 पदक जीते थे22 साल की निशानेबाज मनु भाकर पिछले साल पेरिस ओलंपिक में 10 मीटर एयर पिस्टल इंडिविजुअल और 10 मीटर एयर पिस्टल मिक्स्ड टीम इवेंट में कांस्य पदक जीतकर ओलंपिक के एक ही संस्करण में दो पदक जीतने वाली आजाद भारत की पहली एथलीट बनीं थीं। मनु के 2 पदक के दम पर भारत ने पेरिस ओलिंपिक में कुल 6 मेडल जीते थे।

जालंधर में PSPCL के 2 कर्मचारी गिरफ्तार, मामला जान रह जाएंगे हैरान

एजेंसी

जालंधर : भ्रष्टाचार के खिलाफ विजिलेंस एक्शन जारी है। पंजाब विजिलेंस ब्यूरो ने कार्रवाई करते हुए भोगपुर में जूनियर इंजीनियर और लाइनमैन को 5 हजार रुपए रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों काबू किया है। उक्त इंजीनियर पी.एस.पी.सी.एल. भोगपुर में तैनात बताए जा रहे हैं जिसकी पहचान जूनियर इंजीनियर मनजीत सिंह और लाइनमैन हरजीत सिंह के रूप में हुई है। जालंधर रेंज विजीलेंस ने कार्रवाई करते हुए मामला दर्ज कर

लिया है। आरोपियों को कोर्ट में पेश कर जल्द ही रिमांड पर लिया जाएगा। यह उक्त कार्रवाई मकसूदां के सुदर्शन पार्क एरिया के रहने वाले सुमीत वधवा द्वारा दी गई शिकायत के आधार पर की गई है। शिकायतकर्ता सुमीत ने बताया कि दोनों आरोपियों ने उसके घर में पुराना मीटर हटाने और नया मीटर लगाने के बदले में रिश्वत की मांग की। वहीं जांच दौरान सामने आया कि लाइनमैन यू.पी.आई. पेमेंट के जरिए 5000 रुपए पहले ही ले चुका था और बाकी 5000 रुपए की मांग कर रहा था। वही विजिलेंस अधिकारियों ने कहा कि जब उनके पास शिकायत पहुंची तो उन्हें जाल बिछाकर सरकारी गवाहों की मौजूदगी में दोनों आरोपियों को गिरफ्तार किया।

दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए अब तक 841 उम्मीदवारों ने नामांकन पत्र दाखिल किये

एजेंसी

नई दिल्ली: दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए बृहस्पतिवार को 500 उम्मीदवारों ने अपने नामांकन पत्र दाखिल किए, जिससे 70 विधानसभा सीट के लिए नामांकन दाखिल करने वाले उम्मीदवारों की कुल संख्या 841 हो गई है।दिल्ली के मुख्य निर्वाचन (सीईओ) अधिकारी ने यह जानकारी दी। नामांकन दाखिल करने वालों में आम आदमी पार्टी (आप) के वरिष्ठ नेता और पूर्व मंत्री शामिल हैं। मनीष सिसोदिया ने जंगपुरा निर्वाचन क्षेत्र से, गोपाल राय ने बाबरपुर

से और सौरभ भारद्वाज ने ग्रेटर कैलाश क्षेत्र से अपना नामांकन दाखिल किया।कांग्रेस नेता संदीप दीक्षित नयी दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र से अपना नामांकन दाखिल किया, जहां वह ह्यआपह्ल के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल को चुनौती देंगे। ह्यआपह्ल के पूर्व पार्षद ताहिर हुसैन ने मुस्तफाबाद सीट से ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) के उम्मीदवार के रूप में अपना नामांकन पत्र दाखिल किया।ह्यआपह्ल के पूर्व पार्षद ताहिर हुसैन ने मुस्तफाबाद सीट से ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (एआईएमआईएम) के उम्मीदवार के रूप में अपना नामांकन पत्र दाखिल किया।

खून से लथपथ थे सैफ अली खान, सही समय पर 'भजन' की मौजूदगी से कैसे बची जान,

अस्पताल ले जाने वाले ऑटो ड्राइवर ने जो बताया वो कर देगा हैरान

एजेंसी

मुम्बई: सैफ अली खान पर चाकू से अटैक हुआ था।इस अटैक के बाद वो खून से लथपथ ऑटो में बैठकर हॉस्पिटल पहुंचे थे। अब उस ऑटो ड्राइवर ने उस रात क्या-क्या हुआ इसे लेकर पूरी कहानी बताई है।भजन सिंह ने बताया कि वो नाइट में ही गाड़ी चलाते हैं और सवारी की तलाश में घूम रहे थे। एक लेडी सामने से भागते हुए आती है और कहती है कि भईया फटाक से यू-टर्न लो और गाड़ी गेट पर लगाओ इमरजेंसी है। किसी को घाव लगा है। मैं जब गेट पर जाता हूं तो दो-चार लोग निकलते हैं। रिक्शा गेट पर लगाने के बाद वहां एक आदमी निकलता है। उसका पूरा सफेद कुर्ता खून से सना हुआ होता है। देखने के बाद मुझे भी अफसोस हुआ कि इसको ज्यादा जख्म लगा हुआ है। मैंने फटाफट बैठाया उनको। उनके साथ एक बच्चा बैठा और उनके साथ एक और आदमी बैठा था। ड्राइवर ने कहा कि ये करीब तीन पौने तीन बजे की बात है। ऑटो में बैठने के बाद मुझे हॉस्पिटल लेने को कहा। वे आपस में बात कर रहे थे। मैंने पूछा कि सर किधर जाएंगे। तो आपस में उन लोगों ने बात की कि लीलावती जाएं या फिर होली फैमिली? सैफ अली खान ने कहा कि लीलावती चलो। फिर मेरे से उनसे पूछा कितना टाइम लगेगा। हम आठ से दस मिनट में पहुंच गए। जब अस्पताल पहुंचे तो हम उन्हें इमरजेंसी डोर पर लेकर गए। वहां एंबुलेंस खड़ी थी। एंबुलेंस हटी पीछे उसके बाद रिक्शा साइड लगाया। हॉस्पिटल पहुंचने के बाद सैफ ने वहां स्टाफ से कहा कि मैं सैफ अली खान हूं।

पंजाबके इस गांव की अनोखी पहल, गली-गली में लग गए पोस्टर...देने पड़ेंगे 21 हजार रुपए

एजेंसी

पंजाब: बठिंडा (विजय वर्मा) : पंजाब के एक गांव की अनौखी पहल सामने आई है, अगर नियमों की पालन नहीं किया तो 21 हजार रुपए जुर्माना भी देने पड़ सकते है। मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के कुशल नेतृत्व में जहां राज्य सरकार गांवों के विकास के लिए महत्वपूर्ण कदम उठा रही है। इसी के चलते बठिंडा में एक गांव पंचायत डिख के युवा सरपंच गुरदीप सिंह की अध्यक्षता में ग्राम सभा की आम बैठक के दौरान महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए हैं तथा सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लड़ने का संकल्प लिया गया है।ग्राम सभा में लिए गए निर्णय के अनुसार, गांव में मर्ग भोग के अवसर पर फिजूलखर्ची पर अंकुश लगाने के लिए जलेबी और पकौड़े बनाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है और उल्लंघन करने

वालों को 21 हजार रुपये का जुमार्ना देना होगा। इसके अलावा, पंचायत ने उच्च शिक्षा परीक्षाओं की तैयारी कर रहे गांव के जरूरतमंद विद्यार्थियों को पुस्तकें व अन्य वित्तीय सहायता प्रदान करने का भी निर्णय लिया है। इस बीच पंचायत ने विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने का भी निर्णय लिया है और कहा है कि यदि गांव का कोई भी बच्चा शिक्षा के क्षेत्र में मेरिट सूची में आता है तो उसे 21 हजार रुपये की राशि देकर सम्मानित किया जाएगा। नशे पर अंकुश लगाने के उद्देश्य से यदि गांव में कोई भी व्यक्ति अवैध नशीले पदार्थ जैसे चिट्टा, शराब या गोलियां बेचते हुए पकड़ा गया तो पंचायत उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई करेगी। इसी प्रकार महंतों को बधाई देने के लिए धनराशि भी तय कर दी गई। गांव की गलियों में मिट्टी या अन्य सामग्री जमा करना प्रतिबंधित है।इसी प्रकार, गांव में पानी का दुरुपयोग रोकने के लिए नल और गेटवॉल लगाना अनिवार्य कर दिया गया है। पानी का बिल न चुकाने पर कनेक्शन काट दिया जाएगा। गांव की दुकानों पर 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों को सिगरेट और तंबाकू बेचने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है। गांव में कोई भी ध्वनि प्रदूषण रोकने के लिए नारे नहीं लगाएगा। इसके अलावा लाइब्रेरी का नाम संत गुरदयाल सिंह तथा खेल मैदान का नाम संत कृपाल सिंह के नाम पर रखने तथा हर वर्ष 'धीयां दा लोहड़ी' मनाने, चाइना डोर पर प्रतिबंध लगाने तथा खेलने वाले बच्चों के लिए कोच की व्यवस्था करने का निर्णय लिया गया।

शिवहर और सीतामढ़ी में एनडीए कार्यकर्ता सम्मेलन में उमड़ी कार्यकताओं की भीड़, पांचों घटक दलों के प्रदेश अध्यक्षों ने कार्यकताओं को दिलाया जीतने का संकल्प

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

- एनडीए की संस्कृति न्याय के साथ विकास : डॉ. दिलीप जायसवाल
- जनता का विश्वास, एनडीए ही समाज के हरेक वर्ग के कल्याण के लिए प्रयत्नशील : डॉ. दिलीप जायसवाल
- बिहार में महिलाएं बन रही आत्मनिर्भर : उमेश सिंह कुशवाहा
- कार्यकताओं का उत्साह और जोश का संदेश साफ, कार्यकताओं के दम पर एनडीए जीतेगी चुनाव : राजू तिवारी
- कार्यकताओं का यह उत्साह ही चुनाव में विजयश्री दिलवाएगा : अनिल सिंह
- एनडीए के कार्यकर्ता पूरे पांच साल तक जन सेवा में जुटे रहते हैं : मदन चौधरी

पटना, 17 जनवरी । भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सह बिहार के राजस्व और भूमि सुधार मंत्री डॉ. दिलीप जायसवाल सहित एनडीए घटक दलों के सभी प्रदेश अध्यक्षों ने शिवहर और सीतामढ़ी में आज एनडीए कार्यकर्ता सम्मेलन में भाग लेते हुए कार्यकताओं का उत्साहवर्द्धन किया और जोश भरा। सभी दलों के अध्यक्षों ने उपस्थित हजारों कार्यकताओं को चुनाव जीतने का संकल्प दिलाया और आज से ही चुनावी कार्यों में जुट जाने का आह्वान किया।दोनों जिलों में आयोजित एनडीए कार्यकर्ता सम्मेलन में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. दिलीप जायसवाल, जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा, लोजपा (आर) के प्रदेश अध्यक्ष राजू तिवारी, हम के प्रदेश अध्यक्ष अनिल सिंह, रालोमो के प्रदेश अध्यक्ष मदन चौधरी ने संयुक्त रूप से भाग लिया और एकजुटता का संदेश देते हुए कहा कि हम सभी मजबूती से चुनाव मैदान में उतरेंगे और जीतेंगे।आज एनडीए कार्यकर्ता सम्मेलन शिवहर के समाहरणालय मैदान तथा सीतामढ़ी के डुमरा स्थित हवाई अड्डा मैदान में आयोजित की गई। इन दोनों स्थानों पर बड़ी संख्या में सभी घटक दलों के कार्यकर्ता पहुँचे और जमकर एनडीए के पक्ष में नारेबाजी की।सम्मेलन में आए एनडीए कार्यकताओं को संबोधित करते हुए भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. दिलीप जायसवाल ने विश्वास व्यक्त करते हुए कहा, "भाजपा और एनडीए की संस्कृति विकास की संस्कृति रही है। परिवर्तन किसे कहते हैं, यह हमने नरेंद्र भाई मोदी और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में करके दिखाया है। यह हमारी विकास की ही नीति है कि हम हर राज्यों में बारम्बार चुनकर आते हैं। बिहार, महाराष्ट्र, गुजरात जैसे कई राज्य इसके उदाहरण हैं।उन्होंने जोर देकर कहा कि हम बिहार की सभी 243 सीटों पर चुनाव जीतने के लिए मैदान में उतरेंगे। उन्होंने कहा कि आज कार्यकर्ता सम्मेलन में कार्यकताओं का उमड़ा जनसैलाब बिहार देख रहा है कि बिहार एनडीएमय हो चुका है।उन्होंने विपक्ष पर खासकर राजद के अध्यक्ष लालू यादव पर निशाना साधते हुए कहा कि आज लालू यादव के परिवार को लार टपक रही है कि उन्हें जूठन खाने को मिलने वाला है, लेकिन अब वे लोग सुन लें कि अब जूठन खाने को नहीं मिलने वाला है। एनडीए मजबूत है, एनडीए एक है और एनडीए मजबूती के साथ 2025 के लिए तैयार है।उन्होंने कार्यकताओं से आह्वान करते हुए कहा कि सभी दलों के कार्यकर्ता मिलकर अपनी ताकत को बढ़ाइए और आने वाले चुनाव में इस चट्टानी एकता को बनाकर दिखाइए।

रेडियो स्नेही नुक्कड़ नाटक के माध्यम से चला रहा है स्वास्थ्य जागरूकता अभियान

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

सिवान: सामुदायिक रेडियो स्टेशन रेडियो स्नेही और स्मार्ट के संयुक्त प्रयास से "स्वास्थ्य सही लाभ कई" नामक एक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इस कार्यक्रम के तहत 100 दिवसीय टीबी उन्मूलन अभियान का संचालन किया जा रहा है, जिसमें सिवान के विभिन्न स्थानों पर नुक्कड़ नाटक के माध्यम से आम जनता को टीबी (तपेदिक) के लक्षण, बचाव के उपाय और सरकारी योजनाओं की जानकारी दी जा रही है।नुक्कड़ नाटकों में कलाकार रोचक और प्रभावशाली तरीके से यह समझाते हैं कि कैसे समय पर जांच और उपचार से टीबी का पूर्ण इलाज संभव है। साथ ही, सरकार द्वारा उपलब्ध टीबी उपचार और सेवाओं जैसे मुफ्त दवाओं और जांच की सुविधा पर भी प्रकाश डाला जा रहा है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य टीबी के प्रति समाज में व्याप्त गलत धारणाओं को दूर करना और अधिक से अधिक लोगों को जागरूक बनाना है।

लोजपा (रामविलास) दिल्ली स्थित प्रधान कार्यालय मे पार्टी के केंद्रीय संसदीय बोर्ड की बैठक

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

आज लोजपा (रामविलास) दिल्ली स्थित प्रधान कार्यालय मे पार्टी के केंद्रीय संसदीय बोर्ड की बैठक हुई। बैठक में दिल्ली विधानसभा चुनाव में देवली (अ.जा) विधानसभा से एनडीए समर्पित लोजपा (रामविलास) के प्रत्याशी दीपक तंवर के नाम पर गहन मंथन किया गया एवं बैठक में उपस्थित बोर्ड के सदस्यों के द्वारा पार्टी के संसदीय बोर्ड के राष्ट्रीय अध्यक्ष को अपने स्तर से निर्णय लेने के लिए अधिकृत किया गया। इसके तत्पश्चात लोजपा रा के प्रत्याशी के रूप में देवली (अ.जा.) विधानसभा से प्रत्याशी होने का संसदीय बोर्ड के राष्ट्रीय अध्यक्ष चिराग पासवान द्वारा दीपक तंवर के नाम पर अंतिम मोहर लगी एवं पार्टी का उन्हें सिंबल दिया गया ।आगे श्री चिराग ने कहा कि दीपक तंवर लम्बे समय तक बिना किसी स्वार्थ के अपने क्षेत्र मे लोगों के बीच काम किया है। दीपक तंवर दशकों से मेरे और मेरे पिता आदरणीय रामविलास पासवान जी के विचारों और सिद्धांतों के साथ जुड़े रहें। मुझे उम्मीद है कि वे बड़े अंतराल से जीतेंगे और लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास का हर नेता ,हर कार्यकर्ता पूरी मेहनत के साथ एनडीए के हर प्रत्याशी को विजयी बनाने का काम करेगी।आगे श्री चिराग ने पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि अभी दिल्ली मे जिस तरीके से मौजूदा सरकार के खिलाफ लोगों में आक्रोश है । पूर्व मुख्यमंत्री केजरीवाल जी के नीतियों एवं उनके झूठे वादों से जिस तरीके से दिल्ली की जनता लगभग पिछले एक दशक से परेशान है, इस बार दिल्ली की जनता बदलाव का मन बना ली है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की सोच वाली सरकार इस बार दिल्ली में बनेगी। आगे श्री चिराग ने कहा कि मैं मानता हूं कि भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व में एक मजबूत एनडीए की सरकार 8 तारीख को परिणाम के बाद बनने जा रही है।पार्टी के प्रदेश मीडिया प्रभारी कुंदन कुमार ने बताया कि उक्त अवसर पर पार्टी के जमुई सांसद सह प्रदेश संगठन प्रभारी अरुण भारती, राष्ट्रीय प्रधान महासचिव अब्दुल खालिक, दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष शंकर मिश्रा मौजूद थे। पार्टी के प्रदेश मीडिया प्रभारी कुंदन कुमार ने बताया कि वहीं सिंबल मिलने के बाद दीपक तंवर ने देवली विधानसभा क्षेत्र से एनडीए समर्थित लोक जनशक्ति पार्टी रामविलास के प्रत्याशी के रूप में अपना नामांकन दाखिल किया।

चिराग पासवान जी ने माननीय वित्त मंत्री श्रीमती सीता रमन से मुलाकात की

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

आज नई दिल्ली में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह केंद्रीय मंत्री आदरणीय श्री चिराग पासवान जी ने माननीय वित्त मंत्री श्रीमती @nsitharaman जी से मुलाकात की। इस दौरान आने वाले दिनों में पेश होने वाले आम बजट 2025 में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय की भूमिका पर सार्थक चचाएँ हुई। साथ ही भारत के आर्थिक विकास में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय @nsitharaman के योगदान को लेकर भी कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विचार साझा किए गए।

रंजीत कुमार को मौर्यवंसी एकता मंच का राष्ट्रीय प्रधान महासचिव मनोनीत किया गया

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

ताजपुर /समस्तीपुर (रोजनामा इन्डो गल्फ संवाददाता) : - मौर्यवंसी एकता मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरेश मिलन कुशवाहा ने ताजपुर प्रखंड के मुरादपुर बंगरा निवासी समाजिक कार्यकर्ता रंजीत कुमार को अपने संगठन मौर्यवंशी एकता मंच का राष्ट्रीय प्रधान महासचिव मनोनीत किया है रंजीत ।मनोनयन पत्र जारी करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कुशवाहा ने आशा और विश्वास जताते हुए उम्मीद किया है कि पद का निर्वहन पुरी निष्ठा व लगन से करेंगे तथा महान सम्राट अशोक के आदर्शो का पालन करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ती तक की सेवा करेंगे।

हरिहांस के लाल ने मिस्टर इंडिया बॉडीबिल्डिंग में जीता खिताब

हुसैनगंज प्रखंड समेत सीवान जिले का नाम किया रौशन, हरिहांस गांव में मिस्टर इंडिया ट्रॉफी के साथ पहुंचने पर हुआ जोरदार स्वागत

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

हुसैनगंज,संवाददाता। प्रखंड के हरिहांस निवासी मोहम्मद सरफराज को पटना में आयोजित मिस्टर इंडिया बॉडीबिल्डिंग चैंपियनशिप प्रतियोगिता में बेहतरीन प्रदर्शन कर खिताब अपने नाम किया। बिहार के पटना में 12 जनवरी को इंटर बॉडीबिल्डिंग फिटनेस एसोसिएशन (आईबीएएफ) द्वारा मिस्टर इंडिया बॉडीबिल्डिंग चैंपियनशिप प्रतियोगिता का आयोजन हुआ था। जिसमें इंडिया के विभिन्न राज्यों से सैकड़ों की संख्या में बॉडीबिल्डर अपनी किस्मत आजमाने के लिए उपस्थित हुए थे। वहीं हुसैनगंज प्रखंड के हरिहांस निवासी मोहम्मद सरफराज उर्फ राजा बाबू भी हिस्सा लेने पहुंचे थे। कंपटीशन में आए सभी बॉडीबिल्डर्स ने अपना प्रदर्शन दिखाया । मुहम्मद सरफराज ने भी अपनी बेहतरीन फिजिक का प्रदर्शन कर दर्शकों एवं आयोजकों की खूब वाहवाही लूटी। अंत में मिस्टर इंडिया चैंपियनशिप प्रतियोगिता के विजेताओं की घोषणा हुई जिसमें मो० सरफराज ने अपने बेहतरीन फिजिक की बदौलत तीसरा रैंक हासिल किया। आयोजकों द्वारा उन्हें मेडल, ट्रॉफी, सर्टिफिकेट एवं कैश प्राइज के साथ साथ अन्य उपहार दिए गए। हरिहांस गांव में उनकी उपलब्धि को देखकर उनके दोस्त एवं ग्रामीण खुद को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। गांव पहुंचते ही दोस्तों समेत गांव के बड़े बुजुर्गों ने उन्हें बधाई एवं आशीर्वाद दिया। मो० सरफराज ने बताया कि उन्हें बचपन से बॉडीबिल्डर बनने का शौक है। वो अपनी जीत का श्रेय अपने माता पिता एवं अपने जीम ट्रेनर के साथ फैजान नईम को देते हैं जिन्होंने हमेशा उनका हौसला बढ़ाया।

बखरी नगर परिषद के वार्ड पार्षद श्रीमती अनिता देवी ने किया डस्टबिन का वितरण, स्वच्छता के प्रति किया जागरूक

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

बखरी (बेगुसराय) ' शुक्रवार को बखरी नगर परिषद के वार्ड नंबर 14 में शुक्रवार को बखरी नगर परिषद के वार्ड पार्षद श्रीमती अनिता देवी ने किया डस्टबिन का वितरण, स्वच्छता के प्रति किया जागरूक जिसमें वार्ड पार्षद श्रीमती अनिता देवी ने क्षेत्रवासियों के बीच डस्टबिन का वितरण किया। इस मौके पर सुनील पोद्दार , रविन्द्र सहनी मौजूद मंटून सहनी रामचंद्र सहनी मौजूद थे नेहाली ने हिन्द दर्पण समाचार पत्र से बात चीत में बताया कि इस पहल का उद्देश्य क्षेत्र में स्वच्छता को बढ़ावा देना और नागरिकों को कचरे के उचित निपटान के प्रति जागरूक करना था।कार्यक्रम के दौरान वार्ड पार्षद श्रीमती अनिता देवी ने अपने संबोधन में कहा, "स्वच्छता ही सेवा है और हमें अपने आस-पास के वातावरण को स्वच्छ रखने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए। डस्टबिन का उपयोग करने से कचरा खुले में नहीं फैलेगा और नगर परिषद के स्वच्छता अभियान को सशक्त बनाने में मदद मिलेगी।"नेहाली ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजनों से क्षेत्र में स्वच्छता के प्रति जागरूकता में वृद्धि होगी। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि वे डस्टबिन का सही तरीके से उपयोग करें और इस स्वच्छता अभियान में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करें।
इस अवसर पर वार्ड के विभिन्न स्थानों पर डस्टबिन रखे गए, ताकि नागरिकों को कचरे के निपटान में सुविधा हो सके। कार्यक्रम के बाद स्थानीय नागरिकों ने इस पहल को सराहा और श्रीमती अनिता देवी तथा नेहाली सुनील कुमार का आभार व्यक्त किया।इस कदम से बखरी नगर परिषद के स्वच्छता अभियान को और मजबूती मिली है, और क्षेत्रवासियों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने की उम्मीद भी जताई जा रही है। इलाके में स्वच्छता की स्थिति में सुधार की संभावना जताई जा रही है, जिससे पूरे क्षेत्र में स्वास्थ्य और जीवनस्तर में सुधार हो सकेगा।यह खबर हमारे चैनल के लिए बखरी नगर परिषद के स्वच्छता कार्यक्रम से संबंधित है, हम आपको इससे जुड़ी हर अपडेट देने के लिए तत्पर हैं

कांग्रेस ने बाबा साहब को अपमानित करने का काम किया: शिवेश राम

राजद शासन काल में सबसे अधिक दलितों की हत्या हुई: शिवेश राम

वरिष्ठसंवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

- भाजपा के लिए संविधान के प्रति आदर, समर्पण नैसर्गिक और स्वाभाविक : गुरु प्रकाश
- बाबा साहब को अपमानित करने के पाप को धोने के लिए राहुल गांधी महाकुंभ में जाकर स्नान कर, देश से माफी मांगे : प्रेम रंजन पटेल

पटना, 17 जनवरी। भाजपा के प्रदेश महामंत्री शिवेश राम ने आज कांग्रेस पर बाबा साहब भीमराव अंबेडकर को अपमानित करने का आरोप लगाते हुए लोगों को सचेत करते हुए कहा कि विपक्ष द्वारा यह नरेटिव बनाने की कोशिश की जा रही है कि भाजपा संविधान के खिलाफ है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने न केवल बाबा साहब को अपमानित किया, बल्कि पूर्व राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद को भी अपमानित किया। भाजपा प्रदेश कार्यालय में आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन में भाजपा नेता शिवेश राम ने कहा कि कांग्रेस भीमराव अंबेडकर को प्लेट में रखकर ही कोई कागज देती थी, जिससे उनके छूने से बचा जा सके। आजादी के बाद से कभी भी कांग्रेस ने उन्हें सम्मान देने का काम नहीं किया, जब भाजपा समर्थित सरकार आई तब उन्हें भारत रत्न देने का काम किया गया। उन्होंने कहा कि उनसे जुड़े पाँच स्थानों को पंच तीर्थ बनाए गए।उन्होंने कांग्रेस के नेता राहुल गांधी से सवाल करते हुए कहा कि वे एक तरफ कहते हैं कि संविधान खतरे में है और दूसरी तरफ उन्हीं की पार्टी के जगजीवन राम को प्रधानमंत्री बनने से रोका। इसी तरह रमई राम से मुकुट छीन लिया गया। यही नहीं, उन्होंने कहा कि बिहार में राजद की सरकार में, जो कांग्रेस के समर्थित थी, उसमें दलितों की सबसे अधिक हत्या हुई। जब एनडीए की सरकार बनी तो आज सभी लोग मिलकर रह रहे हैं। आज राहुल गांधी संविधान बचाने की बात करते हैं लेकिन हकीकत है कि संविधान को सबसे अधिक नुकसान उन्हीं लोगों ने पहुंचाया है।
उन्होंने साफ लहजे में कहा कि अंग्रेजो के समय हो रही जातीय गणना को भी कांग्रेस के नेहरू ने ही बंद करवाया था। इधर, राष्ट्रीय प्रवक्ता और संविधान गौरव अभियान कार्यक्रम के राष्ट्रीय सदस्य गुरु प्रकाश ने कहा कि भाजपा के लिए संविधान के प्रति आदर, समर्पण नैसर्गिक और स्वाभाविक है। कांग्रेस को इसके लिए संविधान दिखाना पड़ता है लेकिन भाजपा के कार्यकताओं के लिए यह श्रद्धा का केंद्रबिंदु है। जिन लोगों ने बाबा साहब की जीते जी तो अपमानित किया ही, उनके निधन के बाद भी उन्हें कोई सम्मान नहीं दिया। उन्होंने कहा कि आखिर कौन सी मजबूरी थी कि उन्हें भारत रत्न का सम्मान कांग्रेस सरकार ने नहीं दिया। उन्हें भारत रत्न तब दिया गया जब गैर कांग्रेसी सरकार बनी, जिसे भाजपा का समर्थन प्राप्त था। आज राहुल गांधी सामाजिक न्याय की बात कर रहे हैं लेकिन ऐसा नहीं है। उन्होंने याद कराते हुए कहा कि 2014 में जब भाजपा की सरकार बनी तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने पहले भाषण की पहली पंक्ति में कहा था कि उनकी सरकार गरीब, दलित, शोषित, पीड़ित और वंचितों की सरकार होगी और आज तक वह कायम है। उन्होंने कांग्रेस पर बाबा साहब की विरासत को अपमानित करने की बात कही।
इस प्रेस वार्ता को प्रदेश प्रवक्ता एवं संविधान गौरव अभियान के प्रदेश संयोजक प्रेम रंजन पटेल ने भी संबोधित किया। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी आज संविधान बचाने की बात करते हैं लेकिन यही वह कांग्रेस है जिसने इस संविधान में 75 संशोधन किए हैं। यही नहीं, कांग्रेस ने संसद में बाबा साहब का तैल चित्र नहीं लगने दिया। उन्होंने कांग्रेस के नेता राहुल गांधी से कहा कि कांग्रेस ने बाबा साहब को जो अपमानित करने का पाप किया है, उस पाप को धोने के लिए वह कुंभ में जाकर स्नान करें और देश के लोगों से माफी मांगे।

गोदाम के ताला काटकर 04 सौ से 05 सौ कार्टून तेल की चोरी

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। जिले के वारिसनगर प्रखंड के तहत मथुरापुर थाना क्षेत्र के मुक्तापुर तेल डिपो के पास अज्ञात चोरो ने चार सौ से पांच सौ रिफाइन तेल की कार्टून चोरी कर ली। इस मामले 16 जनवरी को प्राथमिकी दर्ज की गई है। दुकानदार मुकेश कुमार केडिया ने कहा है कि मेरा दुकान व गोदाम गोविन्द राम केडिया एलएलपी में चोरों ने मैन गेट के ताला व अंदर के दो ताला काटकर गोदाम में रखे करीब 07 लाख के कार्टून रिफाईन तेल चोरी कर ली गई है। दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरा जब देखे तो पता चला कि अज्ञात चोरों ने उक्त समान को मालवाहक पिकअप पर लादकर ले गया है इधर जानकारी मिलने पर स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंचकर मामले की जांच पड़ताल में जुट गई है।

राहुल गांधी के कार्यक्रम को लेकर तैयारियां पूरी, तैयारी की समीक्षा करते रहे प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डॉ .अखिलेश प्रसाद सिंह

कल (18 जनवरी) पटना पहुंच रहें हैं राहुल गांधी, तैयारियों को लेकर डटे रहे प्रदेश प्रभारी मोहन प्रकाश और अध्यक्ष

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

पटना. शुक्रवार, 17 जनवरी, 2024अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के पूर्व अध्यक्ष एवं नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी कल दिनांक 18 जनवरी को बिहार के एकदिवसीय दौरे पर पटना आ रहे हैं। लोकसभा चुनाव और नेता प्रतिपक्ष बनने के बाद यह उनकी पहली बिहार यात्रा है। प्रदेश कांग्रेस के मीडिया विभाग के चेयरमैन राजेश राठौड़ ने बताया कि कल सबसे पहले पटना एयरपोर्ट से कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष व देश के विपक्ष के नेता राहुल गांधी बापू सभागार में आयोजित संविधान सुरक्षा सम्मेलन में शामिल होंगे और वहां दो घंटे तक कार्यक्रम में रहने के बाद प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय सदाकत आश्रम आयेंगे। इस दौरान वें बिहार कांग्रेस मुख्यालय सदाकत आश्रम के कर्मचारियों के नवनिर्मित भवन जिसका नाम इंदिरा भवन रखा गया है उसका उद्घाटन करेंगे और मंचारियों को आवास की चाबी सौंपेंगे। इसके बाद वें कांग्रेस मुख्यालय के मुख्य सभागार के नवीनीकरण के उपरांत उसका उद्घाटन करेंगे, इस सभागार का नामकरण राजीव गांधी सभागार के नाम से करने की घोषणा भी करेंगे। इसके पश्चात वें प्रदेश मुख्यालय के मैदान में आयोजित विशाल कार्यकर्ता न्याय सम्मेलन में पूरे प्रदेश से आएं कांग्रेस कार्यकताओं को संबोधित करेंगे। राष्ट्रीय नेता राहुल गांधी की यह यात्रा इसलिए भी मायने रखती है कि वें भारत जोड़ो न्याय यात्रा और लोकसभा चुनावों के बाद पहली बार बिहार आ रहे हैं और कांग्रेस कार्यकताओं से सीधा संवाद करेंगे।राहुल गांधी के कार्यक्रम को लेकर प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय को भव्य तरीके से सजाया जा रहा है और विशाल पंडाल की व्यवस्था की जा रही है। साथ ही नवनिर्मित भवनों को तेजी से सजाया जा रहा है और रंग रोगन का कार्य पिछले महीनों से लगातार चल रहा है। इसकी समीक्षा खुद प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह कर रहे हैं और वें लगातार कार्यक्रम स्थल पर डटकर एक एक तैयारियों की समीक्षा कर रहें हैं। प्रदेश कांग्रेस के प्रभारी मोहन प्रकाश और प्रदेश अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह ने आज मंच से लेकर पंडाल और कार्यकताओं के बैठने के स्थान तक की बारीकी से समीक्षा की और अपने देखरेख में एक एक व्यवस्था को संचालित कर रहे हैं।इस कार्यक्रम में प्रदेश कांग्रेस के प्रभारी मोहन प्रकाश, प्रदेश अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह सहित सभी वरिष्ठ नेतागण मौजूद रहेंगे।

पूर्णेन्दु द्वारा आयोजित दही चुड़ा भोज में पूर्व सांसद ने कार्यकर्ता से परिहार सीट भारी अंतर से जिताने की अपील

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

सोनबरसा । भाजपा देश को सौ वर्ष पीछे कर दिया, लेकिन भाजपा के कार्यकर्ता मोदी का नाम लेना नही भुलते। परिहार विधानसभा सीट जीता हुआ सीट है। लोगों ने राजद पर भरोसा किया। परिहार से पांच हजार से मुझे बढ़त मिली थी। हम सभी को संकल्प लेना है कि अंतर बढ़ा यह सीट जीतना है। उक्त बातें राजद नेता पूर्णेन्दु कुशवाहा द्वारा आयोजित दही चुड़ा भोज व कार्यकर्ता मिलन समारोह में पूर्व सांसद डॉ अर्जुन राय ने कही। उन्होंने कहा कि नीतीश के 20 वर्षो का शासनकाल पूर्ण हो चुका है। सीतामढ़ी में दहशत कायम है। ठीकेदारी पर अपराधी का कब्जा है, अपराधियों का जमीन पर कब्जा हो रहा है। जीते हुए सांसद गाली देना शुरू कर दिए हैं। सांसद का व्यवहार देश का आईना होता है। हमें जिसने वोट नही दिया आज भी उनसे अच्छे रिश्ते हैं। सांसद द्वारा जातियों पर टिप्पणी की गई, नीतीश कुमार चुप बैठे रहे, मतलब साफ है इन्हें नीतीश का समर्थन है। 15 वर्षों से नेवता पूरने वाले विधायक है। विधायक का काम विकास करना है। क्षेत्र के साथ राज्य का विकास करना है। जदयू भाजपा की सरकार बेवकूफ बना कर शासन कर रही है। नीतीश कभी विद्यार्थी की पीटाई करवाते है, तो कभी इंजीनियर का पैर छुने लगते हैं। तेजस्वी के बातों पर भरोसा करें। माई बहिन योजना, पेंशन में बढ़ोतरी की घोषणा की गई है, वह सरकार बनते ही प्रारंभ कर दिया जाएगा। झारखंड में हम सहयोगी है, वहां बिजली 200 यूनिट तक फ्री दी जाने लगी और पेंशन भी 1500 प्रतिमाह दिया जा रहा है। मोदी की तरह झूठे वादें नही करते। 2020 के विधानसभा में दस लाख नौकरी का तेजस्वी यादव ने वादा किया था। तेजस्वी के सरकार में रहते हुए 17 महीने में पांच लाख नौकरी दी गई। शासनकाल सोनबरसा की धरती राजनीतिक रूप से जागरूक लोगों की धरती है। यहां के लोग मन से लग जाये तो बथनाहा और सीतामढ़ी की स्थिति भी और अच्छी हो जाएगी। उन्होंने आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर कार्यकताओं से कहा कि नेता के निर्णय को हम सभी मानें। जिन्हें उम्मीदवार बनाया जायेगा उन्हें एकजुट होकर जिताने का संकल्प लें।वहीं राजद जिलाध्यक्ष सुनील कुशवाहा ने कहा कि 2025 में तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री बनाना है। बिहार में बदहाली है, रोजगार नही है। राज्य विभिन्न तरह की परेशानियों से घिरा है।

एक गर्भवती महिला ने एलियन जैसा दिखने वाला बच्चे को जन्म दिया, देखने के लिए लगी भीड़

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। पड़ोसी जिला सीतामढ़ी जिले के उप स्वास्थ्य केंद्र पुपरी में अजीबो गरीब हालात पैदा हो गई जब एक मां ने एक अजूबा बच्चे को जन्म दिया। जिसे देखने के लिए आसपास के दर्जनों लोग जमा हो गये कोई उसे एलियन तो कोई उसे देवी रूप मान रहा है। नाक, आंख, मुँह सब असमान्य होने के कारण हैरत भरी निगाह से लोग उसे देख रहे हैं। मिली जानकारी के मुताबिक पुपरी थाना क्षेत्र के बलहा वॉर्ड पांच निवासी संदीप कुमार की पत्नी खुशबू कुमारी गर्भवती थी, जिसे दर्द पीड़ा के बाद पीएचसी पुपरी आई थी जहां उसने एक अजूबा बच्चे को जन्म दिया। इधर डॉक्टर ने उसे बेहतर इलाज के लिए सीतामढ़ी रेफर कर दिया। वहां मौजूद डॉक्टर एवं नर्स ने बताया कि इस तरह का बच्चा पहली दफा देखने को मिला।

बीडीओ के नेतृत्व में प्रधानमंत्री आवास योजना के सर्वे का कार्य प्रारंभ

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

सोनबरसा । प्रखंड के सभी पंचायतों में प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के तहत छूटे हुए योग्य लाभुकों के सर्वे का कार्य गुरुवार से प्रारंभ हो गया। बीडीओ सत्येंद्र कुमार यादव के नेतृत्व में आवास सहायकों की टीम द्वारा किया जा रहा है। शुक्रवार को बीडीओ ने प्रखण्ड मुख्यालय पंचायत के विभिन्न महादलित मोहल्लों में जाकर सर्वे किया। बताया गया कि सर्वे का कार्य 31 मार्च तक चलेगा।सर्वे का कार्य पूरा होने के बाद योग्य लाभार्थियों के नाम आवास ऐप प्लस 2.0 में जोड़ा जाएगा।बीडीओ सत्येंद्र यादव ने बताया कि सर्वे के लिए प्रत्येक पंचायत में आवास सहायकों और कर्मियों की टीम को लगाया गया है। हालांकि कुछ पंचायतों में शुरूआती दौर में तकनीकी समस्याओं के कारण कार्य में थोड़ी कठिनाई हो रही है, लेकिन इन समस्याओं को शीघ्र ही दूर कर लिया जाएगा। बीडीओ की उपस्थिति में सर्वेयर ने पात्र लाभुकों को विस्तृत ब्यौरा ऑनलाइन अद्यतन किया। बताया कि सर्वे कार्य में प्रतीक्षा सूची में छूटे हुए सभी योग्य लाभुकों को शामिल किया जाएगा। सर्वे का कार्य ग्रामीण आवास सहायक करेंगे। जिस पंचायत में ग्रामीण आवास सहायक नहीं है। उस पंचायत में रोजगार सेवक या पंचायत सचिव इस कार्य को पूरा करेंगे। प्रखण्ड के सभी पंचायत में सर्वेयर की प्रतिनियुक्ति कर दी गई है। सर्वेयर को प्रशिक्षण जिला व प्रखंड स्तर से दी गई है। सर्वे का कार्य पूरी तरह से पेपरलेस किया जाएगा।

संविधान गौरव सम्मान एवं अभिनंदन समारोह

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

ताजपुर / समस्तीपुर (रोजनामा इन्डो गल्फ संवाददाता) :-- भारतीय जनता पार्टी उजियारपुर लोकसभा के मोरवा विधानसभा अंतर्गत अ.छ.उ. सेंट्रल पब्लिक स्कूल ताजपुर के प्रांगण में संविधान गौरव सम्मान समारोह एवं अभिनंदन समारोह ताजपुर दक्षिणी मंडल अध्यक्ष दिलीप कुशवाहा जी की अध्यक्षता में एवं मंच संचालन राजकुमार पंडित जी के द्वारा किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में समस्तीपुर दक्षिणी के जिला अध्यक्ष शशिधर झा जी का सम्मान समारोह के साथ-साथ ताजपुर के तीनों नवमनोनित मंडल अध्यक्ष सहित सभी कार्यकताओं का सम्मान समारोह मनाया गया। जिस कड़ी में जिला अध्यक्ष सहित, कृष्ण मोहन गुप्ता, सुरेश राय, रामसुमिरन सिंह, रामयाद सांडिल्य, कैप्टेन कमलेश सहनी, पंकज सिंह, मनोज सिंह, शैलेन्द्र सिंह, जितेन्द्र कुमार एवं अन्य वक्ताओं ने अपनी वाणी से सभी कार्यकताओं में एक उत्साह वर्धन करते हुए मार्गदर्शन दिया। इस कार्यक्रम में मंडल अध्यक्ष दिलीप सिंह, विवेक कुमार, सुशील चौबे, राजकुमार पंडित, प्रिंस सैनी, राजीव सूर्यवंशी, अमरेश कुमार साहू, सुरेश साह, मुन्ना दास, मुकेश पासवान, बिदेश्वर ठाकुर, प्रमोद सिंह, जवाहर शाह,हेमंत सिंह, मिथिलेश रजक, सत्यनारायण चौधरी, विमल कुमार गोलू, राजा कुमार, धर्मेंद्र पासवान सहित सैकड़ो कार्यकर्ता मौके पर मौजूद थे।

लोन सह एक्सचेंज ऑफर पर गाड़ी उपलब्ध है : हरेंद्र कुमार

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। शुक्रवार को समस्तीपुर शहर के मोहनपुर रोड नक्कू स्थान के पास साई इंटरप्राइजेज स्थित एम्पीयर के शोरूम में लोन सह एक्सचेंज मेला प्रारंभ हुआ। इसका शुभारम्भ जिला बीस सूत्री सदस्या सह नगर अध्यक्ष शकुंतला वर्मा ने फीता काटकर तथा ग्राहक ज्योतिष महतो को जीरो डाउन पेमेंट के तहत लोन पर मैग्नस एक्स इलेक्ट्रिक स्कूटर प्रदान कर किया। साईं इंटरप्राइजेज समस्तीपुर के प्रबंधक हरेंद्र कुमार ने मीडिया कर्मियों को बताया कि हमारे यहां लोन सह एक्सचेंज ऑफर प्रारंभ किया गया है जिसकी सुविधा ग्राहकों के लिए 30 जनवरी 2025 तक अथवा स्टॉक रहने तक रहेगा। यह सुविधा जीरो डाउन पेमेंट पर भी उपलब्ध है। उन्होंने कहा कि एक्सचेंज के तहत पुराने गाड़ी को सात हजार रुपए तक लिया जाता है तथा पुराने ग्राहकों के द्वारा एक्सचेंज सह लोन मेला में नई गाड़ी लेने अथवा किसी अन्य को दिलाने पर तीन हजार रुपए की छूट भी मिलती है। मौके पर जिला बीस सूत्री सदस्या सह नगर अध्यक्ष शकुंतला वर्मा, ज्योतिष महतो, प्रबंधक राय सोनी सिंह, विकास कुमार, संजय कुमार आदि मौजूद थे।

सीपीआईएमएवंसीटूकी टीम जायजा लेने पहुंची बॉयलर फैक्ट्री

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। जिले के पूसा प्रखंड अंतर्गत वैनी स्थित जगदम्बा मेटल (अलमुनियम) फैक्ट्री जहां दिनांक 15.01.2025 को फैक्ट्री का बॉयलर फट गया था, का दिनांक 16.01.2025 को दोपहर बाद सीपीआई (एम) एवं सीआईटीयू के प्रतिनिधिमंडल ने दौरा करने के बाद निम्नलिखित प्रेस विज्ञप्ति जारी की। उक्त फैक्ट्री लगभग 4 दशकों से चल रही है और समय-समय पर उसके मालिक बदलते रहे है। फैक्ट्री के अंदर प्रतिनिधिमंडल ने पूरी जांच करने के बाद यह पाया कि मालिकों के बदलते रहने के बावजूद फैक्ट्री का आधुनिकीकरण नहीं किया गया। पुराने जर्जर भवन में चल रही फैक्ट्री किसी भी तरह से औद्योगिक मानक के अनुरूप नहीं है। दिनांक 15.01 2025 को करीब 2:00 बजे दिन में फैक्ट्री के बॉयलर में विस्फोट हो गया और दो मजदूरों की घटनास्थल पर ही मौत हो गई, जबकि बुरी तरह से घायल दो मजदूरों की डीएमसीएच में दौरान इलाज के दौरान मौत हो गई। तीन मजदूर बुरी तरह से घायल हैं जिनमें से एक समस्तीपुर सदर अस्पताल में भर्ती हैं, जबकि एक को डीएमसीएच रेफर कर दिया गया है जबकि एक मजदूर फैक्ट्री परिसर में ही हैं जो बंगाल के रहने वाले हैं। प्रतिनिधिमंडल ने पाया कि न तो स्थानीय श्रम अधिकारी और न ही जिला श्रम अधीक्षक के द्वारा फैक्ट्री की जांच की जाती रही और न ही उनके द्वारा समुचित निर्देश दिया गया। स्थानीय वैनी थाने से मात्र 200 मीटर की दूरी पर अवस्थित उक्त फैक्ट्री, जो मुख्य सड़क पर ही अवस्थित है, स्थानीय पुलिस प्रशासन के द्वारा भी अनदेखी की जाती रही प्रतिनिधिमंडल की स्पष्ट समझ है कि श्रम विभाग एवं स्थानीय प्रशासन एवं पुलिस की सांठगांठ से फैक्ट्री चलाई जा रही थी। प्रतिनिधिमंडल ने इस बात पर चिंता व्यक्त की कि इतने बड़े दर्दनाक हादसे के बाद भी न तो फैक्ट्री के मालिक और न ही प्रबंधक ने घायल मजदूरों के इलाज के लिए कोई पहल की जिसके कारण बुरी तरह से घायल दो मजदूरों भी अपनी जान गंवानी पड़ी। प्रतिनिधिमंडल ने जानकारी दी कि फैक्ट्री में करीब 40 मजदूर काम करते थे। वे मजदूर न तो कर्मचारी राज्य बीमा (एक) के तहत निर्बंधित थे और न ही उनके भविष्य निधि की कटौती होती थी। सभी मजदूरों को सरकार द्वारा घोषित न्यूनतम मजदूरी भी नहीं दी जाती थी। फैक्ट्री का बोर्ड भी इस तरह लगा हुआ हुआ है कि आम आदमी को भी ठीक से दिखाई नहीं देता है। मशीनों की देखरेख के लिए न तो कोई ईंजिनियर बहाल है और न ही आग बुझाने के लिए अग्निशमन उपकरण अधिष्ठापित किया गया। सिर्फ मुनाफा कमाने के लिए फैक्ट्री के मालिक द्वारा फैक्ट्री चलाई जा रही थी। मजदूरों की जिंदगी से प्रबंधन को कोई मतलब नहीं था। प्रतिनिधिमंडल ने सदर अस्पताल में इलाजरत मजदूर पवन कुमार सिंह सिंह से भी मुलाकात कर उनसे सारी घटना की जानकारी प्राप्त की। प्रतिनिधिमंडल ने मांग की कि फैक्ट्री के मालिक और प्रबंधक पर हत्या का मुकदमा दर्ज किया जाय, मृतक मजदूरों के परिवार को 50-50 लाख और घायल मजदूरों को 10-10 लाख रुपये का मुआवजा दिया जाय, घटना की निष्पक्ष जांच कराई जाय तथा स्थानीय श्रम अधिकारी को मुअत्तल किया जाय। साथ ही साथ भविष्य में इस तरह की दर्दनाक घटना न हो, इसके लिए श्रम विभाग के साथ - साथ जिला एवं स्थानीय पुलिस प्रशासन को चौकस रहना चाहिए। प्रतिनिधिमंडल में सीपीआई (एम) के जिला सचिव रामाश्रय महतो, राज्य कमिटी सदस्य शाह जफर इमाम, जिला कमिटी सदस्य लाला प्रसाद, सीआईटीयू के जिला अध्यक्ष रघुनाथ राय, जिला सचिव मनोज कुमार गुप्ता एवं जिला कमिटी सदस्य मनोज कुमार मुनचुन शामिल थे।

पैक्स अध्यक्ष पद के लिए सारी से नागमणि तथा मथुरापुर से राज कुमार महतो ने किया नामांकन

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। जिले के वारिसनगर प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत 2 पंचायतों में होने वाले पैक्स चुनाव को लेकर प्रखंड कार्यालय परिसर में अंतिम दिन कुल 17 सदस्यों ने नामांकन किया। बीडीओ सह निवार्ची पदाधिकारी अजमल परवेज ने बताया की पैक्स चुनाव को लेकर अध्यक्ष पद पर सारी से नागमणी तथा मथुरापुर से राजकुमार महतो ने नामांकन किया है। वहीं सदस्य पद पर सारी से जितेन्द्र पासवान, मो नसीम, आभा देवी, देवेन्द्र दास, नवीता देवी, सरिता देवी, मो जाहिद, राजेश कुमार तथा मथुरापुर से प्रमीला देवी, उर्मिला देवी, संतोष कुमार, उपेंद्र महतो, अरूण कुमार महतो, लाल बाबू महतो तथा महेश शर्मा ने नामांकन किया है। उनका बताना था कि सभी पदो पर निर्विरोध नामांकन हुआ है। मौके पर सहायक निवार्ची पदाधिकारी सह श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी दुर्गेश कुमार, राजेश कुमार, जितेन्द्र कुमार पंकज आदि मौजूद थे। इस चुनावी प्रक्रिया समापण की 29 जनवरी तिथि निर्धारित है।

मनाया गया आरोग्य दिवस

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। शुक्रवार को बिथान प्रखंड के आंगनबाड़ी केंद्र 05 भिखनोलिया, बिथान में आरोग्य दिवस का आयोजन किया गया। पीरामल स्वास्थ्य के प्रोग्राम लीडर अंजय कुमार ने बताया कि मातृ मृत्यु दर एवम शिशु मृत्यु दर में कमी लाने में आरोग्य दिवस की बड़ी भूमिका है। पोषण संबंधी जानकारी देने, गर्भवती महिलाओ का कम से कम 4 एएनसी जांच होने चाहिए, संस्थागत प्रसव को बढ़ावा देने, परिवार नियोजन, सुगर जांच, उच्च रक्तचाप जांच, संबंधी विभिन्न साधनों, बच्चों की सुरक्षा के लिए टीकाकरण हेतु आम लोगों को स्वास्थ्य कर्मियों द्वारा जागरूक किया गया। मौके पर पीरामल स्वास्थ्य के प्रोग्राम लीडर अंजय कुमार, बीएमसी राज कुमार लाल, एएनएम रंजनी कुमारी, आंगनबाड़ी सेविका कुमारी पुष्पा रानी, आशा रेणु कुमारी और पोषक क्षेत्रों की लाभार्थी मौजूद थे।

बिहार में न्याय के साथ हो रहा विकास: डॉ0 शहजाद मंजर

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

(दरभंगा) :- मुख्यमंत्री नीतीश कुमार बिहार व मिथिलांचल के चहुमुखी विकास कर रहे हैं। बिहार में अमनचैन कायम करने के साथ साथ तरक्की और लोगों को न्याय दिलाने में जुटे हैं। सीएम के प्रगति यात्रा बिहार के विकास एवं आम जनता के समस्या की निदान के दिशा मे ऐतिहासिक साबित हो रहा है। उक्त बातें आर के. कॉलेज मधुबनी के जनसंपर्क पदाधिकारी सह बिहार जदयू शिक्षा प्रकोष्ठ के प्रदेश महासचिव डॉ० शहजाद मंजर ने कहीं। उन्होंने कहा कि सीएम नीतीश के नेतृत्व में 2025 के चुनाव में एनडीए बिहार में प्रचंड बहुमत से जीत दर्ज करेगी। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार बिहार के विकास के महानायक हैं। सड़क, बिजली, शिक्षा, पुल, पुलियां, जल जीवन हरियाली योजना सहित अन्य विकासात्मक योजनाओं तेजी से चल रही है। बिहार में नौकरी व बहाली का पिटारा खुल गया है। उद्योग लगाने का काम शुरू हो गई है। ऐतिहासिक व पौराणिक स्थलों को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है। डॉ० शहजाद मंजर ने कहा कि सीएम के प्रगति यात्रा से विपक्ष बौखला गई है। बड़े बड़े नदियों पर पुलों का निर्माण हो रहा है। हर क्षेत्र में तरक्की व शांति दिखने लगी है।

16 करोड़ से बनेगा मशरक प्रखंड सह अंचल कार्यालय का भवन

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

मशरक प्रखंड सह अंचल कार्यालय का नया भवन बनाया जाएगा। बीडीओ पंकज कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि प्रखंड सह अंचल कार्यालय का नया भवन बनानें को सरकार के तरफ से स्वीकृति मिली है जिसके लिए 16 करोड़ 62 लाख 10 हजार रुपए की लागत से प्रखंड कार्यालय परिसर में विशाल भवन बनाया जाएगा जिसमें सभी विभागों के कार्यालय उपलब्ध रहेंगे।उन्होंने कहा कि बिहार सरकार द्वारा कार्यान्वित योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाने के कार्य में प्रखंड सह अंचल कार्यालय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। साथ ही साथ प्रखंड प्रशासन राज्य सरकार की महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करती है। इस प्रकार प्रखंड सह अंचल कार्यालय का निर्माण अत्यंत ही जनोपयोगी होगी।प्रखंड सह अंचल कार्यालय के निर्माण से प्रखंड का संरचनात्मक ढांचा के सुदृढ़ीकरण होने से सुरक्षा एवं संरक्षण के साथ-साथ अन्य विकासात्मक कार्यों के कार्यान्वयन में तेजी आएगी।उन्होंने बताया कि प्रखंड कार्यालय का भवन जर्जर हो गया है वहीं अंचल कार्यालय का अपना भवन नहीं है वहीं इस नये भवन के बन जाने से ग्रामीणों सहित कर्मचारियों और अधिकारियों को भी कार्य करने में सहूलियत होगी।

केवटी पुलिस 1 पियक्कड़ को गिरफ्तार

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

(दरभंगा) :- केवटी पुलिस 1 पियक्कड़ को गिरफ्तार करने मे सफल रही। केवटी थानाध्यक्ष राहुल कुमार ने बताया कि सूचना मिली कि खिरमा-पथरा निवासी भोला यादव का पुत्र शंकर यादव शराब पीकर हो-हँगामा कर रहा है। पुलिस बल को भेज कर शंकर को हिरासत में लेकर थाना लाया गया, ब्रेथ एनलाजर के जाँच मे शराब पीने की पुष्टि हुई। नशेड़ी को विधिवत गिरफ्तार कर गुरुवार को न्यायिक हिरासत में दरभंगा भेज दिया गया।

डीएम ने सड़क सुरक्षा जागरूकता रथ को रवाना किया

मो.सदरे आलम नौमानी

सीतामढ़ी:जिलाधिकारी रिची पाण्डेय द्वारा समाहरणालय परिसर से सड़क सुरक्षा जागरूकता रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इसके पूर्व जिलाधिकारी ने

उपस्थित लोगों को सड़क पर चलते समय सुरक्षा के लिए यातायात नियमों के पालन करने एवं लोगों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक करने की भी शपथ दिलाई। इस अवसर पर उन्होंने बताया कि बीते कुछ वर्षों में सड़क दुर्घटना में काफी वृद्धि हुई है ये एक अनावश्यक जान माल की क्षति होती है। इसमें बहुत हद तक कमी लाने के लिए सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन कर कमी लाई जा सकती है। लोगो को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से जागरूकता वाहन को रवाना किया गया है। जो शहरी क्षेत्र समेत सभी अनुमंडल एवं प्रखंडों में जाकर लोगों को जागरूक करेगा। इस अवसर पर अपर समाहर्ता संदीप कुमार,जिला कल्याण पदाधिकारी राजकुमार सुभाष,परिवहन पदाधिकारी स्वप्निल, मोटर यान निरीक्षक राकेश रंजन,राजेश कुमार,अवर प्रवर्तन पदाधिकारी मनोज कुमार, बेबी कुमारी, परिवहन कर्मी प्रेम कुमार, अमरजीत कुमार,सुनील कुमार, प्रियरंजन कुमार समेत दर्जनों कर्मी उपस्थित रहे। इस अवसर पर जिला परिवहन पदाधिकारी श्री स्वप्निल ने बताया कि यह अभियान 31 जनवरी तक चलेगा। बिहार सड़क सुरक्षा परिषद, पटना के निदेर्शानुसार पूरे जनवरी माह को सड़क सुरक्षा माह के रूप में मनाया जा रहा है। अभियान के दौरान लोगों को हेलमेट पहनने, सीट बेल्ट लगाने और वाहन के जरूरी कागजात साथ रखने एवं यातायात के नियमों के पालन करने के लिए प्रेरित किया जाएगा। इस माह चलाए जाने वाले जागरूकता अभियान में जिला प्रशासन, पुलिस, परिवहन, स्वास्थ्य और शिक्षा विभागों के साथ-साथ स्कूल -कॉलेज के छात्र-छात्राएं, परिवहन संघ और वाहन विक्रेता भी सक्रिय रूप से भाग लेंगे। इस अवधि में जागरूकता रैली, पेंटिंग प्रतियोगिता,स्लोगन, क्विज प्रतियोगिता,वॉल पेंटिंग,ट्रैफिक गेम,फिटनेस कैंप, नेत्र एवं स्वास्थ्य जांच शिविर,रक्तदान शिविर,प्री हॉस्पिटालिटी प्रशिक्षण, नुक्कड़ नाटक, गुड समेमेरिटन के बारे में जागरूकता,विशेष जांच अभियान भी चलाया जायेगा।अभियान का मुख्य उद्देश्य सड़क दुर्घटनाओं को कम करना और लोगों में सुरक्षित यात्रा के प्रति जागरूकता फैलाना है। सड़क सुरक्षा, जीवन रक्षा। इस संदेश के साथ जिला प्रशासन ने सभी नागरिकों से अपील की है कि वे यातायात नियमों का पालन करें और दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करें।

डीएम ने जनता दरबार में लोगों की फरयादें सुनी

मो.सदरे आलम नौमानी

सीतामढ़ी:जिलाधिकारी रिची पाण्डेय ने समाहरणालय स्थित अपने कार्यालय कक्ष में आयोजित जनता दरबार कार्यक्रम में परिवादियों से मिलकर उनके समस्याओं को सुना। जिलाधिकारी द्वारा बारी-बारी से सभी परिवादियों से मुलाकात की गई एवं उनके समस्याओं को सुना गया।अधिकांश मामले अतिक्रमण, भूमि विवाद, आपसी विवाद,सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य,सड़क,विद्युत,पी एच ई डी एवं अन्य विभागों से संबंधित थे। जनता दरबार कार्यक्रम में उपस्थित अधिकारियों को निर्देश दिया कि प्राप्त जन शिकायतों के निष्पादन की दिशा में पूरी प्रतिबद्धता के साथ कार्य करना सुनिश्चित करें इसमें किसी भी तरह की कोताही स्वीकार्य नहीं होगी। जनता दरबार में आज कुल 86 आवेदन प्राप्त हुए।आज जिला पदाधिकारी रिची पाण्डेय के द्वारा लोक शिकायत निवारण अधिकार अधिनियम के तहत द्वितीय अपीलीय प्राधिकार की सुनवाई की गई।कुल 15 मामले की सुनवाई की गई जिसके विरुद्ध 04 मामले पर आदेश किए गए।

18 जनवरी को पटना में राहुल गांधी की यात्रा में शामिल होने पर बनी रणनीति

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

मशरक के महाराणा प्रताप चौंक के पास प्रखंड कांग्रेस कार्यालय परिसर में प्रखंड कांग्रेस अध्यक्ष डॉ रविन्द्र सिंह की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गयी। जिसमें मुख्य रूप से प्रखंड अध्यक्ष रविंद्र सिंह, केदारनाथ सिंह, जिला उपाध्यक्ष शैलेश कुमार सिंह, उपेंद्र कुमार राम सहित दर्जनों कांग्रेसी कार्यकर्ता उपस्थित रहे। मौके देवरिया निवासी कांग्रेस के वरिष्ठ नेता सेराज अहमद को बिहार प्रदेश ओबीसी के प्रदेश उपाध्यक्ष पद पर मनोनयन होने पर कांग्रेस कार्यकताओं के द्वारा सेराज अहमद का फूल माला से स्वागत किया गया और एक दूसरे को मिठाई खिलाकर खुशी का इजहार किया गया। साथ ही साथ 18 जनवरी को पटना में आयोजित जननायक राहुल गांधी की रैली में शामिल होने के लिए निर्णय लिया गया। जिला उपाध्यक्ष शैलेश सिंह से कहा कि सेराज अहमद की नई जिम्मेदारी से कांग्रेस पार्टी मजबूत होगी और रैली में मशरक से दर्जनों वाहन से कांग्रेसी कार्यकर्ता पटना के लिए रवाना होंगे।

पूर्व सांसद अर्जुन राय ने कहा अगली सरकार राजद की होगी

मो.सदरे आलम नौमानी

सीतामढ़ी : परिहार से पांच हजार से मुझे बढ़त मिली थी। हम सभी को संकल्प लेना है कि अंतर बढ़ा यह सीट जीतना है। उक्त बातें राजद नेता पूर्णेन्दु कुशवाहा द्वारा आयोजित दही चुड़ा भोज व कार्यकर्ता मिलन समारोह में पूर्व सांसद डॉ अर्जुन राय ने कही।उन्होंने कहा कि नीतीश के 20 वर्षो का शासनकाल पूर्ण हो चुका है। सीतामढ़ी में दहशत कायम है। ठीकेदारी पर अपराधी का कब्जा है, अपराधियों का जमीन पर कब्जा हो रहा है। जीते हुए सांसद गाली देना शुरू कर दिए हैं। सांसद का व्यवहार देश का आईना होता है। हमें जिसने वोट नही दिया आज भी उनसे अच्छे रिश्ते हैं। सांसद द्वारा जातियों पर टिप्पणी की गई, नीतीश कुमार चुप बैठे रहे, मतलब साफ है इन्हें नीतीश का समर्थन है। जदयू भाजपा की सरकार बेवकूफ बना कर शासन कर रही है। नीतीश कभी विद्यार्थी की पीटाई करवाते है, तो कभी इंजीनियर का पैर छुने लगते हैं। तेजस्वी के बातों पर भरोसा करें। माई बहिन योजना, पेंशन में बढ़ोतरी की घोषणा की गई है, वह सरकार बनते ही प्रारंभ कर दिया जाएगा। झारखंड में हम सहयोगी है, वहां बिजली 200 यूनिट तक फ्री दी जाने लगी और पेंशन भी 1500 प्रतिमाह दिया जा रहा है। मोदी की तरह झूठे वादें नही करते। 2020 के विधानसभा में दस लाख नौकरी का तेजस्वी यादव ने वादा किया था। उन्होंने आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर कार्यकताओं से कहा कि नेता के निर्णय को हम सभी मानें। जिन्हें उम्मीदवार बनाया जायेगा उन्हें एकजुट होकर जिताने का संकल्प लें।वहीं राजद जिलाध्यक्ष सुनील कुशवाहा ने कहा कि 2025 में तेजस्वी यादव को मुख्यमंत्री बनाना है। बिहार में बदहाली है, रोजगार नही है। राज्य विभिन्न तरह की परेशानियों से घिरा है।बिहार को प्रगति के पटरी पर लाना जरूरी है। तेजस्वी द्वारा किये गये माई बहिन योजना एवं पेंशन योजना को जन जन तक पहुंचाए। उन्होंने कहा कि नेता का फैसला अंतिम और सर्वमान्य होगा। पार्टी का जो भी उम्मीदवार होगा, उनको जिताने का संकल्प लेना होगा। वहीं सभा को संबोधित करते हुए व्यवसायिक प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष राम कैलाश साह कहा कि दही चुड़ा के भोज पर कार्यकर्ता एकजुट हुए है। उन्होंने कहा कि तेजस्वी के आह्वान को घर घर पहुंचाना है। हमें परिहार की सरकार बनाने का संकल्प लेना होगा तभी बिहार की सरकार बनेगी। टिकट जिसे मिले हम लोग एकजुट होकर जिताने कार्य करे।पूर्णेन्दु कुशवाहा ने पूर्व सांसद अर्जुन राय व राजद जिलाध्यक्ष सुनील कुशवाहा को फूल माला पहनाया एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया।

प्रमुख प्रतिनिधि प्रेमदास, जिला परिषद के पूर्व उपाध्यक्ष ईश्वर नारायण साह, पूर्व जिला पार्षद सुरेंद्र यादव, फकीरा मंडल, जिला पार्षद संजय कुमार, गरभू पासवान, पूर्व जिला पार्षद विजय कुमार, सुरेंद्र पासवान, वैधनाथ बैठा, विनोद पासवान, पूर्व मुखिया उमेश महतो, शिवचंद्र मंडल, पवन मंडल, मनोज यादव, सीताराम यादव समेत परिहार व सोनबरसा प्रखंड के दर्जनों कार्यकर्ता ने दही चुड़ा भोज का आनंद लिया।

तेजस्वी के सरकार बनते ही गैस सिलेंडर 5 सौ में मिलेगें : मो इकबाल

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

नावकोठी (बेगूसराय) ' ।बखरी विधानसभा के अकहा गांव में राजद जिला सचिव पशुपति पासवान के द्वारा मकर संक्रांति के अवसर पर कार्यकताओं को दही चुडा. भोज का आयोजन किया गया।भोज से पूर्व बैठक में जिला अध्यक्ष मोहित यादव ने कहा कि हमारे नेता तेजस्वी यादव के किये गये वादों को जनता को बताना है और सदस्यता अभियान को तीव्र गति से पूर्ण करना है।वहीं राजद के प्रखंड प्रवक्ता मो इकबाल ने कहा कि अगर 2025 में राजद का सरकार बना तो महिलाओं को पेंशन 1500 रुपये,गैस सिलेंडर 500 रुपये और वृद्धा पेंशन को 400 से बढ़ाकर 1500 रुपये किया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता बखरी प्रखण्ड के अध्यक्ष सुरेश यादव व संचालन विधानसभा प्रभारी हरेराम महतों ने किया। बैठक में नावकोठी प्रखंड अध्यक्ष गंगाराम महतो, मो कुद्दस मियां,मो नाजिम,पप्पू सिंह,श्रवण यादव,राजेश महतो,प्राण पासवान,सुरेंद्र पासवान, मो मुमताज,मो सकील समेत राजद के सैकड़ों समर्पित कार्यकर्ता मौजूद थे।

मशरक में ऑटो दुर्घटना समेत अन्य घटनाओं में आधा दर्जन घायल

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

मशरक के अलग-अलग जगहों पर सड़क दुर्घटना समेत मारपीट की घटनाओं में आधा दर्जन लोग घायल हो गए। घायलों को इलाज के लिए सीएचसी मशरक में भर्ती कराया गया। लखनपुर गोलम्बर पर अनियंत्रित ट्रक की चपेट में आने से ऑटो में सवार वासुदेव साह का 38 वर्षीय पुत्र हरिओम साह और हरि ओम साह का 35 वर्षीय पत्नी सीता देवी घायल हो गए। घायलों ने बताया कि ऑटो डुमरसन से पैसेंजर लेकर दिघवा दुबौली जा रहा था कि लखनपुर गोलम्बर पर अनियंत्रित ट्रक ने ओवरटेक करने के दौरान टक्कर मार दी। उपचार के बाद एक यात्री को सदर अस्पताल छपरा रेफर कर दिया गया। मौके पर पहुंची थाना पुलिस ने ट्रक को कब्जे में लेकर जांच पड़ताल शुरू कर दी। वहीं चालीस आरडी बाजार पर अनियंत्रित बाइक की चपेट में आने से समशुद्दीन अंसारी की 60 वर्षीय पत्नी रसुलन बीबी घायल हो गयी। वह अपने नाती का बाल कटवाने जा रही थी कि बाइक सवार ने टक्कर मार दी। तीसरे घटना में डुमरसन में मारपीट की घटना में आपसी विवाद में मारपीट में एक घायल को इलाज के पुलिस 112 की टीम ने इलाज के लिए सीएचसी मशरक में भर्ती कराया।

न्यायिक कर्मचारी का दूसरे दिन भी रहा कलम बंद हड़ताल

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। बिहार राज्य न्यायिक कर्मचारी संघ के आह्वान पर पूरे बिहार में चल रहे न्यायिक कर्मचारी के हड़ताल के कारण समस्तीपुर न्यायालय का सभी कामकाज ठप है। समस्तीपुर न्यायालय परिसर के मुख्य द्वार पर समस्तीपुर जिले के सभी कोर्ट के न्यायिक कर्मचारी धरने पर बैठे हुए हैं। आज आंदोलन के दूसरे दिन एनजीओ संघ बिहार की ओर से आंदोलनकारी को लिखित समर्थन दिया गया। एनजीओ की ओर से बिहार एनजीओ संघ के महासचिव अधिवक्ता संजय कुमार बबलू ने अपने वक्तव्य में कहा कि न्यायिक कर्मचारियों की चार सूत्री मांग बिल्कुल जायज है सरकार को इनकी मांगों को अविलंब मानते हुए हड़ताल को समाप्त करने की दिशा में कदम उठाना चाहिए। प्रतिनिधि मंडल में नई पहचान के सचिव आलोक कुमार सिंह, संजना संकल्प फाउंडेशन के श्रुति सेतु शांडिल्य, सहायता संकल्प फाउंडेशन के लालबाबू पांडे, प्रगति आदर्श सेवा केंद्र की आरती कुमारी आदि उपस्थित थे न्यायिक कर्मचारी संघ समस्तीपुर के पदाधिकारियो ने कहा एनजीओ संघ के पदाधिकारी का आभार प्रकट करते हुए कहा आपके समर्थन से हमारे आंदोलन का मनोबल बढ़ा है हम अब और मजबूती से लड़ाई लड़ सकेंगे।

सुधा काउंटर पिछले 1 साल से सिर्फ दिखावे का काउंटर बनकर रह गया है

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

(दरभंगा) :- बिहार सरकार के सात निश्चय योजना के तहत प्रखंड मुख्यालय परिसर में निर्मित सुधा काउंटर पिछले 1 साल से सिर्फ दिखावे का काउंटर बनकर रह गया है। वर्ष 2024 में हीं निर्मित इस सुधा काउंटर को चलाने के लिए ना तो किसी बेरोजगार को रोजगार के लिए दिया गया और न सुधा कंपनी अपनी उत्पादों के संग अपने कर्मचारी को भेज कर इसे चालू किया। प्रखंड भर से प्रखंड मुख्यालय आने-जाने वाले और प्रखंड मुख्यालय के आसपास के लोगों को उम्मीद थी कि नव वर्ष पर पहली जनवरी से यह खुलेगी और सुधा के उत्पादन दूध-दही,रसगुल्ला, गुलाबजामुन,कलाकंद,बर्फी व अन्य मिष्ठान मिलने लगेंगे।लेकिन आश्चर्य है कि इस काउंटर को मिथिलांचल के प्रसिद्ध पर्व मकर संक्रांति पर भी चालू नहीं किया गया। लोग मायूस हुए यहां कोई यह बताने वाला भी नहीं है कि इस सुधा काउंटर के निर्माण का क्या उद्देश्य है और अब इसका क्या होगा?

जमीनी विवाद में मारपीट एवं रंगदारी मांगने का मामला दर्ज

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

नावकोठी (बेगूसराय) ' थाना क्षेत्र अंतर्गत नाव कोठी से सुरेंद्र कुमार सिंह पिता चुन चुन प्रसाद सिंह ने अनिल सिंह पिता शिव शंकर प्रसाद सिंह एवं नवीन प्रसाद सिंह उर्फ सुनील कुमार सिंह पिता शिव शंकर प्रसाद सिंह ग्राम नावकोठी निवासी जिनका वर्तमान पता सर्वोदय नगर बेगूसराय एवं अज्ञात व्यक्तियों पर फसल बर्बाद करने,मारपीट करने,सोने का चेन छीन लेने एवं रंगदारी मांगने का आरोप लगाते हुए नावकोठी थाना में मामला दर्ज करवाया है। दर्ज मामला में आवेदक ने बताया है कि रजाकपुर स्थित हमारे खेत में गेहूँ लगी फसल को उक्त व्यक्तियों ने जोत कर फसल बर्बाद कर दिया।मना करने पर मारपीट कर सोने का चेन छीन लिया और एक लाख रंगदारी मांगने का मामला दर्ज करवाया है।थानाध्यक्ष दिनेश कुमार ने बताया कि मामला दर्ज कर लिया गया है। तहकीकात के बाद विधि सम्मत कार्रवाई की जाएगी

दर्ज मामला में आवेदक ने बताया है कि रजाकपुर स्थित हमारे खेत में गेहूँ लगी फसल को उक्त व्यक्तियों ने जोत कर फसल बर्बाद कर दिया।मना करने पर मारपीट कर सोने का चेन छीन लिया और एक लाख रंगदारी मांगने का मामला दर्ज करवाया है।

उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो- न जाने किस गली में ज़िंदगी की शाम हो जाए

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

आपके लिए एक सबक की तरह है, आप इस से मोहब्बत में जीने के आदाब भी सीखेंगे और हिज्र-ओ-विसाल को गुजारने के तरीके भी. ये पहला ऐसा खूबसूरत काव्य-संग्रह है जिसमें मोहब्बत के हर रंग, हर भाव और हर एहसास को अभिव्यक्त करने वाले शेरों को जमा किया गया है.आप इन्हें पढ़िए और मोहब्बत करने वालों के बीच साझा कीजिए.

(01) उजाले अपनी यादों के हमारे साथ रहने दो
न जाने किस गली में ज़िंदगी की शाम हो जाए
(02) और भी दुख हैं जमाने में मोहब्बत के सिवा
राहतें और भी हैं वस्ल की राहत के सिवा
(03) रंजिश ही सही दिल ही दुखाने के लिए आ
आ फिर से मुझे छोड़ के जाने के लिए आ,
(04) उस की याद आई है साँसो जरा आहिस्ता चलो
धड़कनों से भी इबादत में खलल पड़ता है
(05) मोहब्बत में नहीं है फर्क.जीने और मरने का
उसी को देख कर जीते हैं जिस काफि र पे दम निकले
(06) न जी भर के देखा न कुछ बात की
बड़ी आरजू थी मुलाकात की
(07) होश वालों को खबर क्या बे-खुदी क्या चीज है
इश्क कीजे फिर समझिए ज़िंदगी क्या चीज है
(08) और क्या देखने को बाकी है
आप से दिल लगा के देख लिया
(09) अजीज इतना ही रक्खो कि जी सँभल जाए
अब इस कदर भी न चाहो कि दम निकल जाए
(10) कुछ तो मजबूरियाँ रही होंगी
यूँ कोई बेवफा नहीं होता,
(11) चुपके चुपके रात दिन आँसू बहाना याद है
हम को अब तक आशिकी का वो जमाना याद है
(12) इश्क नाजुक-मिजाज है बेहद
अक़्ल का बोझ उठा नहीं सका,
(13) ज़िंदगी किस तरह बसर होगी
दिल नहीं लग रहा मोहब्बत में
(14) वो तो खुश-बू है हवाओं में बिखर जाएगा
मसअला फूल का है फूल किधर जाएगा
(15) किस किस को बताएँगे जुदाई का सबब हम
तू मुझ से खफा है तो जमाने के लिए आ
(16) सारी दुनिया के गम हमारे हैं
और सितम ये कि हम तुम्हारे हैं
(17) दोनों जहान तेरी मोहब्बत में हार के
वो जा रहा है कोई शब-ए-गम गुजार के,
(18) हमें भी नींद आ जाएगी हम भी सो ही जाएँगे
अभी कुछ बे-करारी है सितारो तुम तो सो जाओ,
(19) अब जुदाई के सफर को मेरे आसान करो
तुम मुझे ख़्वाब में आ कर न परेशान करो
(20) हम तो समझे थे कि हम भूल गए हैं उन को
क्या हुआ आज ये किस बात पे रोना आया,
(21) मैं तो गजल सुना के अकेला खड़ा रहा
सब अपने अपने चाहने वालों में खो गए,
(22) मिलना था इत्तिफाक बिछड़ना नसीब था
वो उतनी दूर हो गया जितना करीब था,
(23) तुम से छुट कर भी तुम्हें भूलना आसान न था
तुम को ही याद किया तुम को भुलाने के लिए,

प्रताड़ना एवं दहेज का मामला दर्ज

नावकोठी (बेगूसराय) ' थाना क्षेत्र अंतर्गत हसनपुर बागर निवासी शफीना खातुन पति मो रकीव ने अपने पति मो रकीव पर दहेज मांगने, मानसिक व शारीरिक यातनाएं देने,गर्भवती अवस्था में खाना नहीं देने,पति के द्वारा पेट पर लात मारकर गर्भ में ही बच्चा को मारने,तरह - तरह की यातनाएं देने एवं दो लाख रुपए और रंगीन टी.वी. दहेज के रूप में मांगने का आरोप लगाते हुए नावकोठी थाना में मामला दर्ज करवाया है।वहीं शादी के समय 10 लाख रुपए का सामग्री लेने का आरोप लगाया। आवेदिका ने सास अनवरी खातुन एवं ननद हबीबा खातुन पर प्रताड़ना का आरोप भी लगाया।थानाध्यक्ष दिनेश कुमार ने बताया कि मामला अंकित कर लिया गया है।तहकीकात के बाद विधि सम्मत कार्रवाई की जाएगी।

बिहार, मेदांता के सहयोग से लिटेरा पब्लिक स्कूल ने आम लोगों के लिये फ़्री स्वास्थ्य शिविर

मेदांता के सहयोग से लिटेरा पब्लिक स्कूल ने आम लोगों के लिये फ़्री स्वास्थ्य शिविर

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मो. अबु बकर सिद्दीकी

लिटेरा पब्लिक स्कूल मौजीपुर ब्रांच ने आज जय प्रभा मेदांता सुपर स्पेसियलिटी अस्पताल पटना और मेदांता फाउंडेशन पुअर एंड नीडी पेशेंट वेलफेयर ट्रस्ट के सहयोग से स्कूल परिसर में मुफ़्त स्वास्थ्य जाँच शिविर का आयोजन किया ।

इस शिविर के उद्घाटन अवसर अस्पताल के चेयरमैन डा रवि, मुख्य अतिथि के रूप में डा रंजन बिहार की ख्याति लब्ध महिला साहित्यकार और समाजसेवी ममता मेहरोत्रा और लिटेरा पब्लिक ग्रुप आफ स्कूल के डाइरेक्टर आशुतोष मेहरोत्रा उपस्थित थे ।

मौके पर डा रवि ने कहा कि मेंदाँता अस्पताल इस तरह का जनसहयोगी कार्यक्रम के आयोजन में अपनी सहभागिता देकर गौरवान्वित महसूस करता है। हम पहले भी ऐसा करते रहे हैं और आगे भी जनसहयोग के कार्यक्रम में अपनी भागीदारी निभाते रहेंगे । उन्होंने कहा कि मेदांता किडनी ,हर्ट, कैंसर और न्यूरो से सम्बंधित बीमारियों के लिए अधिक से अधिक सपोर्ट तो करता ही है साथ ही कम कीमतों या सम्भव हुआ तो फ़्री सुविधा भी उपलब्ध कराता है। मुख्य अतिथि के तौर पर डा रंजन ने कहा कि लिटेरा पब्लिक स्कूल राज्य का एकलौता शिक्षण संस्थान है, जो जनस्वास्थ्य को लेकर जागरूकता फैलाता रहता है और ऐसे जनसहयोगी कार्यक्रम का आयोजन करता रहता है। इसके लिए हमसब की ओर साधुवाद। उन्होंने कहा कि आज जितने भी रजिस्ट्रेशन इस शिविर में हुए हैं , उन सबका इलाज भविष्य में पटना मेदाँता में सरकार द्वारा दी जाने वाली अनुदान राशि और सुविधाओं के साथ होगी । उन्होंने कहा कि आजका रजिस्ट्रेशन ऐप के माध्यम से हुआ है जो मेदांता के पटना ब्रांच से जुड़े हैं ।

मौके पर उपस्थित ममता मेहरोत्रा ने कहा कि जरूरतमंदों के लिए जन सहयोग की भावना हम सब में होनी चाहिए । ऐसे सार्वजनिक कार्यक्रम हमारी प्राथमिकता में होनी चाहिए।

ग्रुप आफ स्कूल के डाइरेक्टर आशुतोष मेहरोत्रा ने कहा कि हमारे स्कूल में एकेडमीक एक्टिविटी के साथ साथ एक्सट्रा एक्टिविटी भी समय समय पर होते रहाता है । अध्यापन हमारा मुख्य काम है लेकिन ऐसे आयोजनों का प्रभाव भी बच्चों के मस्तिष्क पर सकारात्मक असर डालता है। बच्चों में समाजिकता का भी सही ढंग से विकाश होता है । इस शिविर में बच्चों के अभिभावक सहित आस पास के लगभग 200 लोगों ने अपने स्वास्थ्य की जाँच कराई । इस शिविर में वजन, बीपी , रैंडम शुगर, एसपीओ 2 और ईसीजी की मुफ़्त जाँच की गई। इसके अलावे अन्य चिकित्सकिय परामर्श भी फ़्री दिए गए ।

हड़ताल के कारण न्यायालय का कामकाज ठप

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

बखरी (बेगूसराय) ' बिहार राज्य व्यवहार न्यायालय कर्मचारी संघ के आह्वान पर जारी कर्मचारियों का अनिश्चितकालीन कलमबंद हड़ताल का दुसरे दिन कामकाज ठप रहा। इस दौरान शुक्रवार को कर्मचारियों ने अपने चार सूत्री मांग सभी संवर्गों की वेतन विसंगति को जल्द से जल्द दूर करने, सभी तृतीय चतुर्थ वर्ग के कर्मचारियों की शीघ्र पदोन्नति हो,शत प्रतिशत अनुकंपा पर बहाली हो, विशेष न्यायिक कैडर लागू करने आदि के समर्थन में जमकर नारेबाजी किये। मौके पर वीरेश कुमार सिन्हा, राजाराम सिंह,सपन कुमार, प्रियांशु कुमार, दिलीप राम, संजीव कुमार मुन्ना, गौतम भारद्वाज,कुनाल किशोर,अमरजीत कुमार आदि ने बताया कि जब तक हमारी मांग पूरी नहीं होती है तब तक न्यायालय में कलमबंद हड़ताल रहेगा। वही कर्मचारियों के हड़ताल के कारण बगैर तारीख किए ही लोगों को बैरंग वापस लौटना पड़ा। जबकि धरना स्थल पर अधिवक्ता संघ के महासचिव राजकुमार, पूर्व अध्यक्ष राम ज्वालेश्वर प्रसाद सिंह, पूर्व सचिव गौरव कुमार, शिशिर कुमार, कृष्णा पासवान, संजीव कुमार आदि पहुंच कर अपने विचार व्यक्त किए।

चलाया गया राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। माय भारत युवा कार्यक्रम खेल मंत्रालय भारत सरकार एवं यातायात थाना समस्तीपुर के संयुक्त तत्वाधान में राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा जागरुकता अभियान कार्यक्रम नगर थाना के समीप चलाया गया। जिसमें अमित कुमार, जिला युवा अधिकारी, नेहरू युवा केंद्र समस्तीपुर, सुनील कांत, यातायात पुलिस निरीक्षक, यातायात थाना समस्तीपुर, नीरजेश कुमार डीपीओ नमामि गंगे समस्तीपुर, एनजीओ संघ बिहार के सचिव अधिवक्ता संजय कुमार बबलू, युवा मंडल प्रगति आदर्श सेवा केंद्र के श्रुति सेतू शांडिल्य, आरती कुमारी, रोहित कुमार, रहवर फाउंडेशन के कादिर इमाम, मो अली, सिंटू कुमार, संजीत कुमार इत्यादि द्वारा संयुक्त रूप से सड़क पर चल रहे दो पहिया एवं चार पहिया वाहन को रोकर हेलमेट और सीट बेल्ट नहीं लगाने वाले यात्री को गुलाब का फूल देकर सड़क सुरक्षा नियमों के पालन करने, दो पहिया वाहन चलाते समय हेलमेट पहनने, चार पहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट लगाने, नशे की हालत में वाहन नहीं चलाने, तेज रफ्तार से वाहन नहीं चलाने, मोटर साइकिल पर दो से अधिक लोग नहीं बैठने, वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग न करने का आग्रह किया, साथ ही यात्रियों को सड़क सुरक्षा नियमों, यातायात नियमों का शपथ दिलाया। जिला युवा अधिकारी द्वारा उक्त अभियान 17 जनवरी से 23 जनवरी तक चलाने की बात बताई गईं। माय भारत वालंटियर द्वारा जन जन का ये नारा है,, सड़क सुरक्षा नियम को अपनाना है इत्यादि नारा लगाया गया।

चलाया गया राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा जागरूकता अभियान

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। माय भारत युवा कार्यक्रम खेल मंत्रालय भारत सरकार एवं यातायात थाना समस्तीपुर के संयुक्त तत्वाधान में राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा जागरुकता अभियान कार्यक्रम नगर थाना के समीप चलाया गया। जिसमें अमित कुमार, जिला युवा अधिकारी, नेहरू युवा केंद्र समस्तीपुर, सुनील कांत, यातायात पुलिस निरीक्षक, यातायात थाना समस्तीपुर, नीरजेश कुमार डीपीओ नमामि गंगे समस्तीपुर, एनजीओ संघ बिहार के सचिव अधिवक्ता संजय कुमार बबलू, युवा मंडल प्रगति आदर्श सेवा केंद्र के श्रुति सेतू शांडिल्य, आरती कुमारी, रोहित कुमार, रहवर फाउंडेशन के कादिर इमाम, मो अली, सिंटू कुमार, संजीत कुमार इत्यादि द्वारा संयुक्त रूप से सड़क पर चल रहे दो पहिया एवं चार पहिया वाहन को रोकर हेलमेट और सीट बेल्ट नहीं लगाने वाले यात्री को गुलाब का फूल देकर सड़क सुरक्षा नियमों के पालन करने, दो पहिया वाहन चलाते समय हेलमेट पहनने, चार पहिया वाहन चलाते समय सीट बेल्ट लगाने, नशे की हालत में वाहन नहीं चलाने, तेज रफ्तार से वाहन नहीं चलाने, मोटर साइकिल पर दो से अधिक लोग नहीं बैठने, वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग न करने का आग्रह किया, साथ ही यात्रियों को सड़क सुरक्षा नियमों, यातायात नियमों का शपथ दिलाया। जिला युवा अधिकारी द्वारा उक्त अभियान 17 जनवरी से 23 जनवरी तक चलाने की बात बताई गईं। माय भारत वालंटियर द्वारा जन जन का ये नारा है,, सड़क सुरक्षा नियम को अपनाना है इत्यादि नारा लगाया गया।

मधुबनी जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा की अध्यक्षता में जिलास्तरीय परामर्श दात्री समिति (डीएलसीसी) एवं जिला स्तरीय समीक्षा समिति (डीएलआरसी) की बैठक हुई आयोजित

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ

मधुबनी जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा की अध्यक्षता में जिलास्तरीय परामर्श दात्री समिति (डीएलसीसी) एवं जिला स्तरीय समीक्षा समिति (डीएलआरसी) की बैठक हुई आयोजित-

ड्ड जिलाधिकारी ने कहा सभी बैंक ऋण मुहैया कराने के लक्ष्य को अभियान चलाकर पूरा करें.

असंतोषजनक प्रगति करने वाले बैंक के प्रति कड़े कदम उठाए जाएंगे

बैंक केसीसी के आवेदनों को अनावश्यक कारणों से ना करें खारिजः जिलाधिकारी.ड्ड बैंक सब्सिडी भुगतान के मामलों को शीघ्रता से करें निष्पादितः जिलाधिकारी.

जिलाधिकारी अरविन्द कुमार वर्मा की अध्यक्षता में समाहरणालय स्थित सभाकक्ष में जिला स्तरीय परामर्श दात्री समिति (डीएलसीसी) एवं जिला स्तरीय समीक्षा समिति (डीएलआरसी) की बैठक आयोजित हुई. जिलाधिकारी द्वारा जिले में बैंकिंग से संबंधित विभिन्न गतिविधियों/ योजनाओं की समीक्षा की गई। जिनमें केसीसी, जीविका, पीएमएसबीएनिधि, जेएलजी, हाउसिंग, आधार से सीडिंग, एसआरटीओ, आरसीईटीआई के साथ-साथ शिक्षा ऋण, पीएमईजीपी, मुद्रा लोन और पीएमजेडीवाई में प्रगति की समीक्षा की गई.उपस्थित अधिकारियों एवं बैंकरों को संबोधित करते हुए जिलाधिकारी ने कहा कि पीएमईजीपी और पीएमजेडीवाई में वे और भी प्रगति की अपेक्षा रखते हैं उन्होंने कहा कि प्रधान मंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम की अद्यतन स्थिति की लगातार समीक्षा की जाएगी। उन्होंने उपस्थित विभिन्न बैंकों के प्रतिनिधियों से कहा कि सभी बैंकों को ऋण मुहैया कराने के लक्ष्य को अभियान चलाकर पूरा करना होगा. उन्होंने कहा कि असंतोषजनक प्रगति करने वाले बैंक के प्रति कड़े कदम उठाए जाएंगे. केसीसी की समीक्षा के क्रम में जिलाधिकारी ने कहा कि कई बार देखा गया है कि केसीसी के आवेदनों को बैंक छोटी वजहों से खारिज कर देते हैं. कोई बड़ी वजह ना होने पर आवेदनों को संज्ञान में लेते हुए उसका निष्पादन करना सुनिश्चित करें.जिलाधिकारी ने कहा कि लाभुकों को सब्सिडी का भुगतान ससमय करें और भुगतान की प्रक्रिया में तेजी लाएं. उन्होंने डेयरी उद्योग और मत्स्य पालन के साथ साथ मखाना उत्पादन में जिले में अपार संभावनाओं की चर्चा करते हुए सभी बैंकों से ऋण उपलब्ध कराने में उदारता पूर्ण रवैया अपनाने की अपेक्षा की.उप विकास आयुक्त दीपेश कुमार, अग्रणी जिला प्रबंधक गजेंद्र मोहन झा, डीडीएम नाबार्ड प्रशांत, आरबीआई एलडीओ रोहित चौधरी, आरसेटी डायरेक्टर पीयूष पुष्पम, जिला कृषि पदाधिकारी, जिला पशुपालन पदाधिकारी समेत जिले के सभी प्रमुख बैंकों के प्रतिनिधि शामिल थे

आर बी कालेज शिक्षक संघ की नयी कार्यकारिणी गठित

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
एम नईमुद्दीन आजाद

समस्तीपुर। दलसिंहसराय के स्थानीय आर बी कॉलेज शिक्षक संघ की नयी कार्यकारिणी का गठन कॉलेज के प्रभारी प्रधानाचार्य सह निर्वाचन पदाधिकारी प्रोफेसर संजय झा की अध्यक्षता में किया गया। नयी कार्यकारिणी के गठन हेतु उर्दू विभागाध्यक्ष डॉ एस एम रहमानी ने विविध पदों हेतु प्रस्ताव पेश किया। इस प्रस्ताव पर आंशिक संशोधन के साथ सर्व सहमति बनी। नयी कार्यकारिणी में अध्यक्ष पद पर पुनः मनोविज्ञान विभागाध्यक्ष डॉ विमल कुमार का चयन हुआ। उपाध्यक्ष पद पर डॉ सोहित राम एवं डॉ धीरज कुमार पाण्डेय, सचिव संजय कुमार सुमन, संयुक्त सचिव डॉ अनूप कुमार एवं कोषाध्यक्ष पद पर डॉ सुनील कुमार सिंह का चयन किया गया। वहीं कार्यकारिणी सदस्य के रूप में डॉ अपूर्व सारस्वत, डॉ राजकिशोर, डॉ मुकेश कुमार झा, डॉ कुतबुद्दीन अंसारी एवं डॉ निभा कुमारी सिंह चुने गये।

हरलाखी प्रखंड के बिशोल गांव स्थित दुर्गा मंदिर परिसर में डॉ0 संजय कुमार सुमन के द्वारा निशुल्क चिकित्सा शिविर लगाया गया,

जिला संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
मो. अबु बकर सिद्दीकी

मधुबनी जिला के हरलाखी प्रखंड के बिशोल गांव स्थित दुर्गा मंदिर परिसर में डॉ0 संजय कुमार सुमन के द्वारा निशुल्क चिकित्सा शिविर लगाया गया,

शिविर का उद्घाटन राजद प्रखंड अध्यक्ष रामचंद्र शाह व डॉ. संजय कुमार सुमन के द्वारा फीता काटकर किया गया,निशुल्क चिकित्सा शिविर व स्वास्थ्य जांच का लाभ सैकड़ों जरूरतमंद लोगों ने उठाया,

इस दौरान डॉ. संजय कुमार सुमन ने बताया कि आज सबसे ज्यादा समस्या लोगों में स्वास्थ्य को लेकर है,

बहुत ऐसे परिवार है जो पैसा के अभाव में अपना जांच तक नही करा पाते हैं, इसलिए जरूरतमंद लोगों की स्वास्थ्य समस्याओं के मद्देनजर निशुल्क शिविर लगाया गया है,

आगे बताया की प्रखंड क्षेत्र के सभी पंचायतों में शिविर लगाया जाएगा, उन्होंने कहा कि मानव सेवा से बढ़कर कोई धर्म नही इसलिए यह मेरा सौभाग्य की बात है कि मुझे लोगों की सेवा करने का अवसर मिल रहा है

वहीं शिविर में जांच व दवा के लिए पहुंचे राम नारायण राउत रविन्द्र झा अनिता कुमारी रीना देवी पानो देवी मांझी महतो महेश्वर पासवान सहित अन्य लोगों ने डॉ. सुमन का आभार प्रकट करते हुए साधुवाद दिया,

विद्यालय बंद करने के संबंध में एडिट कर सोशल मीडिया में वायरल हो रहे फर्जी आदेश पत्र का खंडन

संवाददाता
रोजनामा इंडो गल्फ
अबु बकर सिद्दीकी

विद्यालय बंद करने के संबंध में एडिट कर सोशल मीडिया में वायरल हो रहे फर्जी आदेश पत्र का खंडन। विद्यालय बंद करने के संबंध में जिलाधिकारी मधुबनी के पूर्व के आदेश पत्र को एडिट कर सोशल मीडिया में वायरल हो रहे फर्जी आदेश पत्र का जिला प्रशासन पूर्णतः खंडन करता है।मधुबनी जिले में विद्यालय पूर्णतः संचालित है।उपरोक्त फर्जी पत्र एडिट कर पोस्ट किया गया है।जिला प्रशासन द्वारा ऐसे शरारती तत्वों को चिन्हित कर उनके विरुद्ध करवाई भी की जा रही है।

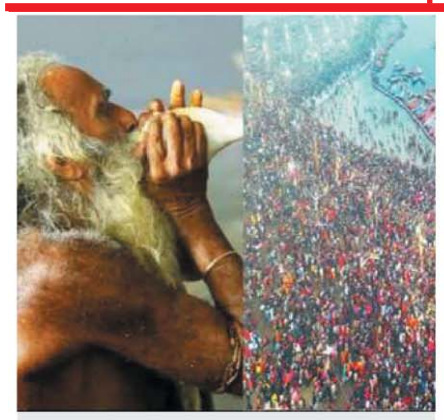

महाकुंभ से घर में जरूर लाएं ये चीजें, बदल जाएगी किस्मत

महाकुंभ मेला आरंभ हो गया है और 26 फरवरी को समाप्त होगा। धार्मिक मान्यता है कि महाकुंभ से शुभ चीजें लाने से व्यक्ति को खुशियां मिलती हैं और उसका जीवन खुशहाल हो जाता है।

महाकुंभ का आयोजन बड़े स्तर पर किया जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार, महाकुंभ में स्नान करने से जातक को मोक्ष की प्राप्ति होती है और जीवन के सभी पापों से छुटकारा मिलता है। इसके अलावा विशेष पुण्य की प्राप्ति होती है। यदि कोई व्यक्ति महाकुंभ के शाही स्नान के दिन स्नान करता है, तो उसे सभी प्रकार के पापों से छुटकारा मिलता है, उनसे छुटकारा मिलता है। ऐसा माना जाता है कि यदि आप महाकुंभ से शुभ चीजें लाते हैं, तो आपके घर और परिवार में हमेशा शांति और खुशी बनी रहेगी और आप सभी प्रकार की समस्याओं से मुक्त हो जाएंगे। महाकुंभ के दौरान कुछ खास चीजें लेकर आना परिवार में समृद्धि, शांति और किस्मत को चमकाने का कारण बन सकता है। आइए जानते हैं उन चीजों के बारे में जो महाकुंभ से घर लानी चाहिए।

गंगा जल

महाकुंभ से गंगा जल लेकर घर में रखना शुभ होता है। गंगा जल को पवित्र माना जाता है और यह घर में शांति और सकारात्मक ऊर्जा लाने का माध्यम माना जाता है। इसे घर के पूजा स्थान पर रखें, इससे घर में सुख-समृद्धि का वास होता है और परिवार से कलह का दूर होती है।

संगम की मिट्टी

संगम की पवित्र मिट्टी को भी घर में रखना बहुत शुभ माना जाता है। इसे घर के मुख्य द्वार या पूजा स्थल पर रखें, इससे घर में आने वाली नकारात्मक ऊर्जा दूर होती है और सकारात्मकता का प्रवाह होता है।

तुलसी के पत्ते

महाकुंभ में तुलसी के पत्ते का भी खास महत्व होता है। इन्हें घर में रखना परिवार के लिए सुख-शांति और सकारात्मक ऊर्जा का स्रोत बनता है। तुलसी को घर में रखने से शांति का वातावरण बनता है और दरिद्रता दूर होती है।

शिवलिंग या पारस पत्थर

शिवलिंग या पारस पत्थर को महाकुंभ से लेकर आना भी अत्यंत लाभकारी माना जाता है। इसे घर में पूजा स्थल पर रखना विशेष लाभकारी होता है, जिससे घर में समृद्धि आती है और जीवन में खुशियां बढ़ती हैं। इन पवित्र और शुभ वस्त्रों को महाकुंभ से घर लाने से न सिर्फ परिवार में शांति रहती है, बल्कि यह घर में खुशहाली और समृद्धि आती है।

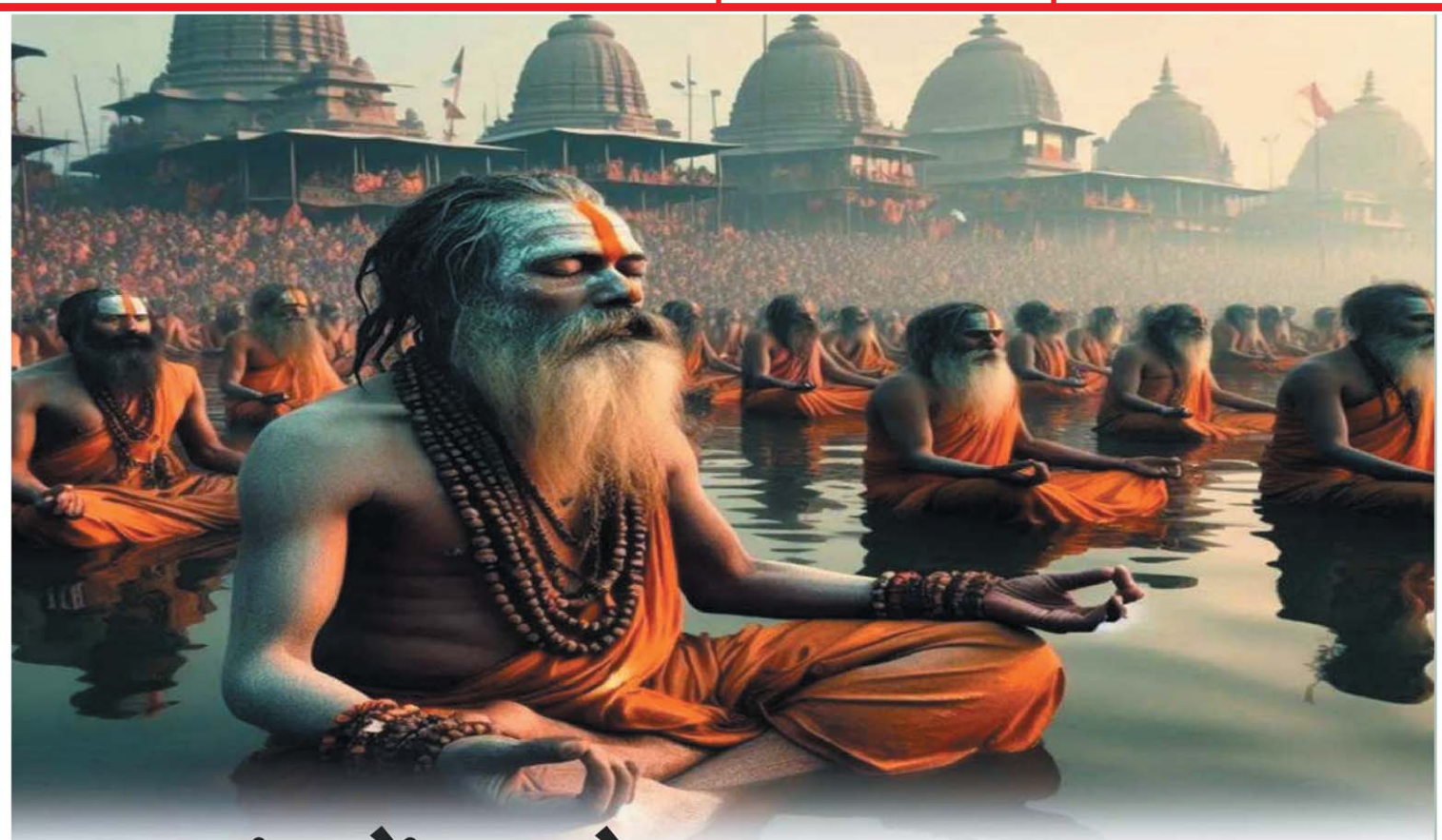

महाकुंभ में सबसे बड़ा अखाड़ा कौन सा है? जानें इसका रहस्य

महाकुंभ में साधु-संतों का आना इसकी दिव्यता को और भी बढ़ा देता है। यूं तो महाकुंभ में कई अखाड़े आते हैं, लेकिन आज हम जानेंगे कि सबसे बड़ा अखाड़ा कौन सा है।

महाकुंभ 2025 का आरंभ हो चुका है। अलग-अलग अखाड़ों से जुड़े साधु-संत महाकुंभ में पधार चुके हैं। यहां तक कि पौष पूर्णिमा के दिन पहला और मकर संक्रांति के दिन दूसरा शाही स्नान भी साधु-संतों द्वारा किया जा चुका है। मान्यता हैं कि महाकुंभ में साधु-संतों के दर्शन से जीवन को एक नई दिशा मिलती है और सकारात्मकता एवं ज्ञान का व्यक्ति में संचार होता है। व्यक्ति आध्यात्म की ओर बढ़ता है।

महाकुंभ में साधु-संतों का आना इसकी दिव्यता को और भी बढ़ा देता है क्योंकि धर्म और भक्ति के इस महापर्व में अनेकों प्रकार के साधु-संत आते हैं ताकि उनकी सालों से चले आ रहे कठोर तप को पूर्णता प्राप्त हो और वह भगवान के चरणों में लीन हो जाएं। यूं तो महाकुंभ में कई अखाड़े आते हैं, लेकिन आज हम जानेंगे कि सबसे बड़ा अखाड़ा कौन सा है।

महाकुंभ 2025 में सबसे बड़ा अखाड़ा कौन सा है? महाकुंभ में तीन प्रकार के अखाड़े हैं - शैव अखाड़ा जो भगवान शिव की परंपरा अनुसार चलता है, वैष्णव अखाड़ा जिसमें भगवान विष्णु द्वारा बताये गए मार्ग का अनुसरण किया जाता है और उदासीन अखाड़ा जिसमें साधु-संतों द्वारा भगवान शिव के प्रतीक ऊँ की पूजा होती है। इन सभी अखाड़ों में शैव संप्रदाय का प्रतिनिधित्व करने वाला श्री पंचदशनाम जूना आखाड़ा सबसे बड़ा है। जूना अखाड़ा उत्तराखंड के कर्णप्रयाग में 1145 में स्थापित किया गया था। इस अखाड़े के साधु-संतों द्वारा भगवान शिव और उनके अंश दत्तात्रेय की पूजा का विधान है।

यह अखाड़ा नागा साधुओं के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है, और यहां नागा साधुओं की संख्या सबसे अधिक पाई जाती है। इस अखाड़े में लगभग 5 लाख नागा साधु और महामंडलेश्वर संन्यासी शामिल हैं। इस अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानंद गिरि महाराज हैं और इसके अंतरराष्ट्रीय संरक्षक श्रीमहंत हरिगिरी हैं। जूना अखाड़े की पेशवाई महाराजाओं की शान और वैभव को प्रदर्शित करती है। इसमें स्वर्ण रथ और अन्य कई प्रकार के वैभवपूर्ण सामान दिखाई देते हैं। इस अखाड़े की पेशवाई में हाथी भी सम्मिलित होता है, जो इसकी भव्यता को और बढ़ाता है। यह एक प्रकार से शाही अखाड़ा है।

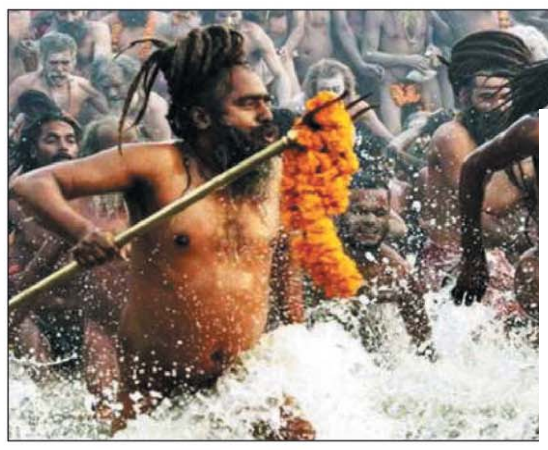

गीता के 700 श्लोकों में है हर समस्या का समाधान

गीता कहती है कि जीवन रोने के लिए नहीं, भाग जाने के लिए नहीं है, हंसने और खेलने के लिए हैं। यह हमें संकटों से, हिम्मत से लड़ने की प्रेरणा देती है। गीता मानव मात्र को जीवन में प्रतिक्षण आने वाले छोटे-बड़े संग्रामों के सामने हिम्मत से खड़े रहने की शक्ति देती है। श्रीमद्भगवद्गीता ज्ञान का अद्भुत भंडार है। हम हर काम में तुरंत नतीजा चाहते हैं लेकिन भगवान ने कहा है कि धैर्य के बिना अज्ञान, दुख, मोह, क्रोध, काम और लोभ से निवृत्ति नहीं मिलेगी।

- श्रीमद्भगवद्गीता एक दिव्य ग्रंथ है। गीता मरना सिखाती है, जीवन को तो धन्य बनाती ही है। यह हमें पलायन से पुरुषार्थ की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देती है।
- श्रीमद्भगवद्गीता हिन्दुओं के पवित्रतम ग्रंथों में से एक है।
- गीता केवल धर्म ग्रंथ ही नहीं यह एक अनुपम जीवन ग्रंथ है। जीवन उत्थान के लिए इसका स्वाध्याय हर व्यक्ति को करना चाहिए।
- श्रीमद्भगवद्गीता की पृष्ठभूमि महाभारत का युद्ध है।
- श्रीमद्भगवद्गीता के 18 अध्याय हैं और महाभारत का युद्ध भी 18 दिन ह चला था।
- अर्जुन को भगवान श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश दिया था।
- गीता में कर्तव्य को ही धर्म कहा है। भगवान कहते हैं कि अपने कर्तव्य को पूरा करने में कभी भी लाभ-हानि का विचार नहीं करना चाहिए।
- गीता के 700 श्लोकों में हर उस समस्या का समाधान है, जो हर इंसान के सामने कभी न कभी आती हैं।
- गीता एकमात्र ऐसा ग्रंथ है, जिसकी जयंती मनाई जाती है।

भगवान ने अर्जुन को निमित्त बनाकर, गीता के ज्ञान द्वारा विश्व के मानव को पुरुषार्थ करने की प्रेरणा दी है।

महाकुंभ में हठयोगी क्यों नहीं काटते हैं अपने नाखून और बाल?

13 जनवरी, दिन सोमवार, पौष पूर्णिमा से महा कुंभ का आरंभ हो चुका है। महाकुंभ के पहले दिन ही शाही स्नान किया जा रहा है। सबसे पहले नागा साधु शाही स्नान करेंगे और फिर उसके बाद अन्य गृहस्थ भक्तों को स्नान की आज्ञा होगी। महाकुंभ एक ऐसा महा पर्व है जहां भिन्न-भिन्न प्रकार के और अलग-अलग मठों से आए साधु-संतों के दर्शन होते हैं। माना जाता है कि महाकुंभ जिस भी व्यक्ति ने अपने जीवन काल में एक बार भी देख लिया या उसका हिस्सा बन गया तो मानो उस व्यक्ति का कल्याण ही कल्याण भगवान द्वारा निश्चित है।

महाकुंभ में साधु-संतों के बीच हठ योगी भी पधारते हैं। हठ योगी संतों की वो श्रेणी होती है जहां संत एक विशेष योग मुद्रा में सालों से ताप करते हैं। अमूमन तौर पर जो साधु-संत होते हैं उनके नियम फिर भी थोड़े सरल होते हैं लेकिन हठ योगियों के नियम बहुत कठिन माने जाते हैं। इन्हीं नियमों में से एक है बाल और नाखून न काटना। ज्योतिषाचार्य राधाकांत वत्स से आइये जानते हैं इस बारे में।

महाकुंभ में हठ योगी क्यों नहीं कटवाते हैं बाल और नाखून?

हठ योगी भगवान शिव की साधना में लीन रहते हैं। भगवान शिव के स्वरूप को याद किया जाए तो स्वयं महादेव की भी जटाएं हैं। ऐसे में हठ योगी जब अपने केशों को जटाओं में परिवर्तित करते हैं तो वह एक प्रकार से भगवान शिव के प्रतीक को धारण कर रहे हैं।

ऐसे में जटाओं को काटना शिव शंभू शंकर के अपमान के समान है। महाकुंभ में जिन जटाओं को जब प्रयागराज में स्नान कराया जाता है या यूं कहें कि धोया जाता है तब संपूर्ण दिव्यता हठ योगियों की इन्हीं जटाओं में समाहित हो जाती है जिसका आभास सिर्फ उन्हें ही होता है।

महाकुंभ के दौरान या फिर जब महाकुंभ नहीं भी होता है तब हठ योगी अपने नाखून भी नहीं काटते हैं क्योंकि नाखून काटना शारीरिक मोह को दर्शाता है। हठ योगियों में शरीर के प्रति हर प्रकार के लगाव को छोड़ने का नियम होता है। ऐसे में वो अपने शरीर के रखरखाव पर ध्यान नहीं देते हैं। महाकुंभ में हठयोगी अपना हठ दिखाने नहीं आते हैं बल्कि भगवान शिव की कृपा प्राप्ति और प्रयागराज संगम पर स्नान कर अपने हठ योग को पूर्ण समापन की ओर ले जाने के लिए आते हैं क्योंकि इसके बाद उन्हें आगे स्वयं महादेव प्राप्त हो जाते हैं और हठ योगियों में दिव्य शक्तियां आ जाती हैं।

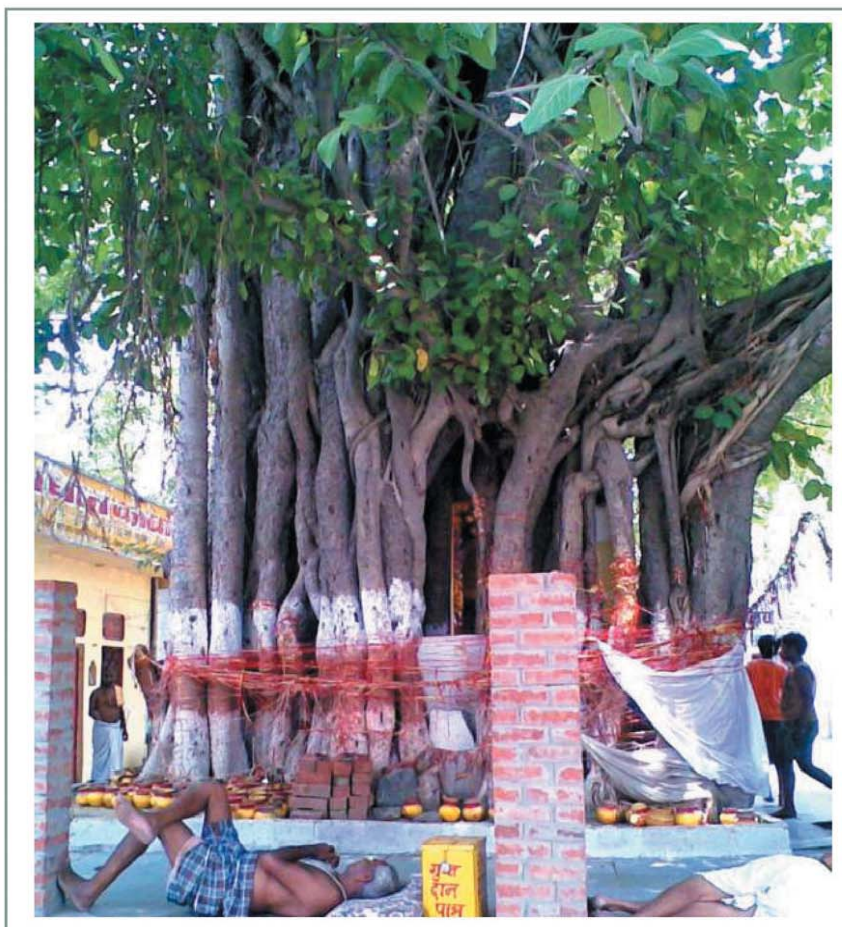

महाकुंभ का मुख्य आकर्षण है यह अक्षय वट, जल प्रलय भी नहीं हिला सका इसकी जड़ें

महाकुंभ लोक आस्था का प्रमुख केंद्र है जिसमें स्नान करने के लिए दूर-दूर से श्रद्धालु आते हैं। महाकुंभ न केवल भारत में प्रसिद्ध है बल्कि विदेशों में भी इसका आकर्षण देखने को मिलता है। 144 वर्षों बाद आयोजित होने के कारण महाकुंभ का महत्व और भी बढ़ जाता है।

इस बार महाकुंभ का आयोजन प्रयागराज में हो रहा है। महाकुंभ के साथ-साथ प्रयागराज में संगम के किनारे स्थित अक्षय वट भी चर्चा का विषय है। क्योंकि इस वृक्ष से जुड़े कई प्रसंग मिलते हैं, जिन्हें पौराणिक काल से जोड़कर देखा जाता है। चलिए जानते हैं इस विषय में।

इसलिए खास है अक्षयवट

त्रिवेणी संगम के पास स्थित होने के कारण यह वृक्ष तीर्थयात्रियों औ श्रद्धालुओं का ध्यान अपनी ओर आव र्षित करता है। मान्यता है कि महाकुंभ के दौरान अक्षयवट के दर्शन मात्र से व्यक्ति के पापों का नाश होता है और जीवन-मरण के बंधनों से मुक्ति मिल जाती है। इस वक्ष को क फी पवित्र माना जाता है और इसकी परिक्र ा भी की जाती है। महाभारत और अन्य पु ाणों में इस वृक्ष को ब्रह्मा, विष्णु और महे ा द्वारा संरक्षित बताया गया है, जिस कारण इसे त्रिदेवों की कृपा का स्थान भी माना ज ता है। साथ ही यह भी माना गया है कि इस अक्षय वट की पूजा-अर्चना से साधक को अक्षय पुण्य की प्राि हो सकती है।

मिलती हैं ये कथाएं

अक्षय वट वृक्ष को लेकर प्र चलित कथा के अनुसार, जब अपने व वास के दौरान भगवान श्रीराम, माता सीता और लक्ष्मण के साथ प्रयागराज आए, तो उन्होंने इसी वट वृक्ष के नीचे विश्राम किया था। इसी के साथ यह स्थान कई ऋषि-मुनियों का तपस्थल भी रहा है। पौराणिक मान्यता है कि ऋषि मार्कंडेय ने इसी वृक्ष के नीचे तपस्या की थी। इसी के साथ जैन धर्म के अनुयायियों का मानना है कि उनके तीर्थंकर ऋषभदेव ने भी इसी अक्षय वट के नीचे तपस्या की थी, इसलिए इस स्थान को ऋषभदेव तपस्थली या तपोवन के नाम से भी जाना जाता है।

लोक आस्था का केंद्र

प्रयागराज में संगम के किनारे स्थित अक्षय वट को लेकर एक पौराणिक मान्यता और भी है, जिसके अनुसार जब सृष्टि के आरंभ में जल प्रलय हुआ, तो समूची पृथ्वी डूब गई थी, लेकिन तब केवल यह वट वृक्ष ही बचा था। तब इसके एक पत्ते पर ईश्वर बाल रूप में रहकर सृष्टि को देखते हैं। इसलिए यह वृक्ष, महाकुंभ के मुख्य आकर्षणों में से एक है, जो लोक आस्था का केंद्र भी बना हुआ है।

मुकेश अंबानी ने किया 5 क्रांतिकारी प्लान का ऐलान, बदल जाएगी जामनगर रिफाइनरी की सूरत

नई दिल्ली, एजेंसी। जामनगर रिफाइनरी को दुनिया का सबसे बड़ा रिफाइनिंग कॉम्प्लेक्स बनाने लिए रिलायंस इंडस्ट्रीज लिमिटेड के चेयरमैन और मैनेजिंग डायरेक्टर मुकेश अंबानी ने 5 परिवर्तनकारी योजनाओं का खुलासा किया।

उन्होंने यह खुलासा जामनगर रिफाइनरी के 25 साल पूरे होने के अवसर पर आयोजित एक भव्य समारोह में किया। 25वीं वर्षगांठ के जश्न में धीरूभाई अंबानी के दूरदर्शी नेतृत्व का सम्मान करने के लिए कर्मचारी, उनके परिवार और प्रमुख अधिकारी एक साथ आए, जिनके सपनों ने जामनगर की सफलता की नींव रखी।

रिफाइनरी के सफर को मुकेश अंबानी ने साझा किया कि कैसे जामनगर सिर्फ एक जगह नहीं बल्कि एक सपने की अभिव्यक्ति है, जिसने भारत के ऊर्जा परिदृश्य को बदल दिया है। अंबानी ने जामनगर रिफाइनरी को इनोवेशन के अपने अगले युग में आगे बढ़ाने के लिए पांच महत्वाकांक्षी योजनाओं की रूपरेखा तैयार की।

1. **दुनिया की सर्वश्रेष्ठ तेल रिफाइनरी**– टीओआई के मुताबिक अंबानी ने जामनगर को दुनिया की सबसे बेहतरीन तेल रिफाइनरी के रूप में बनाए रखने की प्रतिबद्धता बताई, जिसका लक्ष्य अद्वितीय मानक स्थापित करना है।
2. **बेस्ट गीगा फैक्ट्री**– उन्होंने यह भी बताया कि कैसे जामनगर बेस्ट गीगा फैक्ट्री का घर होगा। यहां क्लीन एनर्जी सॉल्यूशन के निर्माण में अग्रणी प्रगति और ग्रीन एनर्जी प्रौद्योगिकियों का समर्थन करने वाला अत्याधुनिक बुनियादी ढांचा तैयार होगा।
3. **सबसे बड़ा सोलर एनर्जी हब**– अंबानी ने कहा कि रिलायंस जामनगर को भारत की रिन्युअल एनर्जी क्रांति का नेतृत्व करते हुए सबसे बड़े सौर ऊर्जा केंद्र के रूप में देखता है।

संक्षिप्त समाचार

सुस्त शेयर की बदली चाल, बीएसएनएल से मिला 2501 करोड़ रुपये का काम

नई दिल्ली, एजेंसी। बीएसएनएल से काम मिलने के बाद एचएफसीएल के शेयरों में तेजी देखने को मिली। बीएसई में शेयर 105.45 रुपये के लेवल पर खुले थे। दिन में कंपनी के शेयर 4.29 प्रतिशत की तेजी के साथ 106.80 रुपये के लेवल तक पहुंच गए। बता दें, कंपनी को 2501 करोड़ रुपये का काम मिला है।

पंजाब में मिला है कंपनी को काम– कंपनी ने शेयर बाजारों को दी जानकारी में कहा है कि उन्हें भारत नेट फेज-3 के पंजाब टेलीकॉम सर्किल में 2501.30 करोड़ रुपये का काम मिला है। कंपनी को यहां मिडिल माइल नेटवर्क डिजाइन, सप्लाई, कंस्ट्रक्शन, इंस्टॉलेशन, अपग्रेडेन, ऑपरेशन और मेंटनेंस का काम मिला है। कंपनी को यह काम 3 साल में पूरा करना है। वहीं, 10 साल तक इसके मेंटनेंस का काम देखना है।

क्या करती है यह कंपनी– हिमाचल फ्यूचरिस्टिक कम्युनिकेशंस लिमिटेड टेलीकॉम इंफ्रास्ट्रक्चर सॉल्यूशंस के डिजाइनिंग, मैन्युफैक्चरिंग का काम करती है। कंपनी इसके अलावा ऑप्टिकल फाइबर और ऑप्टिकल फाइबर केबल की मैन्युफैक्चरिंग, डिजाइनिंग का भी काम करती है। कंपनी इंडोर और आउटडोर वाई-फाई एक्सेस प्वाइंट्स, स्विच, राउटर्स और रेडियो रिले भी बनाती है।

शेयर बाजार में कंपनी का प्रदर्शन कैसा है– स्टॉक मार्केट में एचएफसीएल का प्रदर्शन बहुत अच्छा नहीं रहा है। पिछले एक महीने में कंपनी के शेयरों का भाव 14 प्रतिशत से अधिक गिरा है। वहीं, 6 महीने में स्टॉक का भाव 14 प्रतिशत टूटा है। हालांकि, निवेशकों के नजरिए से अच्छी बात यह है कि तमाम मुश्किलों के बाद भी 1 साल में यह स्टॉक 20 प्रतिशत से अधिक का रिटर्न देने में सफल रहा है। जबकि इस दौरान सेंसेक्स 7.35 प्रतिशत ही चढ़ा है। कंपनी का 52 वीक हाई 171 रुपये है। कंपनी का 52 वीक लो लेवल 81.22 रुपये है। कंपनी का मार्केट कैप 14,946 करोड़ रुपये का है।

35 रुपये से 1400 के पार ट्राइडेंट टेकलैब्स के शेयर

नई दिल्ली, एजेंसी। एक छोटी कंपनी ट्राइडेंट टेकलैब्स के शेयर एक साल से बाजार में धमाल मचाए हुए हैं। कंपनी के शेयर इस अवधि में 35 रुपये से बढ़कर 1400 रुपये के पार पहुंच गए हैं। ट्राइडेंट टेकलैब्स के शेयर शुक्रवार को 1450 रुपये पर ट्रेड कर रहे हैं। कंपनी के शेयरों ने एक साल से कुछ ज्यादा समय में निवेशकों को 3800 पर्सेंट से ज्यादा का रिटर्न दिया है। ट्राइडेंट टेकलैब्स के शेयरों का 52 हफ्ते का हाई लेवल 1670 रुपये है। वहीं, कंपनी के शेयरों का 52 हफ्ते का लो लेवल 157.10 रुपये है।

35 रुपये से 1400 के पार पहुंच गए कंपनी के शेयर– ट्राइडेंट टेकलैब्स का आईपीओ दांव लगाने के लिए 21 दिसंबर 2023 को खुला था और यह 26 दिसंबर 2023 तक ओपन रहा। कंपनी के आईपीओ में शेयर का दाम 35 रुपये था। ट्राइडेंट टेकलैब्स के शेयर 29 दिसंबर 2023 को 98.15 रुपये पर लिस्ट हुए थे। कंपनी के शेयर 17 जनवरी 2025 को 1450 रुपये पर जा पहुंचे हैं। 35 रुपये के इश्यू प्राइस के मुकाबले ट्राइडेंट टेकलैब्स के शेयर 3800 पर्सेंट से अधिक उछल गए हैं।

चीनी पर मोदी सरकार ले सकती है बड़ा फैसला

सिर्फ खबर से शुगर स्टॉक्स पर टूटे निवेशक

नई दिल्ली, एजेंसी। शेयर बाजार एक बार फिर रिकवरी मोड में आ गया है। सप्ताह के चौथे दिन गुरुवार को शेयर बाजार में तेजी के बीच शुगर स्टॉक्स रॉकेट की तरह बढ़ते नजर आए। मीडिया में यह खबर चल रही है कि केंद्र की नरेंद्र मोदी सरकार जल्द ही चीनी के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को बढ़ाने पर निर्णय ले सकती है। इस खबर की वजह से निवेशकों की दिलचस्पी शुगर स्टॉक्स की ओर बढ़ी।

किस शेयर का क्या हाल– धामपुर शुगर मिल्स के शेयर की बात करें तो 10.70 प्रतिशत चढ़कर 160.30 रुपये पर पहुंच गया। द्वारिकेश शुगर के शेयर 51.21 रुपये पर हैं। यह एक दिन पहले के 6.55 प्रतिशत बढ़कर बंद हुए। डालमिया भारत शुगर एंड इंडस्ट्रीज के शेयर में 8.56 प्रतिशत तेजी थी और यह 370.15 रुपये के स्तर पर था। श्री रेणुका शुगर्स 4.83 प्रतिशत बढ़कर 38.62 रुपये पर और बजाज हिंदुस्तान शुगर के शेयर 5.35 प्रतिशत की तेजी के साथ 29.93 रुपये पर बंद हुए। इसके अलावा मवाना शुगर्स के शेयर में 5.11 प्रतिशत की तेजी आई और यह 97.74 रुपये पर ठहरा। इसी तरह, त्रिवेणी इंजीनियरिंग एंड इंडस्ट्रीज, ईआईडी पैरी और बलरामपुर चीनी मिल्स के शेयर को भी खरीदने की लूट सी मच गई।

आंदोलनकारियों का दबाव–दरअसल, कई दिन से किसान एमएसपी सहित कुछ मांगों को लेकर अनशन पर बैठे हुए हैं। न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) के लिए कानूनी गारंटी के अलावा, किसानों ने स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों को लागू करने, किसानों और खेत मजदूरों के लिए पेंशन, कृषि ऋण माफी, भूमि अधिग्रहण अधिनियम 2013 की बहाली और पिछले आंदोलन के दौरान (वर्ष 2020-21) मारे गए किसानों के परिवारों को मुआवजा देने की मांग की है।

62 प्रतिशत चढ़ सकता है यह शेयर, 2-2 एक्सपर्ट्स बुलिश, वीआई से खास कनेक्शन

नई दिल्ली, एजेंसी। टेलीकॉम कंपनी इंडस टॉवर लिमिटेड के शेयरों में शुक्रवार को 3 प्रतिशत से अधिक की तेजी देखने को मिली है। इस स्टॉक के प्रदर्शन को लेकर ब्रोकरेज हाउस सीएलएसए बुलिश है। ब्रोकरेज हाउस ने स्टॉक हाई कंविक्शन लिस्ट में जोड़ रखा है।

365 रुपये के करीब पहुंचा भाव– बीएसई में कंपनी के शेयर शुक्रवार को 357 रुपये के लेवल पर ओपन हुआ था। दिन में 11.30 मिनट तक बीएसई में कंपनी का इंट्रा-डे हाई 364.95 रुपये रहा है। बता दें, कंपनी का 52 वीक हाई 460.70 रुपये और 52 वीक लो लेवल 206 रुपये प्रति शेयर है।

वोडाफोन से मिला है 1900 करोड़ रुपये– इंडस टॉवर को हाल ही में 1900 करोड़ रुपये का भुगतान वोडाफोन आइडिया ने किया है। वीआई ने यह पैसा प्रीफरेंशियल इक्विटी के जरिए जुटाया था। **575 रुपये का टारगेट प्राइस**– ब्रोकरेज हाउस ने 575 रुपये का टारगेट प्राइस सेट किया है। जोकि गुरुवार की क्लोजिंग की तुलना में 62 प्रतिशत अधिक है। मनी कंट्रोल की रिपोर्ट के अनुसान इसी महीने की शुरुआत में सिटी रिसर्च ने भी इस स्टॉक के बुलिश ट्रेंड की बात कही थी।

टीसीएस ने अपनी वर्क फ्रॉम ऑफिस पॉलिसी को और सख्त किया

नई दिल्ली, एजेंसी। टाटा ग्रुप की आईटी कंपनी ने कर्मचारियों के लिए अपनी वर्क फ्रॉम ऑफिस पॉलिसी को अपडेट किया है। संशोधित डब्ल्यूएफओ विनियमों ने कार्यालय उपस्थिति आवश्यकताओं को सख्त कर दिया है। भारतीय कर्मचारियों को पर्सनल इमरजेंसी में बिना अनयूज्ड दिनों को अगली तिमाही में ट्रांसफर करने के विकल्प के रूप में प्रति तिमाही 6 दिनों तक के लिए मेंशन किया जा सकता है। कंपनी का यह कम्युनिकेशन कर्मचारियों को एक ही एंट्री में 30 एक्सेप्शन्स को प्रस्तुत करने की अनुमति देकर स्थान की कमी को बताता है।

टाइम्स ऑफ इंडिया की खबर के मुताबिक नेटवर्क से संबंधित इश्यू को एक साथ 5 एंट्री के लिए मेंशन किया जा सकता है।

एक्सेप्शनल रिक्वेस्ट 10 ि नों के भीतर ऑटोमेटिक रिजेक्शन प्रोसेस नहीं होंगे। देर से स मिट किए गए अनुरोधों पर नोट में कहा गया है, पिछली तिथि वाली प्रविष्टि को वर्तमान तिथि से केवल दो पिछली तिथियों तक ही अ मति दी जाएगी और वर्तमान महीने के लिए लापता डब्ल्यूएफओ ट्री कैटेगरी को अगले महीने की 5 तारीख तक रेज किया जा सकता है।

बैकएंड एंट्री बैन–कंपनी ने ल्क अपलोड या बैकएंड प्रविष्टियों को प्रतिबंधित कर दिया है। बत ा दें टीसीएस ने पांच दिन की कार्यालय उपस्थिति नीति को लागू क रने में कुछ अन्य भारतीय आईटी कंपनियों के बीच नेतृत्व वि या। अन्य कंपनियां अभी सप्ताह में दो या तीन दिन कार्यालय में उ पस्थिति की नीति पर काम कर रही हैं। कंपनी के एचआर हेड मिि ंद लक्कड़ ने स्थिरता प्राप्त होने के बाद इस नीति को बंद करने की संभावना का संकेत दिया।

एक सकारात्मक और हैप्पी वर्कप्लेस को बढ़ावा देने का आग्रह– लक्कड़ ने कर्मचारियों को संबोधित करते हुए प्रबंधकों को सम्मानजनक प्रतिक्रिया प्र थाओं के बारे में निर्देश दिया। संदेश में कहा गया, मैं हर लीडर से एक सकारात्मक और हैप्पी वर्कप्लेस को बढ़ावा देने का आग्रह क रता हूं, जहां हर कोई दूसरों के साथ काम करने और सहयोग क रने के लिए तत्पर रहता है।

90 हजार नौकरीपेशा लोगों पर आयकर विभाग की नजर, टैक्स में गड़बड़ी का है मामला

नई दिल्ली, एजेंसी। आयकर विभाग ने बड़ी संख्या में रिफंड के गलत दावों का पता लगाया है। सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और निजी क्षेत्र, दोनों से 90,000 नौकरीपेशा लोगों ने टैक्स से बचने के लिए 31 दिसंबर 2024 तक कुल 1070 करोड़ रुपये की छूट के गलत दावे वापस लिए हैं। सरकारी सूत्रों ने यह जानकारी दी।

खूब हुआ नियमों का उल्लंघन

आयकर विभाग के यह संज्ञान में आया कि अलग-अलग व्यक्ति अपने आईटीआर में आयकर कानून की धारा 80सी, 80डी, 80ई, 80जी, 80जीजीबी, 80जीजीसी के तहत कटौती का गलत दावा कर रहे हैं, जिससे सरकार को मिलने वाले टैक्स में कमी आ रही है। सूत्रों ने बताया कि जांच के दौरान पता चला कि ऐसे व्यक्ति सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, बड़ी कंपनियों, बहुराष्ट्रीय कंपनियों, निजी कंपनियों सहित विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले संगठनों के कर्मचारी हैं। साथ ही, कटौती का गलत दावा करने वालों में से ज्यादातर एक ही कंपनी में काम कर रहे थे। विभाग के पास मौजूद जानकारी के विश्लेषण से पता चला कि टैक्सपेयर्स के आयकर रिटर्न में धारा 80जीजीबी/80जीजीसी के तहत दावा की गई कुल कटौतियों और दिखाई गई कुल प्राप्तियों के बीच भारी अतंर है। सूत्रों ने कहा कि इसी तरह, धारा 80सी, 80ई, 80जी के तहत दावा की गई कटौती भी संदेहास्पद जान पड़ती है।

नियोक्ताओं की सूची की पहचान

उन्होंने कहा कि नियोक्ताओं (टीडीएस कटौती करने वाले) की एक सूची की पहचान की गई है और टैक्स डिपार्टमेंट यथासंभव अधिक से अधिक व्यक्तियों तक पहुंच बनाएगा, जिनपर धारा 80ई, 80जी, 80जीजीए, 80जीजीसी और अन्य कटौतियों के तहत कटौती का फर्जी दावा करने का संदेह है। सूत्र ने कहा कि विभाग आयकर रिटर्न में गलत तरीके से कटौती का दावा करने के परिणामों और करदाताओं के भूल-चूक को सुधारने के लिए उठाए जा सकने वाले सुधारात्मक उपायों के बारे में जागरूकता के लिए नियोक्ताओं के साथ बैठकें कर रहा है।

गलतियों को सुधारने का मौका– आयकर अधिनियम, 1961 के प्रावधानों के अनुसार करदाता संबंधित आकलन वर्ष समाप्त होने पर, 2022-23 से 2024-25 के लिए दो साल के भीतर त्रुटियों को सुधारते हुए कुछ अतिरिक्त कर के भुगतान पर अपडेटेड रिटर्न दाखिल कर सकते हैं। सूत्रों ने बताया कि स्वैच्छिक कर अनुपालन को बढ़ावा देने और मुकदमेबाजी को कम करने के विभाग के प्रयासों को तेज करने के लिए नियोक्ताओं के साथ बैठकें की जा रही हैं।

2 कमरों से बिजनेस शुरू कर खड़ी कर दी 100 करोड़ की कंपनी

छोटे शहर के इन दोस्तों की कहानी भर देगी हौसला

नई दिल्ली, एजेंसी। इंदौर के आकाश जोशी और अंकुर पाठक ने 2016 में दो कमरों के ऑफिस से आईएमएएसटी की शुरुआत की थी। आठ साल बाद यह स्टार्टअप 100 करोड़ रुपये की वैल्यूएशन हासिल कर चुका है। यह भारत के कई उद्योगों को टेक-बेस्ड सॉल्यूशन प्रदान करता है। आकाश कॉर्पोरेट जॉब छोड़कर खुद का कुछ करना चाहते थे। अंकुर के साथ मिलकर उन्होंने आईएमएएसटी की नींव रखी। शुरुआत में पंप इंडस्ट्री पर फोकस किया गया। बाद में आईएमएएसटी 360 जैसे उत्पादों के साथ कई क्षेत्रों में अपनी सेवाओं का विस्तार किया। कंपनी का रेवेन्यू 1.13 करोड़ रुपये है। इसके क्लाइंट लगातार बढ़ रहे हैं। भविष्य में यूएई और यूएस मार्केट में विस्तार की योजना है। आइए, यहां आकाश जोशी और अंकुर पाठक की सफलता के सफर के बारे में जानते हैं।

ऐसे बनी दोनों की जोड़ी– आकाश जोशी और अंकुर पाठक ने 2016 में इंदौर से आईएमएएसटी की शुरुआत की। यह स्टार्टअप उद्योगों को तकनीकी समाधान प्रदान करता है। आठ सालों में आईएमएएसटी ने 100 करोड़ रुपये का मूल्यांकन हासिल किया है। कंपनी का राजस्व 1.13 करोड़ रुपये है। आईएमएएसटी के 100 से ज्यादा ग्राहक हैं। यह एक्सेंचर, एमडॉक्स, केपजेमिनी जैसी कंपनियों से मुकाबला कर रही है। आकाश एक स्टेबल और अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी करते थे। लेकिन, मन में अपना बिजनेस शुरू करने की चाहत थी। उन्होंने नौकरी छोड़कर अंकुर पाठक के साथ मिलकर आईएमएएसटी की स्थापना की। वे हर कंपनी की जरूरतों के हिसाब से सॉल्यूशन तैयार करते हैं। आईएमएएसटी के अब 150 से ज्यादा कर्मचारी हैं। अशोक लीलैंड, ट्राइडेंट ग्रुप, रेमंड्स जैसी कंपनियां उनके ग्राहक हैं। कोविड-19 महामारी के दौरान भी आईएमएएसटी ने अपने सभी ग्राहकों को बनाए रखा।

कई बड़ी कंपनियों में किया काम– आकाश जोशी मध्य प्रदेश के देवास से हैं। उनका पालन-पोषण एक सामान्य परिवार में हुआ। वह हमेशा पढ़ाई में अच्छे रहे। उन्हें हमेशा बताया जाता था कि अच्छी पढ़ाई बड़े शहरों तक पहुंचने का रास्ता बनाती है। 12वीं कक्षा में अच्छे अंक हासिल करने करने के बाद आकाश ने इंजीनियरिंग ऑनर्स और फिर ड्रूसलेम यूनिवर्सिटी से एमबीए करने का फैसला किया। अपनी पूरी शिक्षा के दौरान वह उत्कृष्ट छात्र रहे।

अंकुर को इस सेक्टर में महारत

अंकुर पा ठक को आईटी, सप्लाई चेन और वित्त संच ालन में एक दशक से अधिक का अनुभव है। उन्होंने टेक्नोलॉजी-बैक्ड चैनल ट्रांसफॉर्मे शन और प्रोसेस कस्टमाइजेशन में अपनी वि शेषज्ञता के साथ दुनिया भर में 100 से ज्यादा ब्रांडों को सेवाएं प्रदान की हैं। इसके अलावा, उन्होंने सीमेंस, रेमंड और अन्य जैसे बड़े ब्रांडो के साथ काम किया है।

यह है सफलता का राज

आईएमए एसटी की सफलता का राज ग्राहक-केंद्रित से वाएं हैं। आकाश और अंकुर हर ग्राहक की जरूरतों को समझते हैं। उनके हिसाब से समाधान तैयार करते हैं। यही वजह है कि उन्हें अपनाने वाले ग्राहकों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। आईएमएएसटी की टीम लगातार नए और बेहतर तकनीकी समाधान विकसित करने पर काम कर रही है। वे भविष्य में अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी अपनी पहुंच बढ़ाने की योजना बना रहे हैं। आईएमए एसटी की कहानी यह दर्शाती है कि अगर आ पके पास एक अच्छा आइडिया और उसे पूरा करने की लगन है, तो आप जरूर सफल होंगे। चाहे आप कितनी भी छोटी शुरुआत क्यों न करें।

22 जनवरी को खुल रहा है डेन्टा वाटर का आईपीओ

नई दिल्ली, एजेंसी। डेन्टा वाटर एंड इंफ्रा सॉल्यूशन्स लिमिटेड का आईपीओ आ रहा है। कंपनी ने आईपीओ के लिए प्राइस बैंड सेट कर दिया है। इस आईपीओ का प्राइस बैंड 279 रुपये से 294 रुपये प्रति शेयर तय किया है। कंपनी का आईपीओ 22 जनवरी को खुल जाएगा। वहीं, एंकर निवेशक आईपीओ को 21 जनवरी को दांव लगा पाएंगे। बता दें, आईपीओ का प्राइस बैंड 24 जनवरी को बंद हो रहा है।

75 लाख नए शेयर जारी करेगी कंपनी– निवेशकों के खाते में कंपनी की तरफ शेयर 27 जनवरी को अलॉट किए जाएंगे। वहीं, लिस्टिंग 29 जनवरी को प्रस्तावित है। बता दें, इस आईपीओ में पूरी तरह से फ्रेश ही जारी किया जाएगा। कंपनी 75 लाख नए शेयर जारी करेगी। इस आईपीओ का साइज 220.50 करोड़ रुपये का है।

पैसों क्या करेगी डेन्टा वाटर एंड इंफ्रा सॉल्यूशन्स लिमिटेड– डेल्टा वाटर एक चर्चित कंपनी है। कंपनी वाटर इंजीनियरिंग और कंस्ट्रक्नशन सर्विसेज देती है। कंपनी आईपीओ का 150 करोड़ रुपये का वर्किंग कैपिटल में इस्तेमाल करेगी। जिसमें से 50 करोड़ रुपये इस साल और अगले वित्त वर्ष में 100 करोड़ रुपये का इस्तेमाल किया जाएगा। बता दें, अक्टूबर 2023 तक कंपनी ने 27 वाटर मैनेजमेंट इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट प्रोजेक्ट को पूरा कर लिया था।

भीषण आग से अमेरिका ही नहीं, दुनिया सबक ले

ललित गर्ग

आज अमेरिका विकास की चरम अवस्था पार कर चुका है। यह आशंका सदैव बनी रही है कि अनियंत्रित विकास एवं प्रकृति विनाश के प्रति समय रहते नहीं चेतने की कीमत सृष्टि के विनाश एवं मानवता के धंस से चुकानी होती है, धरती का पर्यावरण नष्ट हो जाता है। धरती पर मंडराते इसी संकट का प्रतीक है यह आग। बात बहुत ही सीधी सी है कि जब तक प्रकृति डराती नहीं विकास की राहें ऐसे ही बेतहाशा एवं अनियंत्रित आगे बढ़ती रहती हैं।

अमेरिका के लॉस एंजेलिस में जंगल की बेकाबू आग फेलने, भारी तबाही, महाविनाश और भारी जन-धन की क्षति ने साबित किया है कि दुनिया की नंबर एक महाशक्ति भी कुदरत के रौद्र के सामने बौनी ही साबित हुई है। न केवल अमेरिका के इतिहास में बल्कि दुनिया के इतिहास यह जंगल की आग सबसे भयावह, सर्वाधिक विनाशकारी एवं डरावनी साबित हुई है। आग धीमी होने का नाम नहीं ले रही है। बल्कि और तेजी से बढ़ती जा रही है और इसका कारण 160 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली हवाएं हैं। ये हवाएं इस आग को और भड़का रही हैं, तबाही का मंजर बन रही है, जिसे रोकना अमेरिका प्रशासन के लिए एक चुनौती बन गया है। अमेरिकी सेना के सी-130 विमान और फायर हेलीकॉप्टर हर संभव कोशिश कर रहे हैं। लेकिन हवा की गति और आग की लपटों की ताकत के आगे दुनिया की सबसे बड़ी ताकत के तमाम प्रयास नाकाफी एवं बेबस साबित हो रहे हैं।

अनियंत्रित विकास, पर्यावरण की घोर उपेक्षा एवं भौतिकतावादी सोच इस आग का बड़ा कारण है। खरबों रुपये की संपत्ति और प्राकृतिक संपदा के नष्ट होने के अलावा करीब दो लाख लोगों को विस्थापित होना पड़ा है। आलीशान बंगलों, सरकारी संरचना तथा नागरिक सुविधा के साधनों के स्वाह होने के साथ करीब 24 लोगों के मारे जाने की खबर है। करीब दो लाख लोगों को घर-बार छोड़कर जाने के लिये तैयार रहने को कहा गया है। अमेरिका संस्कृतिविहीन देश बनता जा रहा है- यह राष्ट्र भौतिक विकास, पर्यावरण उपेक्षा एवं शस्त्र संस्कृति पर सवार है। वहां के नागरिक अपने पास जितने चाहें, उतने भौतिक संसाधन रख सकते हैं। सुविधावादी जीवनशैली के शिखर एवं तमाम सुरक्षा परिस्थितियों में जीने के बावजूद यह देश आज कितना असहाय एवं बेबस है। विकास की बोली बोलने वाला, विकास की जमीन में खाद एवं पानी देने वाला, दुनिया में आधुनिकता, तकनीक एवं विकास की आंधी लाने वाला अमेरिका जब खुद ऐसी भीषण आग की तबाही का शिकार होने लगा तो उसकी नींद टूटी हैं, उसे अपनी असलियत का पता लगा।

दुनिया को सुरक्षा एवं विकास का आश्वासन देने वाला देश आज खुद अपनी रक्षा नहीं कर पा रहा है। वहां के आधुनिक तकनीक से लेस दमकल विभाग व सुरक्षा बलों की तमाम कोशिशों के बावजूद आग बेकाबू है। लोग असहाय होकर अपनी जीवन भर की पूंजी को स्वाह होते देख रहे हैं। जलवायु परिवर्तन के चलते तल्ख होते मौसम

से हालात और खराब होने की आशंका जतायी जा रही है। आग के बाद का जो मंजर नजर आ रहा है उसे देखकर ऐसा लगता है मानो कोई बम गिराया गया हो। विडंबना यह है कि आपदा में अवसर तलाशने वाले कुछ लोग खाली कराये गए घरों में लूटपाट से भी बाज नहीं आ रहे हैं। हॉलीवुड हिल्स इलाके में करीब साढ़े पांच हजार से अधिक इमारतों के नष्ट होने की खबर है। कई नामी फिल्मी हस्तियों के घर, जैसे बिली क्रिस्टल, मैंडी मूर, जेमी ली कर्टिस और पेरिस हिल्टन शामिल हैं एवं व्यावसायिक इमारतें व सार्वजनिक संस्थान आग की भेंट चढ़े हैं। वहां की आस्थाएं एवं निष्ठाएं इतनी जख्मी हो गयी कि विश्वास जैसा सुरक्षा-कवच मनुष्य-मनुष्य के बीच रहा ही नहीं। साफ चेहरों के भीतर कौन कितना बदसूरत एवं उन्मादी मन समेटे है, कहना कठिन है। अमेरिका की विकास की होड़ एवं तकनीकीकरण की दौड़ पूरी मानव जाति को ऐसे कोने में धकेल रही है, जहां से लौटना मुश्किल हो गया है। ईश्वर की बनायी संरचना में दखल का ही परिणाम है कि प्रकृति इतना रौद्र एवं विध्वंसक रूप धारण किया है।

अमेरिका आज दुनिया में प्रकृति के दोहन, अपराध का सबसे बड़ा अड्डा है और हिंसा की जो संस्कृति उसने दुनिया में फैलाई, आज वह स्वयं उसका शिकार है। अमेरिका के इतिहास में यह जंगल की आग सबसे भयावह साबित हुई है। चिंता की बात यह है कि इलाके में हाल-फिलहाल बारिश होने की संभावना नहीं है, जिससे जंगल की आग जल्दी काबू में आ सकती। एक बड़े इलाके में बिजली आपूर्ति ठप होने व पानी की आपूर्ति में बाधा संकट को और बढ़ा रही है। लोगों की सुरक्षित स्थानों में जाने के लिये अफरा-तफरी से जगह-जगह ट्रैफिक जाम लग रहे हैं। पानी का दबाव कम होने से दमकल कर्मियों को आग बुझाने में परेशानी आ रही है। घोर अव्यवस्था एवं कुप्रशासन फेला है। दरअसल यह आग लॉस एंजेलिस के उत्तरी भाग में लगी, जिसने बाद में कई बड़े शहरों को अपनी चपेट में ले लिया। तेज हवाओं व सूखे मौसम के कारण आग ज्यादा भड़की है। सूखे पेड़-पौधे तेजी से आग की चपेट में आ गए। हालांकि, आग लगने का ठोस कारण अभी तक पता नहीं चला है। हकीकत है कि जंगलों में 95 फीसदी आग इंसानों द्वारा ही लगायी जाती है। वैसे जलवायु परिवर्तन प्रभावों के चलते बदले हालात में अब पूरे साल आग लगने की आशंका बनी रहती है।

अमेरिका दुनिया पर अपना एकछत्र शासन चाहता है। कनाडा, ग्रीनलैंड एवं पनामा को अमेरिका में शामिल करना चाहते हैं। मतलब सीधा सा है जिसकी लाठी उसकी भैंस यानी पावर और पैसे के बल पर खुद को बलवान और सुपरपावर मुल्क समझने वाला अमेरिका एक आग के आगे बेबस नजर आ रहा है। कैलिफोर्निया के दक्षिणी हिस्से में शुरू हुई इस जंगल की आग ने अब लॉस एंजलिस जैसे बड़े शहर को राख बना दिया है। पैलिसेड्स में 20 हजार एकड़, ईटन में 14 हजार एकड़, कैनेथ में 1000 एकड़, हर्स्ट में 900 एकड़, लिडिआ में 500 एकड़ में आग फैली है। इन इलाके में राख के बारीक कणों व धुएं की चादर के कारण स्थानीय स्वास्थ्य इमरजेंसी घोषित की गई है। लोगों का जीवन इन सभी स्थानों पर दुर्भर हो गया है। लॉस एंजलिस की इस आग ने न केवल जीवन और संपत्ति को नुकसान पहुंचाया है, बल्कि सूखे और जलवायु परिवर्तन के प्रति गंभीर चेतावनी भी दी है। इससे निपटने के लिए दीर्घकालिक समाधान तलाशना बेहद जरूरी है।

आज अमेरिका विकास की चरम अवस्था पार कर चुका है। यह आशंका सदैव बनी रही है कि अनियंत्रित विकास एवं प्रकृति विनाश के प्रति समय रहते नहीं चेतने की कीमत सृष्टि के विनाश एवं मानवता के धंस से चुकानी होती है, धरती का पर्यावरण नष्ट हो जाता है। धरती पर मंडराते इसी संकट का प्रतीक है यह आग। बात बहुत ही सीधी सी है कि जब तक प्रकृति डराती नहीं विकास की राहें ऐसे ही बेतहाशा एवं अनियंत्रित आगे बढ़ती रहती हैं। किंतु जब प्रकृति मुस्कुराना भूल जाए तो वह विकास, विकास नहीं रहता। वहाँ कृत्रिमता दस्तक देने लगती है, धरती करवट बदलने लगती है, अम्बर चीत्कार कर उठता है तब मनुष्य को समझ लेना चाहिए कि अब विनाश की पदचाप सुनाई देने लगी हैं। अपनी राहें सुरक्षित रखने के वास्ते राहों को मोड़ने पर विचार करना चाहिए। जिद एवं अहंकार में बाजी पलट सकती है, वरना विनाश का दावानल अमेरिका की आग की तरह सब कुछ राख कर देता है। ह्यमन जो चाहे वही करोह्न की मानसिकता वहां पनपती है जहां ईश्वर की सत्ता एवं इंसानी रिश्तों के मूल्य समाप्त हो चुके होते हैं, ऐसी स्थिति में शक्तिशाली देश अपनी अनंत शक्तियों को भी बौना बना देता है। यह दकियानूसी ढंग है भीतर की अस्तव्यस्तता को प्रकट करने का। ऐसे देशों एवं लोगों के पास सही जीने का शिष्ट एवं अहिंसक सलीका नहीं होता। वक्त की पहचान नहीं होती। ऐसे लोगों में संतुलित विकास, शांतिपूर्ण सहजीवन, सृष्टि का संतुलन एवं सर्वोच्च ईश्वर सत्ता के प्रति सम्मान आदि का कोई खास ख्याल नहीं रहता। भौतिक सुख-सुविधाएं ही जीवन का अंतिम लक्ष्य बन जाता है। एक राष्ट्र मूल्यहीनता, प्रकृति उपेक्षा एवं अहंकारी सोच में कैसे शक्तिशाली बन सकता है? पक्षी भी एक विशेष मौसम में अपने घोंसले बदल लेते हैं। पर मनुष्य अपनी वृत्तियां नहीं बदलता। वह अपनी वृत्तियां तब बदलने को मजबूर होता है जब दुर्घटना, दुर्दिन या दुर्भाग्य का सामना होता है। अमेरिका की आग पक्षियों के इस संदेश को समझने व समय रहते जागने को कह रही है। इस आग से अमेरिका ही नहीं, समूची दुनिया को सबक लेने की जरूरत है।

संपादकीय

सही दिशा में कश्मीर

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को कश्मीर के गांदरबल जिले में 6.5 किमी. लंबी जेड़ मोड़.सुरंग का उद्घाटन करते हुए कहा कि 'कश्मीर देश का मुकुट है, इसलिए मैं चाहता हूं कि यह ताज और सुंदर तथा समृद्ध हो।' उन्होंने आगे यह भी कहा, 'मैं बस इतना चाहता हूं कि दूरियां अब मिट गई हैं, हमें मिल कर सपने देखना चाहिए, संकल्प लेना चाहिए और सफलता हासिल करनी चाहिए।' लेकिन इस अवसर पर जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला का दिया गया भाषण ज्यादा महत्त्वपूर्ण और प्रासंगिक है, जिसके अनेक निहितार्थ निकाले जा सकते हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि 'पंद्रह दिन के अंदर पहले जम्मू को रेलवे ड़िवीजन और अब टनल, इन परियोजनाओं से न सिर्फ दिल की दूरी, बल्कि दिल्ली से दूरी भी कम हो जाती है।' प्रधानमंत्री मोदी के भाषण का उल्लेखकरते हुए मुख्यमंत्री उमर ने कहा, 'मेरा दिल कहता है कि प्रधानमंत्री बहुत जल्द जम्मू-कश्मीर के लोगों को किया गया अपना तीसरा वादा भी पूरा करेंगे, जो राज्य का दर्जा बहाल करना है।' मुख्यमंत्री के भाषण से प्रतीत होता है कि उनका कांग्रेस नेता राहुल गांधी से मोहभंग हुआ है और उन्होंने अच्छी तरह से समझ लिया है कि अगर जम्मू-कश्मीर का विकास करना है और यहां व्यवस्थित सरकार चलानी है तो प्रधानमंत्री मोदी के सहयोग से ही चला सकते हैं, टकराव से नहीं। अगर मोदी का सहयोग मिलता रहेगा तो केंद्र का अनावश्यक हस्तक्षेप भी नहीं होगा। जाहिर है कि इस पर्वतीय प्रदेश में राज्य सरकार और केंद्र के बीच सहयोग से ही लोकतंत्र मजबूत होगा, शांति और स्थिरता आएगी। आतंकवाद और अलगाववाद परास्त होगा। किसी भी क्षेत्र के विकास के लिएये आवश्यक शर्त है। पिछले कुछ वर्षों के दौरान राज्य में आतंकी घटनाओं में उल्लेखनीय कमी आई है। संतोषजनक विकास भी हुआ है जिसके कारण पर्यटन उद्योग को बढ़ावा मिला है। राज्य के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने अपने भाषण के जरिए समझदारी का परिचय दिया है और अच्छी बात यह है कि यहां के मुसलमान भी अच्छी तरह समझने लगे हैं कि कश्मीर का भविष्य अस्थिर, अराजकताग्रस्त और आर्थिक रूप से संकटग्रस्त पाकिस्तान जैसे देश के साथ नहीं है, बल्कि भारत जैसे लोकतांत्रिक, स्थिर और आर्थिक रूप से मजबूत देश के साथहै। मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला कश्मीरी अवाम की इसी सोच का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

चिंतन-मनन

जो हो रहा है उसके जिम्मेदार हम खुद हैं

हम मनुष्यों की एक सामान्य सी आदत है कि दु?ख की घड़ी में विचलित हो उठते हैं और परिस्थितियों का कसूरवार भगवान को मान लेते हैं। भगवान को कोसते रहते हैं कि हे भगवान हमने आपका क्या बिगाड़ा जो हमें यह दिन देखना पड़ रहा है। गीता में श्री कृष्ण ने कहा है कि जीव बार-बार अपने कर्मों के अनुसार अलग-अलग योनी और शरीर प्राप्त करता है। यह सिलसिला तब तक चलता है जब तक जीवात्मा परमात्मा से साक्षात्कार नहीं कर लेता। इसलिए जो कुछ भी संसार में होता है या व्यक्ति के साथ घटित होता है उसका जिम्मेदार जीव खुद होता है। संसार में कुछ भी अपने आप नहीं होता है। हमें जो कुछ भी प्राप्त होता है वह कर्मों का फल है। इश्वर तो कमल के फूल के समान है जो संसार में होते हुए भी संसार में लिप्त नहीं होता है। ईश्वर न तो किसी को दुःख देता है और न सुख। इस संदर्भ में एक कथा प्रस्तुत है? गौतमी नामक एक वृद्धा ब्राह्मणी थी। जिसका एक मात्र सहारा उसका पुत्र था। ब्राह्मणी अपने पुत्र से अत्यंत स्नेह करती थी। एक दिन एक सर्प ने ब्राह्मणी के पुत्र को डंस लिया। पुत्र की मृत्यु से ब्रह्मणी व्याकुल होकर विलाप करने लगी। पुत्र को डंसने वाले सांप के ऊपर उसे बहुत प्रोध आ रहा था। सर्प को सजा देने के लिए ब्राह्मणी ने एक सपेरे को बुलाया। सपेरे ने सांप को पकड़ कर ब्राह्मणी के सामने लाकर कहा कि इसी सांप ने तुम्हारे पुत्र को डंसा है, इसे मार दो। ब्राह्मणी ने संपरे से कहा कि इसे मारने से मेरा पुत्र जीवित नहीं होगा। सांप को तुम्ही ले जाओ और जो उचित समझो सो करो। सपेरा सांप को जंगल में ले आया। सांप को मारने के लिए सपेरे ने जैसे ही पत्थर उठाया, सांप ने कहा मुझे क्यों मारते हो, मैंने तो वही किया जो काल ने कहा था। सपेरे ने काल को ढूंढा और बोला तुमने सर्प को ब्राह्मणी के बच्चे को डंसने के लिए क्यों कहा। काल ने कहा ब्राह्मणी के पुत्र का कर्म फल यही था। मेरा कोई कसूर नहीं है। सपेरा कर्म के पहुंचा और पूछा तुमने ऐसा बुरा कर्म क्यों किया। कर्म ने कहा मुझ से क्यों पूछते हो, यह तो मरने वाले से पूछो मैं तो जड़ हूं। ....

सर्द मौसम की ठिठुरन में धधकता सियासी गलियारा

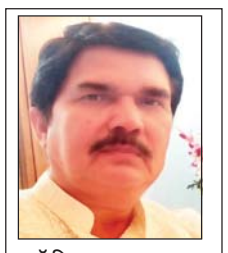

डॉ हिदायत अहमद खान

राजधानी दिल्ली समेत उत्तर भारत में कड़ाके की ठंड के साथ घने कोहरे की चादर ने जहां आम लोगों का जीवन बुरी तरह प्रभावित करके रख दिया है, वहीं सियासी गलियारा नेताओं की जुबानी जंग से गरमाया हुआ है। इस चुनावी बेला में कोई किसी को चोर तो कोई महाचोर कहने से गुरेज नहीं कर रहा है। इस तरह सफेदपोशों को एक-दूसरे के दामन में दाग ही दाग नजर आ रहे हैं, जिन्हें सत्ता के डिटरजेंट से साफ करने की जुगाड़ भिड़ाने में भी कोई पीछे नहीं रहना चाहता है। घने कोहरे के कारण दृश्यता का बेहद कम हो जाना कोई नई बात नहीं है, लेकिन दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर सियासी दृष्यता जो पहले कभी साफ नजर आती थी, फिलहाल भ्रमित करने वाली प्रतीत हो रही है। इसकी मुख्य वजह गठबंधन से इतर सभी अपना-अपना दांव खेलने को आतुर हैं। जो पहले कभी दोस्ती की डींगें हांकते थे वो भी खानदानी दुश्मनों की तरह, एक दूसरे को फूटी आंख नहीं सुहा रहे हैं। ऐसे हालात में मौजूदा आम आदमी पार्टी आगे भी दिल्ली की कुर्सी पर विराजमान रहेगी या फिर कांग्रेस या भाजपा किसका दांव सफल होगा यह देखने वाली बात है। आखिर अगली सरकार किसकी होगी? जीत के दावे तो सभी अपने स्तर पर कर ही रहे हैं। जीतने के माकूल कारण भी बखूबी गिनाए जा रहे हैं, लेकिन जनता-जनार्दन जिसे इसका फैसला करना है वह मूक दर्शक बनी सभी को परखने में लगी हुई है। खास बात यह है कि मुफ्त की रेबड़ियां बांटने में कोई पीछे नजर नहीं आ रहा है। इसलिए काम और लोक-लुभावन वादों से चुनाव जीतने वाला फामूर्ला इस समय लागू होता नहीं दिख रहा है। जहां तक चुनावी तैयारी की बात है तो यहां चुनाव आयोग विधानसभा चुनाव की तिथि घोषित करता उससे पहले ही आम आदमी पार्टी ने अपने प्रत्याशियों की सूची जारी करते हुए बतला दिया था कि उसके आगे किसी और की चलने वाली नहीं है। यह अलग बात है कि दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर शिकंजा कसा हुआ है और वो बहुत ज्यादा दायं-बांय नहीं हो सकते हैं। मौजूदा सीएम आतिशी पर भी चुनाव आचार संहिता को लेकर मामला दर्ज कराया जा चुका है। मतलब साफ है कि तू डाल-डाल तो मैं पात-पात वाली कहावत को चरितार्थ किया जा रहा है। वैसे भी सवाल यह है कि केंद्र में रहते हुए भाजपा आखिर ऐसा कैसे होने दे सकती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार और खासतौर पर भाजपा दिल्ली चुनाव को लेकर खासी गंभीर नजर आ रही है। अतः पिछले चुनावों की ही तरह इस चुनाव में भी भाजपा नेता लगातार साम-दाम, दंड, भेद की नीति को अपनाए हुए हैं और कोशिश में हैं कि किसी भी तरह से इस बार दिल्ली उनके पाले में आ जाए। वैसे भी प्रधानमंत्री मोदी और गृहमंत्री अमित शाह की जोड़ी सत्ता की कमान संभालने के बावजूद हमेशा ही चुनाव मोड में रहते आए हैं। हर कार्य को चुनावी तराजु में तौलने का कार्य बखूबी किया जाता रहा है। यही वजह है कि सरकारी योजनाओं से लेकर आधारशिलाएं रखने और उद्घाटन करने तक को चुनावों को साधने वाला बताया जाता रहा है। यहां यह नहीं भूलना चाहिए कि इस ठिठुरन में भी प्रधानमंत्री मोदी राजधानी से लेकर जम्मू-कश्मीर तक लोगों को लुभाने का कोई मौका हाथ से जाने नहीं दे रहे हैं। यही वजह है कि चुनावी विश्लेषक कहते दिख जाते हैं कि इस बार दिल्ली में कुछ नया होने वाला है। इस बात में दम भी है, क्योंकि कोहरे के बीच दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से मुंबई के लिए पीएम मोदी जहां उड़ान भरते हैं, वहीं भाजपा नेता दिल्ली चुनाव में बेहतर परिणाम के लिए कमर कस गलि-मोहल्ले में निकलते दिखे हैं। इस ठिठुरन भरी सुबह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से मुंबई के लिए उड़ान भरी। मुंबई पहुंचे तो वहां पर नौसेना के तीन प्रमुख युद्धपोत - आईएनएस सूरत, आईएनएस नीलगिरि, और आईएनएस वाघशीर - को राष्ट्र को समर्पित कर मोदी है तो मुमकिन है वाला संदेश भी दे दिया। वैसे यह सच है कि नौसैना को समर्पित युद्धपोत वाकई भारत की रक्षा क्षमताओं को बढ़ाने और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में मील का पत्थर साबित होने जैसा ही काम है। इन सब से हटकर यदि बात कांग्रेस की करें तो वह भी किसी भी स्तर पर अन्य से पीछे नहीं दिख रही है। यही वजह है कि इस सर्द सुबह और कोहरे के बीच कांग्रेस की पूर्व अध्यक्षा सोनिया गांधी और कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे नई दिल्ली में पार्टी के नए मुख्यालय इंदिरा भवन का उद्घाटन करते नजर आ गए हैं। इस खास मौके पर लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी और कांग्रेस महासचिव व वायनाड सांसद प्रियंका गांधी समेत कांग्रेस के कई वरिष्ठ नेता व अनेक नागरिक उपस्थित थे। इससे यह संदेश जाता है कि कांग्रेस इस बार दिल्ली चुनाव में अपने पूरे दम-खम के साथ उतरी है और कुछ बेहतर करने की दृढ़ इच्छा रखती है। पहले कभी कांग्रेस का गढ़ रही दिल्ली अब एक बार फिर कुछ नया करके दिखाने को आतुर दिख रही है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि सरकार बदल जाएगी और रजनीति थम जाएगी, बल्कि चुनाव से लेकर चुनाव बाद तक सियासी गलियारा धधकता रहने वाला है। इसकी मुख्य वजह प्रमुख नेताओं पर जो केस चल रहे हैं और लगातार मामले दर्ज हो रहे हैं उसका दूरगामी परिणाम भी इस चुनाव में असर छोड़ने वाला है। अंततः दिल्ली का मतदाता क्या सोचता है और किसे अपना हितैषी मानता है यह तो उसके मन की बात है। बावजूद इसके आम आदमी पार्टी ने जिस तरह से दिल्ली सरकार को चलाया और लोगों को अपने कार्यों और निर्णयों से जोड़े रखा उससे संदेश तो यही जाता है कि उससे सत्ता छीनना भाजपा और कांग्रेस के लिए टेढ़ी खीर साबित होने वाला है।

प. बंगालः तृणमूल में 'खेला' तो होगा

शंकर जालान

खेला होबे', खेला होबे', यानी खेल होगा, खेल होगा? वाले जिस लोकप्रिय चुनावी नारे के बलबूते तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) ने 2021 (पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव) और 2024 के लोक सभा चुनाव में भाजपा समेत तमाम विरोधी दलों को धूल चटाते हुए चुनावी रण से बाहर का रास्ता दिखाया था, मौजूदा समय में वही 'खेला' टीएमसी के भीतर होते दिख रहा है। बुआ (ममता बनर्जी) और भतीजे (अभिषेक बनर्जी) के बीच इन दिनों जो चल रहा है, उसे देखते हुए लगता है कि जल्द ही टीएमसी में भी कुछ बड़ा 'खेला' होने वाला है।

वैसे कई दफा और कई मुद्दों पर बुआ-भतीजे में मतभेद की खबरें आती रही हैं, लेकिन बीते दिनों अभिषेक के करीबी और विश्वासपात्र माने जाने वाले दो नेताओं (पूर्व सांसद डॉ. शांतनु सेन और अराबुल इस्लाम) को बाहर का रास्ता दिखा कर ममता ने बताने की कोशिश की है कि पार्टी में सर्वेसर्वा केवल वे ही हैं। टीएमसी के कुछ नेता यह जरूर चाहते हैं कि भुआ-भतीजे का विवाद जल्द समाप्त हो जाए लेकिन विपक्ष विशेषकर भाजपा चाहती है कि भुआ-भतीजे के बीच दूरियां जितनी बढेंगी, आगामी विधानसभा चुनाव में जीत उसके उतनी ही करीब होगी। मालूम हो कि 2026 में पश्चिम बंगाल विधानसभा के लिए चुनाव होने हैं। गत लोक सभा चुनाव में राज्य में मिली करारी हार के बाद भाजपा अभी तक सूबे में अपना संगठन मजबूत नहीं कर पाई है। प्रदेश के भाजपा नेता चाहते हैं कि उनका संगठन चाहे मजबूत हो न हो, लेकिन टीएमसी का संगठन जरूर कमजोर हो जाए। सांगठनिक ताकत के तौर पर वाम मोर्चा और कांग्रेस भी नये सिरे से अपनी शुरूआत के पक्ष में हैं। 2011, 2016 और 2021 में जीत यानी हैट्रिक लगाने वाली टीएमसी अपना घर ठीक से नहीं चला पा रही है। ममता पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और टीएमसी की मुखिया हैं, तो अभिषेक पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव और डायमंड हार्बर से सांसद हैं। सभी जानते हैं कि ममता के बूते ही अभिषेक को पहचान मिली, कई दफा सांसद बनने का मौका मिला और पार्टी में महासचिव जैसा महत्त्वपूर्ण पद भी, लेकिन अब अभिषेक की महत्त्वाकांक्षा और पार्टी में दखलअंदाजी बढ़ गई है, जो ममता को रास नहीं आ रहा।

अंदरखाने सूत्रों ने बताया कि इन दिनों भुआ-भतीजे के रिश्ते में पहली वाली मधुरता नहीं है। दोनों के बीच कई बार मतभेद और रार हो चुकी हैं, लेकिन अब लड़ाई सतह पर आती नजर आ रही है। भुआ-भतीजे के मनमुटाव का असर पार्टी की सेहत पर न पड़े, इसे लेकर टीएमसी के वरिष्ठ नेताओं के माथे पर चिंता की लकीरें दिख रही हैं। सूत्रों के मुताबिक टीएमसी दो खेमे में बंट गई है। एक खेमा है ममता बनर्जी का, जिसमें वे नेता शामिल हैं, जो टीएमसी के संघर्ष के दिनों से ममता के साथ हैं। दूसरा खेमा है अभिषेक का जिसमें अधिकतर नेता ऐसे हैं जिन्होंने टीएमसी के एक मुकाम पर पहुंचने के बाद 'जोड़ाफूल' (टीएमसी का चुनाव चिन्ह) थामा था। ऐसे में टीएमसी नयेझपुराने नेताओं में बंटती नजर आ रही है।

टीएमसी में महीनों से विवाद जारी है, ममता बनर्जी और अभिषेक बनर्जी के बीच मतभेदों का कोई अंत नजर नहीं आ रहा है। पहले अभिषेक कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में एक प्रशिक्षु महिला चिकित्सक के कथित रेप और हत्या के मामले में राज्य सरकार के रवैए की आलोचना करने वाले कलाकारों के बहिष्कार के मुद्दे पर पार्टी के कुछ नेताओं से असहमत थे, लेकिन अब ममता ने अपने भतीजे के करीबी माने जाने वाले मंत्रियों को आड़े हाथों लिया है। भुआ-भतीजे के मनमुटाव का असर पार्टी की सेहत और सूबे की राजनीति पर कितना पड़ेगा, यह जानने के लिए इंतजार करना पड़ेगा लेकिन फिलहाल इतना कहा जा सकता है कि भुआ-भतीजे के सुर नहीं मिलने से संगठन के चुनाव में दिक्कतें आ रही हैं।

हाल में भांगड़ में अराबुल इस्लाम और सावकत मोल्लाह के बीच गुटीय संघर्ष की बात सामने आई। दोनों एक-दूसरे को टीएमसी का सदस्य मानने से भी कतरा रहे थे। अंततः अराबुल को निलंबित कर दिया गया। आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में प्रशिक्षु महिला चिकित्सक साथ रेप और हत्या के बाद से स्वास्थ्य व्यवस्था को लेकर लगातार मुखर रहे टीएमसीके पूर्व सांसद डॉ. शांतनु सेन को भी बाहर का रास्ता दिखा दिया गया। शांतनु सेन को राजनीतिक हल्कों में अभिषेक का करीबी माना जाता है। टीएमसी ने उन्हें पार्षद से राज्य सभा सांसद बनाया। अभिषेक की मेहरबानी से चिकित्सकों के संगठन के अखिल भारतीय अध्यक्ष बन गए थे। पार्टी के प्रवक्ता के तौर पर किया। राजनीति के पंडित इस निलंबन के पीछे भी विशेष रणनीति देख रहे हैं। आलोचकों का कहना है कि टीएमसी में निलंबन की बात कब उठती है, यह भी स्पष्ट नहीं है। दिलचस्प बात यह है कि निलंबन की घोषणा उन जयप्रकाश मजूमदार ने की जो कभी भाजपा में थे। अभिषेक के दोनों करीबियों के निलंबन को लेकर सूबे की राजनीति में उथल-पुथल मची है। चर्चा है कि विधानसभा चुनाव से पहले यह ह्यखेला' कहां तक चलेगा और कहां जाकर खत्म होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवम् सम्पादक डा0 सरवर जमाल द्वारा दैनिक जागरण प्रेस, सी झ्र 120 फोकल प्वाइंट एक्सटेंशन जालंधर से छपवाकर कार्यालय प्लाट न0 झ्र 157 हजुरीबाग कालोनी लुधियाना से प्रकाशित किया । समस्त विवादों का विवरण लुधियाना न्यायालय के अधीन ही होगें

फिर से जमेगी अक्षय के साथ इस अभिनेत्री की जोड़ी, प्रियदर्शन की भूत बांग्ला में लगाएंगी तड़का

प्रियदर्शन के निर्देशन में अक्षय कुमार की बहुप्रतीक्षित हॉरर कॉमेडी, भूत बंगला में बॉलीवुड अभिनेत्री की एंट्री कंमर्फ हो चुकी है, जिसकी जानकारी उन्होंने खुद सोशल मीडिया पर एक पोस्ट के जरिए दी है। ड्यून- प्रोफेसी में जबर्दस्त अभिनय के बाद आखिरकार, तब्बू ने खुलासा किया है कि वह आगे क्या करने की योजना बना रही हैं। प्रियदर्शन के निर्देशन में अक्षय कुमार की बहुप्रतीक्षित हॉरर कॉमेडी, भूत बंगला में वह अगली बार नजर आएंगी। इसका खुलासा खुद तब्बू ने अपनी इंस्टाग्राम पोस्ट के जरिए किया। तब्बू ने इंस्टाग्राम पर घोषणा करते हुए एक क्लैपरबोर्ड की तस्वीर शेयर की, जिस पर लिखा था भूत बांग्ला। उनके इंस्टाग्राम पोस्ट के कैप्शन में लिखा था, हम यहां बंद हैं। तब्बू की इस पोस्ट के बाद उनके प्रशंसक बेहद खुश हैं कि भूल भूलैया 2 के बाद अब वह तब्बू को फिल्म भूल बंगला में हॉरर के साथ कॉमेडी का तड़का लगाते देख पाएंगे।

हॉरर-कॉमेडी फिल्म है भूत बंगला

2000 की फिल्म हेरा फेरी में अक्षय और तप्पू साथ काम कर चुके हैं। इस फिल्म का निर्देशन भी प्रियदर्शन ने ही किया था। कुछ समय से ऐसी अफवाहें चल रही थीं कि तब्बू भी इस ड्रामा में शामिल होंगी, लेकिन प्रशंसक आधिकारिक पुष्टि का इंतजार कर रहे थे। आखिरकार, तब्बू की इंस्टाग्राम पोस्ट ने खुलासा कर ही दिया है कि वह भूत बंगला का हिस्सा हैं और इस हॉरर कॉमेडी में वह एक अहम भूमिका निभाने वाली हैं। 2026 में आने वाली फिल्म भूत बांग्ला में अक्षय कुमार और तब्बू के अलावा परेश रावल, वामिका गब्बी, राजपाल यादव और असरानी जैसे कई बेहतरीन कलाकार नजर आ सकते हैं।

वेब सीरीज पिरामिड में एक जर्नलिस्ट का किरदार निभा रही हैं हेली शाह

हेली शाह को इन दिनों वेब सीरीज पिरामिड में देखा जा रहा है। इसमें रोहन मेहरा, हर्षद अरोरा, करण शर्मा, क्रिस्टन बैरेटो भी हैं। हेली ने खास बातचीत की।

सीरीज की कहानी और अपने किरदार के बारे में बताइए?

मेरे किरदार का नाम वृंदा है। वह जर्नलिस्ट है। उसके बहुत सारे सपने हैं। अपने पापा के साथ रहती है। वृंदा ने क्रिप्टो करेंसी यानी डिजिटल मनी में इन्वेस्टमेंट किया होता है। उसे उम्मीद है कि बहुत ज्यादा रिटर्न मिलेगा, जो उसे ऑन एप में दिख भी रहा होता है। लेकिन इसमें कई ट्विस्ट एंड टर्न आते हैं। यह कैसी स्कीम है, कैसे स्कैम होता है, यह शो देखने पर पता चलता है।

रियल लाइफ में किस ऊंचाई पर पहुंचने की ख्वाहिश रखती हैं?

मुझे नहीं लगता है कि मेरे दिमाग में कोई एक सेट लिमिट है। बतौर ह्यूमन ग्राउंडेड रहना चाहती हूं। मैं कुछ न कुछ नई चीजें सीखते रहना चाहती हूं और उसी से आगे भी बढ़ना चाहती हूं। हाइपोथेटिकली अगर बोलना चाहूं, तब नहीं बोल सकती कि एकदम टॉप पर पहुंचना चाहती हूं। लेकिन जर्नी कभी खत्म नहीं होती है। इस जर्नी में बहुत कुछ सीखते और सुधारते हुए आगे बढ़ते हैं। यह आखिर तक चलता रहता है।

रोहन मेहरा के साथ शूटिंग करने का एक्सपीरियंस कैसा रहा?

रोहन के साथ शूट करने में बहुत मजा आया। न सिर्फ रोहन, बल्कि पूरी स्टार कास्ट नीरज, हर्षद, करण आदि के साथ शूटिंग की बहुत फन जर्नी रही। रोहन के साथ ही मैक्सिमम सीन हैं। उनके साथ काम करना बड़ा दिलचस्प रहा। हमारा एक शेड्यूल मनाली में भी था, जो काफी इंटरेस्टिंग था। वहां की लोकेशन मनलुभावन रही। लेकिन मैं जैसे ही मनाली पहुंची, वैसे ही बीमार पड़ गई।

बतौर फीमेल लीड रोल प्ले करने का कितना प्रेशर होता है?

यह सही है कि ओटीटी पर मेल सेंट्रिक शो आते हैं। उनकी वजह से शो चल रहा है, यह भी सही है। क्योंकि ऐसी कई सारी वेब सीरीज हैं, जिसमें मेल कैरेक्टर ही शो को आगे बढ़ाता है और लोगों को पसंद आता है। लेकिन मैं अपने आपको बहुत ग्लैड और खुशनसीब समझती हूं कि कुछ लोग ऐसे शो बनाना चाह रहे हैं, जिसमें फीमेल सेंट्रिक कैरेक्टर हो। मैं ग्लैड हूं कि पिरामिड मिला। उससे भी बड़ी बात यह है कि मेरे किरदार वृंदा के साथ ही सारी चीजें होती हैं। ईमानदारी से कहूं तो यह शो करके बहुत खुश हूं।

इमरजेंसी देखने को उत्साहित सलमान खान

कंगना रनौत ने हाल ही में सलमान खान के साथ अपनी दोस्ती पर बात की और बताया कि बॉलीवुड के भाईजान और उनकी दोस्ती वर्षों पुरानी है। कंगना ने यह खुलासा भी किया कि उन्हें सलमान खान के साथ काम करने के कई मौके मिले, लेकिन दोनों कभी परदे पर साथ काम नहीं कर पाए। कंगना ने कहा, आप सलमान खान को देखें तो उनकी बहुत बड़ी फैन फॉलोइंग है, लोग उन्हें प्यार करते हैं, जो उन्हें प्यार करते हैं वो उनसे प्यार करते रहेंगे, लेकिन जो लोग उन्हें परेशान करने वाले होते हैं, वो जाहिर तौर पर उनसे नफरत करेंगे। कंगना ने बताया कि उन्हें बजरंगी भाईजान और सुल्तान जैसी फिल्में ऑफर की गईं, लेकिन उन्होंने मना कर दिया, कंगना ने कहा कि भले ही उन्होंने सलमान की ऑफर की गई फिल्में ठुकरा दीं, लेकिन एक्टर उनके प्रति हमेशा दयालु बने रहे। कंगना ने आगे कहा, सलमान और मेरी आज भी बात होती है, वे इमरजेंसी देखने के लिए भी उत्साहित हैं। हमारा एक कॉमन फ्रेंड है, उन्होंने उसे भेजा और कहा कि तुम जाकर देखो कि उसने कौन सी फिल्म बनाई है। कंगना के मुताबिक सलमान ने उन्हें फोन भी किया, इस पर कंगना ने कहा, तो तुम्हारे पास खबर है, लेकिन तुमने खुद फिल्म नहीं देखी। बता दें कि इमरजेंसी17 जनवरी को रिलीज हो रही है।

रेसिंग करियर के बीच अजित ने अभिनय और सिनेमा को लेकर दिया बड़ा बयान

साउथ सुपरस्टार अजित ने एक इंटरव्यू में अभिनेता ने अपने अभिनय और रेसिंग करियर के बारे में बात की। उन्होंने आगे कहा कि रेसिंग सीजन शुरू होने तक वह कोई भी फिल्म साइन नहीं करेंगे और अक्तूबर से मार्च के बीच अभिनय करने की योजना बना रहे हैं।

फिल्मों में अभिनय कब करेंगे अजित

अजित ने इस बारे में बात की कि क्या उनके फिल्म अनुबंध उन्हें फिल्मों की शूटिंग के साथ-साथ रेसिंग करने की अनुमति देते हैं? अजित ने कहा, नहीं। मुझे यह बताने की जरूरत नहीं है कि क्या करना है, क्या नहीं करना है। फिलहाल, मैं मोटरस्पोर्ट्स को आगे बढ़ाने की योजना बना रहा हूं, न केवल एक ड्राइवर के रूप में बल्कि एक टीम के मालिक के रूप में भी। जब तक रेसिंग सीजन चालू नहीं हो जाता, मैं फिल्में साइन नहीं करूंगा और संभवतः अक्तूबर से मार्च के बीच, रेसिंग सीजन शुरू होने से पहले मैं शायद फिल्में करूंगा। मैं फिल्मों में अभिनय करूंगा, ताकि कोई भी चिंतित न हो और जब मैं रेस करूं तो मैं पूरी तरह से तैयार रहूं।

अजित का रेसिंग करियर

अपनी बातचीत के दौरान उन्होंने रेसिंग में आने के बारे में भी बताया। अजित ने कहा, मैं 18 साल का था जब मैंने भारत में मोटरसाइकिल रेसिंग शुरू की। और फिर मैं काम में व्यस्त हो गया, लेकिन मैंने 20-21 साल की उम्र तक मोटरसाइकिल रेसिंग की और फिर 1993 तक इसे जारी रखा। फिर मैं फिल्म उद्योग में आ गया और मैं 2002 में 32 साल का था, जब मैंने मोटर रेसिंग में वापस आने का फैसला किया, लेकिन मोटरसाइकिल में नहीं, चार पहिया वाहनों में।

रेसिंग के मालिक भी हैं अजित

अजीत कुमार रेसिंग के मालिक भी हैं। उनकी टीम पोर्श 992 क्लास में अपने साथियों मैथ्यू डेट्री, फैबियन डफीक्स और कैमरन मैकलियोड के साथ भाग लेगी। वहीं, बात करें अभिनेता की फिल्मों के बारे में तो वह दो बहुप्रतीक्षित फिल्मों को लेकर भी सुर्खियों में बने हुए हैं, पहली विदामुयार्ची और दूसरी गुड बैड अग्ली। विदामुयार्ची पहले पोंगल पर रिलीज होने वाली थी, लेकिन इसे टाल दिया गया है और अब इसकी आधिकारिक नई रिलीज डेट का इंतजार है।

इस दिन रिलीज होगी गुड बैड अग्ली

वहीं, बात करें अजित की दूसरी फिल्म गुड बैड अग्ली के बारे में तो यह फिल्म 10 अप्रैल 2025 को सिनेमाघरों में दस्तक देगी। गुड बैड अग्ली बॉक्स ऑफिस पर पैन इंडिया स्टार प्रभास की द राजा साब के साथ क्लैश होगी। फिल्म में अजित के साथ तृषा, प्रसन्ना और सुनील भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं।

भारत में म्यूजिक ऑफ द स्फीयर्स टूर शुरू करेंगी जसलीन रॉयल

भारत में काउंटडाउन शुरू हो गया है। पॉप सेंसेशन और चार्ट-टॉपर, जसलीन रॉयल कोल्डप्ले के म्यूजिक ऑफ द स्फीयर्स टूर की शुरुआत करने के लिए तैयार हैं। केवल एक हफ्ते से कम का समय बचा है, उसके बाद देशभर में हर तरफ कोल्डप्ले के कॉन्सर्ट का जादू देखने को मिलेगा। जसलीन ने अपने हालिया पोस्ट से फैंस का उत्साह भी दोगुना कर दिया है।

कॉन्सर्ट के लिए तैयार हैं जसलीन

हाल ही में, सोशल मीडिया पर कॉन्सर्ट के लिए नोट्स के साथ अपनी तैयारी की एक तस्वीर साझा करते हुए उन्होंने कहा, 'लाइफ लेटली। सिंग, स्लीप, कडल, रिपीट। वन वीक टू गो फॉर द कोल्डप्ले- म्यूजिक ऑफ द स्फीयर्स इंडिया टूर।' जसलीन भारत की लोकप्रिय पॉप आइकन हैं। आने वाले कोल्डप्ले कॉन्सर्ट में जसलीन रॉयल का लेटेस्ट ट्रैक साहिबा है। जसलीन के हालिया पोस्ट पर लोगों ने कमेंट कर पूछा कि अब उनका अगला गाना कब आएगा। एक यूजर ने लिखा, आपको लाइव देखने का बेसब्री से इंतजार है। दूसरे यूजर ने लिखा, मेरा दिन आपके गानों से ही शुरू होता है। सच में आपको देखने का बेसब्री से इंतजार है। सिंगिंग के साथ यह काम भी करेंगी जसलीन जसलीन कॉन्सर्ट में गाने के साथ-साथ उसे परफॉर्म, कम्पोज, सॉन्ग राइटिंग और प्रोड्यूसिंग भी करेंगी। यही नहीं, यह दावा भी किया जा रहा है कि जसलीन इस कॉन्सर्ट में एकमात्र भारतीय गायिका होंगी। जसलीन अपने फैंस को आने वाले कॉन्सर्ट को लेकर अपनी तैयारी के बारे में पूरी तरह से अपडेट करती हैं। वह इस कॉन्सर्ट को लेकर वह बहुत उत्साहित हैं।

बता दें कि भारत में कोल्डप्ले कॉन्सर्ट को लेकर लोगों में अलग ही क्रेज देखने को मिल रहा है। फैंस की दीवानगी का ऐसा आलम है कि कॉन्सर्ट की टिकटें चंद मिनटों में बिक गईं। फैंस के क्रेज को देखते हुए बुक माय शो ने लोगों के लिए बोनस टिकटों की घोषणा की है।

मुझे कभी भी अपनी बात रखने का नुकसान नहीं उठाना पड़ा

आज से तकरीबन दो दशक पहले गुल पनाग ने मिस इंडिया बनने के बाद फिल्म धूप से अपने फिल्मी जीवन का आगाज किया था। मगर बीते सालों में उन्होंने काफी चुनिंदा काम किया। चुनिंदा काम करने का कारण वे बताती हैं, मुझे लगता है कि जो भूमिकाएं आपको आकर्षित करें, आपको उन भूमिकाओं से जुड़ना चाहिए। मुझे खुशी है कि मैंने जितना भी काम किया है, वह पसंद किया गया और उस काम ने मुझे खुशी दी। मेरी ग्लैमरस इमेज भी काफी हावी रही मगर ओटीटी में मेरे चरित्रों ने उस अवधारणा को भी तोड़ा और मैंने ही नहीं, बल्कि दर्शकों ने भी मुझे नए तरीके से खोजा।

फिल्में हों या वेब सीरीज, गुल पनाग ने हमेशा से महिलावादी किरदारों को जीवंत किया है। वे निजी जिंदगी में एक एनजीओ भी चलाती हैं जो जेंडर इक्वैलिटी, शिक्षा, समानता जैसे मुद्दों पर काम करता है। महिला मुद्दे पर वे अपनी राय कहती हैं, लड़कियों को लेकर मुझे जो बात सबसे ज्यादा परेशान करती है, वह ये कि वे स्वयं को सीमाओं के अंदर बांधकर खुद के दायरे बना लेती हैं। देखिए महिलाओं के लिए सामाजिक दायरे तो होते ही हैं, फिर उसके भीतर वे अपनी तरक्की और सोच का दायरा संकुचित क्यों कर लेती हैं? उनकी यही सोच उनकी उन्नति में रुकावट बन जाती है। सदियों से हम लड़कियों की एक खास तरह से कंडीशनिंग की गई हैं कि ऐसे रहो, ये मत करो, वह मत करो और इन हदों में हम खुद के लिए और हद बनाकर बंध जाते हैं। हम लड़कियों को अपने दायरे कभी सेट नहीं करने चाहिए। उल्टा समाज के दायरों को तोड़ कर आगे बढ़ना होगा।

मुझे स्टैंड लेने का खामियाजा कभी नहीं भुगतना पड़ा

गुल पनाग अपनी बेबाकी के लिए भी खूब जानी जाती हैं। वे सामाजिक या राजनैतिक मुद्दों पर अपनी राय रखने से हिचकिचाती नहीं हैं। क्या उन्हें इसका कभी खामियाजा भुगतना पड़ा है? इस सवाल पर वे कहती हैं, मुझे लगता है कि ये संभव है कि आप अपने विचार रखें और लोगों को आह करने की कोशिश न करें। मैं राजनीति की बात नहीं कर रही। मैं सामाजिक ध्रुवीकरण की बात कर रही हूं। कः बार लोग हटकर दिखने या बनने के लिए अपना पक्ष र खते हैं। बुनियादी तौर पर मेरा मानना है कि आप बिना आ गमक और कठोर बने अपनी बात कह सकते हैं। मैं ने जब भी अपना पक्ष रखा है, उन सामने वाले के नजरिए को समझते हुए रखा है। मुझे कभी भी नैतिक या सिद्धांतव दी मुद्दों पर अपना पक्ष रखने का खामियाजा नहीं भुगत ा पड़ा। मैंने कई लोगों से सुना है कि अपनी बात रखने र उनके साथ उत्पीड़न हुआ, मगर मुझे कभी भी अप ी बात रखने का नुकसान नहीं उठाना पड़ा। सभी जानते है कि मैं किस बारे में बात कर रही हूं। मैं इस वक्त उस द पर बात नहीं करना चाहती, मगर इतना जरूर कहूं कि जब भी अपना मत रखती हूं, पब्लिसिटी या लोगों को तंग करने के लिए नहीं रखती।

वर्तमान में जीने में यकीन करती हूं

मिस इंडिया का खिताब जीत चुकी गुल ऐक्ट्रेस होने के ाथ-साथ कमर्शल पायलट, बाइक राइडर भी हैं, राज- ाति में रुचि रखती हैं और महिला मुद्दों को लेकर एनज ओ भी चलाती हैं। असल जिंदगी में वे मां भी हैं। उ से सबसे ज्यादा मजा किस काम में आता है? इस स ल के जवाब में वे कहती हैं, मैं भले कई चीजों में माहिर हूं, मगर हमेशा उस पल में जीना पसंद करती हूं, जो उ वक्त चल रहा होता है। आपको भले ये फलसफा लगेगा, मगर ये सच है कि इससे पहले जो हुआ, वह बीत चुका है और जो होने वाला है, वह हमें पता नहीं, मगर ये जो चल हा है, ये मेरी जिंदगी का अहम मोमेंट है। जब मैं बाइक रा ड करती हूं, तो उसके मजे लेती हूं। जब घर पर होती हूं, तो वह पल मेरे लिए बहुत जरूरी होता है। मैं जब, जिस पल लोगों के साथ रहती हूं, उन्हें वक्त देती हूं, उन्हें प्रोत्साहित करती हूं और उस वक्त को अपने साथ-साथ दूसरों के लिए भी यादगार बनाती हूं।

मेरा किरदार मनोरमा सिक्स फीट अंडर से प्रभावित है

गुल पनाग ने ओटीटी पर द फैमिली मैन, रंगबाज फिर से, गुड बैड गर्ल, पाताल लोक सीजन वन और टू में काम किया है। अपनी नई वेब सीरीज में भूमिका के बारे में वह कहती हैं, सीजन वन में मेरी भूमिका अगर लोगो को पसंद आई, तो इसका श्रेय इसके क्रिएटर सुदीप शर्मा और अविनाश को जाता है। इस किरदार को लिखा काफी खूबसूरती से है। छोटा किरदार होने के बावजूद यह अपनी छाप छोड़ने में कामयाब रहा। एक अभिनेत्री के रूप में मेरी खोज यही रहती है कि मैं ऐसे चरित्र निभाऊं, जो या तो मैंने पहले अनुभव नहीं किए हैं या फिर जो मैंने अपने आस-पास देखे नहीं हैं। रेनू जैसा किरदार मैंने कभी अदा नहीं किया था। गुल पनाग के रूप में मेरी जो छवि है, मेरा चरित्र उससे काफी अलग है। इस सीरीज को देखने वाले कई लोगों ने मेरी भूमिका देखा कर कहा, ओह, वह तुम थी! तो मेरी भूमिका ने उन्हें इस कदर चौंकाया। इससे थोड़ा मिलता-जुलता किरदार मैंने निभाया था, मनोरमा सिक्स फीट अंडर में। सुदीप उसी चरित्र से प्रभावित थे। मेरे लिए पाताल लोक मेरी जिंदगी और माइंड की वह जगह है, जहां आप दोबारा नहीं जाना चाहते। भगवान और शैतान दोनों ही हमारे भीतर होता है, मगर हम शैतान को नहीं देखना चाहते।

राष्ट्रपति ने गुकेश, हरमनप्रीत, मनु और प्रवीण को खेल रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने शुक्रवार को विश्व शतरंज चैंपियनशिप विजेता ग्रैंडमास्टर डी गुकेश और पेरिस ओलंपिक में दो पदक जीतने वाली महिला निशानेबाज मनु भाकर सहित चार खिलाड़ियों को खेल रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

राष्ट्रपति भवन में आयोजित समारोह में श्रीमती मुर्मु ने विभिन्न स्पर्धाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को मेजर ध्यानचंद खेल रत्न, अर्जुन और द्रोणाचार्य पुरस्कारों से सम्मानित किया। सबसे पहले शतरंज में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले भारतीय ग्रैंडमास्टर डी गुकेश को मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया। इसके बाद ओलिंपिक में दो पदक जीतने वाली महिला निशानेबाज मनु भाकर, हॉकी टीम के कप्तान हरमनप्रीत सिंह और पैरा एथलीट प्रवीण कुमार को मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया।

इसके अलावा राष्ट्रपति ने अन्नू रानी को एथलेटिक्स, स्वीटी को मुक्केबाजी, वंतिका अग्रवाल को शतरंज, सलीमा टेटे, अभिषेक संजय, जरमनप्रीत सिंह और सुखजीत सिंह को हॉकी में, राकेश कुमार को (पैरा-तीरंदाजी), प्रीति पाल (पैरा एथलेटिक्स)अजित सिंह, सचिन सरजेराव खिलारी (पैरा एथलेटिक्स) और धर्मबीर (पैरा एथलेटिक्स), प्रणव सूरमा (पैरा एथलेटिक्स), एच होकातो सेमा (पैरा एथलेटिक्स), सिमरन (पैरा एथलेटिक्स), नवदीप (पैरा एथलेटिक्स),नितेश कुमार (पैरा बैडमिंटन) को, थुलासिमाती मुरुगेसन (पैरा बैडमिंटन), नित्या श्री सुमाथी सिवान (पैरा बैडमिंटन), मनीषा रामदास (पैरा बैडमिंटन), कपिल परमार (पैरा जूडो) और मोना अग्रवाल (पैरा निशानेबाजी) को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिये अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया।

सुभाषा राणा (पैरा निशानेबाजी नियमित वर्ग), दीपाली देशपांडे (निशानेबाजी नियमित वर्ग), संदीप सांगवान (हॉकी नियमित वर्ग),एस मुरलीधरन (बैडमिंटन लाइफ्टाइम वर्ग) और अरमांडो एगनेलो कोलाको (फुटबॉल (लाइफ्टाइम वर्ग) के द्रोणाचार्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सुचा सिंह (एथलेटिक्स) और मुरलीकांत राजाराम पेटकर (पैरा तैराक) को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिये अर्जुन पुरस्कार (लाइफ्टाइम) पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

चंडीगढ़ यूनिवर्सिटी (विजेता), लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी (प्रथम उपविजेता), अमृतसर गुरु नानक देव यूनिवर्सिटी (द्वितीय उपविजेता) को मौलाना अबुल कलाम आजाद ट्रॉफी से सम्मानित किया गया। फिजिकल एजुकेशन फाउंडेशन ऑफ इंडिया को राष्ट्रीय खेल प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

पेशेवर मुक्केबाज बनने के बाद भी ओलंपिक को सबसे अहम मानने हैं निशांत

-लॉस एंजिलिस ओलंपिक में मुक्केबाजी शामिल रही तो उसमें खेलना चाहेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। मुक्केबाज निशांत देव ने कहा है कि पेशेवर सर्किट में उतरने के बाद भी ओलंपिक में खेलना अब भी उनके लिए बेहद अहम है। ऐसे में अगर लॉस एंजिलिस ओलंपिक में अगर मुक्केबाजी को शामिल किया जाता है तो वह अवश्य ही उसमें भाग लेंगे। निशांत पेरिस ओलंपिक के क्वार्टर फाइनल में मिली करीबी हार और ओलंपिक में मुक्केबाजी के भविष्य को लेकर अनिश्चितता के कारण पेशेवर मुक्केबाज बने हैं। इस मुक्केबाज ने एडी हर्न की 'मैचरूम बॉक्सिंग से करार किया है।

उनकी पहली पेशेवर भिड़ंत 25 जनवरी को लॉस एंजिलिस में होगी। निशांत आजकल लॉस एंजिलिस में पेशेवर मुक्केबाज रोनाल्ड सिम्स से प्रशिक्षण ले रहे हैं। उन्होंने लॉस एंजिलिस से कहा, 'मैं ओलंपिक में खेलने का अपना सपना पूरा करना चाहता था जो मैं कर चुका हूं। लेकिन अब मैं पेशेवर मुक्केबाजी में खेलने के अपने दूसरे सपने को पूरा करना चाहता हूं। देव को अब भी पेरिस ओलंपिक में मिली करीबी हार सालती है जिसमें वह मेक्सिको के मार्को वर्डे से विवादास्पद क्वार्टरफाइनल हार गये थे। उन्होंने कहा, 'मैं टूट गया था। इतने बड़े मंच पर इस तरह का झटका चुनौतीपूर्ण था। ओलंपिक में मुक्केबाजी के भविष्य की अनिश्चितता इस निराशा को और भी बढ़ा रही है। उन्होंने कहा, 'अभी तक मुक्केबाजी की ओलंपिक के लिए पुष्टि नहीं की गई है। मैं यह जानने के लिए तीन साल तक इंतजार नहीं करना चाहता कि यह ओलंपिक में शामिल नहीं है। इसलिए इस समय का उपयोग मेरे पेशेवर मुक्केबाजी के सपने को पूरा करने में किया जा सकता है। निशांत का कहना है कि वह पेशेवर मुक्केबाजी में सभी मुख्य बेल्ट जीतकर विश्व चैम्पियन बनना चाहता हूं।

भारत की नजरें अंडर 19 महिला टी20 विश्व कप बरकरार रखने पर

कुआलालंपुर (एजेंसी)। विश्व स्तर पर अपना दबदबा बरकरार रखने की कोशिश में जुटे भारत के अगली पीढ़ी के क्रिकेटर शनिवार से यहां शुरू हो रहे आईसीसी अंडर 19 महिला टी20 विश्व कप में उतरेंगे तो उनका लक्ष्य खिताब बरकरार रखने का होगा। भारत को ग्रुप ए में वेस्टइंडीज, श्रीलंका और मेजबान मलेशिया के साथ रखा गया है। भारतीय टीम रविवार को वेस्टइंडीज के खिलाफ पहला मैच खेलेगी। भारत ने 2023 में दक्षिण अफ्रीका में हुआ पहला विश्व कप जीता था जिसमें फाइनल में इंग्लैंड को सात विकेट से मात दी थी। पहले दिन पिछली बार सेमीफाइनल खेलने वाली ऑस्ट्रेलिया का सामना ग्रुप डी में स्कॉटलैंड से होगा जबकि 2023 उपविजेता इंग्लैंड की टक्कर आयरलैंड से होगी। रविवार को होने वाले अन्य मैचों में समोआ का सामना ग्रुप सी में नाइजीरिया से, ग्रुप डी में बांग्लादेश का सामना नेपाल से, ग्रुप बी में पाकिस्तान का सामना अमेरिका से और ग्रुप सी में न्यूजीलैंड का सामना दक्षिण अफ्रीका से होगा। टूर्नामेंट में 16 टीमों को चार चार के चार समूहों में बांटा गया है और हर ग्रुप से शीर्ष तीन टीमें सुपर सिक्स में पहुंचेंगी। वहां से शीर्ष दो टीमें सेमीफाइनल में जाएंगी और फाइनल दो फरवरी को होगा। भारत ने 2023 में शेफाली वर्मा की कप्तानी में दक्षिण अफ्रीका में यह टूर्नामेंट जीता था। उस टीम में टिटास साधू, श्वेता सेहरावत, पार्श्वी चोपड़ा और अर्चना देवी जैसे खिलाड़ी थे जो सीनियर स्तर पर खेल रहे हैं। इस साल भारत में होने वाले वनडे विश्व कप को देखते हुए निकी प्रसाद की कप्तानी वाली टीम इस मौके को भुनाने की पूरी कोशिश करेगी। प्रमुख खिलाड़ियों में हैदराबाद की तृषा जी शामिल है जिन्होंने शीर्षक्रम में शानदार प्रदर्शन करके पिछले महीने अंडर 19 विश्व कप में भारत की जीत की नींव रखी थी। उनके अलावा टीम में स्पिनर पारूनिका सिसोदिया, सोनम यादव और आयुषी शुक्ला भी हैं।

भारतीय टीम : निकी प्रसाद (कप्तान), सानिका छाल्के, जी तृषा, कमलिनी जी, भाविका अहिरे, ईश्वरी अवासरे, मिथिला विनोद, जोशिता वीजे, सोनम यादव, पारूनिका सिसोदिया, केसरी दृति, आयुषी शुक्ला, अनंदिता किशोर, एम डी शबनम, वैष्णवी एस,

अनुशासन भंग करने पर खिलाड़ियों पर लग सकता है प्रतिबंध : बीसीसीआई

मुम्बई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने टीम में 'अनुशासन, एकता और सकारात्मक माहौल' को बढ़ावा देने के लिए एक अभूतपूर्व क़दम उठाते हुए 10 बिंदुओं वाली नियामावली जारी करते हुए कहा कि इसका पालन नहीं वाले खिलाड़ियों का अनुबंध समाप्त कर उनके इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) और घरेलू क्रिकेट खेलने पर रोक लगा दी जाएगी।

'पोलिसी डॉक्यूमेंट फॉर टीम इंडिया' नामक यह नियमावली गुरुवार को खिलाड़ियों को भेज दी गई, इसे पिछले सप्ताह हुई समीक्षा बैठक की सलाह पर शामिल हैं। नियमावली में कहा गया है कि दौरे, मैच और अभ्यास के लिए खिलाड़ी अलग से यात्रा नहीं कर सकेंगे। बैठक में कहा गया कि कुछ खिलाड़ी मैच या अभ्यास के लिए टीम बस की जगह अपनी अलग से वाहन से यात्रा करते हैं, जिससे टीम का अनुशासन भंग होता है। इसके अलावा यह भी कहा गया कि कुछ खिलाड़ी अभ्यास सत्रों में ग्रुप के साथ समय नहीं बिता रहे हैं, जिससे टीम का माहौल खराब होता है। बीसीसीआई ने कहा है कि अगर किसी खिलाड़ी को किन्हीं विशेष परिस्थितियों में मैच या अभ्यास के लिए अलग से यात्रा करनी है तो उन्हें मुख्य कोच या मुख्य चयनकर्ता से पहले से अनुमति लेनी होगी। इसके अलावा उन्हें किसी अभ्यास सत्र में पूरे समय तक रहना होगा, भले ही उनका अभ्यास पहले समाप्त हो जाये। विदेश दौरों पर भी खिलाड़ियों को परिवार के साथ अलग से यात्रा करने की बजाय टीम के साथ ही यात्रा करने का सुझाव दिया गया है, ताकि टीम में अनुशासन और संगठन को बल मिले। इसमें बताया गया है कि अगर कोई सीरीज या दौरा तय समय से पहले समाप्त होने पर भी खिलाड़ी अपने मन से अलग से यात्रा न करें, इससे टीम की एकता प्रभावित होती है। बीसीसीआई ने कहा है कि 45 दिनों या उससे अधिक के दौरे पर खिलाड़ियों के परिवार के सदस्य - साथी और बच्चे (18 वर्ष तक) 14 दिनों से अधिक उनके साथ नहीं रह सकते हैं।

खिलाड़ी का परिवार केवल एक बार ही उसके साथ आ सकते हैं और उनकी यात्रा की व्यवस्था कोच, कप्तान और बीसीसीआई के संचालन महाप्रबंधक की मंजूरी के बाद संबंधित खिलाड़ी को करनी होगी। बीसीसीआई आगंतुकों की अवधि के लिए खिलाड़ी के साथ साझा आवास का खर्च उठाएगा। जारी दस्तावेज में कहा, 'अन्य सभी खर्च खिलाड़ी द्वारा वहन किए जाएंगे।' बीसीसीआई ने यह भी कहा कि परिवार के लिए पूर्व-अनुमोदित अवधि के बाहर अतिरिक्त लागत खिलाड़ी द्वारा वहन किया जायेगा।

गौरतलब है कि बीसीसीआई ने भारत के खराब प्रदर्शन का आकलन करने के लिए समीक्षा बैठक बुलाई थी, जिसके शुरुआत न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू टेस्ट श्रृंखला में हार से हुई, जहां भारत 3-0 से हारा था। इसके बाद ऑस्ट्रेलिया में बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में 3-1 से हार हुई। समीक्षा बैठक में मुख्य कोच गौतम गंभीर, टेस्ट और वनडे कप्तान रोहित शर्मा, चयन समिति के अध्यक्ष अजीत आगरकर और बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया मौजूद थे।

अक्षर को मिल सकती है दिल्ली कैपिटल्स की कप्तानी

मुम्बई । आईपीएल 2025 में दिल्ली कैपिटल्स की कप्तानी अक्षर पटेल को मिलना तय माना जा रहा है। आईपीएल 21 मार्च से शुरू होगा। गत वर्ष इसके लिए हुई नीलामी में दिल्ली कैपिटल्स फ्रेंचाइजी ने केएल राहुल को 14 करोड़ रुपये में खरीदा था। जिससे माना जा रहा था कि राहुल को कप्तानी मिल सकती है क्योंकि वह लखनऊ सुपर जायंट्स में भी कप्तान रहे थे। वहीं अब कहा जा रहा है कि दिल्ली की कप्तानी अक्षर पटेल को मिल सकती है। इसका कारण है कि अक्षर टीम के साथ काफी समय से हैं और कई बार ऑलराउंडर की भूमिका निभा चुके हैं। दिल्ली अक्षर को आईपीएल 2025 के लिए 16.50 करोड़ रुपये वेतन देगी। अक्षर टीम के सबसे महंगे खिलाड़ी भी हैं। दिल्ली कैपिटल्स ने लखनऊ के राहुल को खरीदा जबकि लखनऊ ने दिल्ली के ही ऋषभ पंत को सबसे बड़ी रकम देकर खरीदा था। ऋषभ भी दिल्ली के कप्तान थे। अक्षर ने आईपीएल में अभी तक कुल 150 मैच खेले हैं। उन्होंने इस दौरान 1653 रन बनाए हैं। अक्षर ने गेंदबाजी में भी अच्छा प्रदर्शन करते हुए 123 विकेट लिए हैं।

रोहित के बचाव में उतरे युवराज

नई दिल्ली । पूर्व ऑलराउंडर युवराज सिंह ने खराब फार्म के कारण आलोचनाओं का सामना कर रहे भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रोहित शर्मा का बचाव किया है। युवराज ने कहा कि भले ही रोहित न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टीम को जीत नहीं दिला पाये हैं पर उनकी नेतृत्व क्षमता पर सवाल नहीं उठाये जा सकते हैं। युवराज ने एक कार्यक्रम के दौरान कहा, रोहित की कप्तानी में ही टीम टी20 विश्व कप जीती और एकदिवसीय विश्वकप के फाइनल तक पहुंची। रोहित की कप्तानी में ही मुंबई इंडियंस ने 5 आईपीएल जीते। उन्होंने किसी और को अवसर देने के लिए सिडनी टेस्ट से बाहर रहने का फैसला किया था। पूर्व में किसी कप्तान ने ऐसा किया है क्या? मैं देखता हूं कि उन्होंने पिछले 3 से 5 सालों में क्या किया है, एक या दो टूर्नामेंट से उन्हें खारिज नहीं किया जा सकता। मेरे लिए, घरेलू सीरीज हार ज्यादा निराशाजनक थी क्योंकि भारत का न्यूजीलैंड से 3-0 से हारना ज्यादा कठिन था। रोहित की कप्तानी में ही टीम ने 2023 में हुए विश्व कप के दौरान लगातार 10 मैच जीते थे। उनके नेतृत्व में ही टीम ने आईसीसी विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप 2023 के फाइनल में भी प्रवेश किया था पर उसे वहां ऑस्ट्रेलिया के हाथों हार का सामना करना पड़ा। युवराज ने ये भी कहा कि मुख्य कोच गौतम गंभीर को और समय दिया जाना चाहिये क्योंकि वह कुछ समय पहले ही टीम के कोच बने हैं। अभी उन्हें पूरी तरह से प्रक्रिया में आने दिया जाये।

इंग्लैंड के खिलाफ टी20 सीरीज से पहले ईडन गार्डन्स में 3 दिवसीय शिविर लगाएगा भारत

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम इंग्लैंड के खिलाफ टी20 सीरीज से पहले 3 दिवसीय शिविर लगा रही है। सूत्रों के हवाले से एक रिपोर्ट में कहा कि टीम 18 जनवरी को कोलकाता में एकत्रित होगी और ईडन गार्डन्स स्टेडियम में सीरीज का पहला मैच खेलने से पहले 3 दिन अभ्यास करेगी। सूर्यकुमार यादव की अगुआई वाली भारतीय टीम इस प्रारूप में अपना अच्छा प्रदर्शन जारी रखने की उम्मीद करेगी। यादव की अगुआई में भारत ने श्रीलंका, बांग्लादेश और दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ सीरीज जीती हैं जिनमें से कुछ मैचों में कई रिकॉर्ड टूटे हैं।

संजू सैमसन को सलामी बल्लेबाज के रूप में शामिल करना टीम प्रबंधन के लिए एक महत्वपूर्ण खोज रही है जिससे उन्हें इस स्थान पर अपनी ताकत बढ़ाने में मदद मिली है। 5 मैचों की सीरीज में अभिषेक शर्मा से लेकर नितीश कुमार रेड्डी तक भारतीय खिलाड़ियों

की नई पीढ़ी मौजूद है। भारत से घरेलू परिस्थितियों में इंग्लैंड के लिए मुश्किलें खड़ी करने की उम्मीद है। ऑस्ट्रेलिया के बेहद व्यस्त दौरे के बाद जसप्रीत बुमराह को इस सीरीज से आराम दिया गया था, जहां वह सीरीज के अंतिम टेस्ट मैच के बीच में चोटिल हो गए थे। चोटिल तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी ने एक साल से अधिक समय के बाद टीम में वापसी की है, जबकि संजू सैमसन और ध्रुव जुरेल को ऋषभ पंत से आगे रखा गया है। इस बीच क्रिकेट एसोसिएशन ऑफ बंगाल (सीएबी) ने दिग्गज महिला क्रिकेटर झूलन

स्वामी को विशेष श्रद्धांजलि देने की योजना नाई है जिसके तहत प्रतिष्ठित स्टेडियम में नके सम्मान में एक स्टैंड का नाम रखा ाएगा। यह श्रद्धांजलि मैच ब्रेक के दौरान दी ाएगी। मैच के दिन से पहले सीएबी जूनियर हिला बंगाल क्रिकेट टीम को भी सम्मानित रेगा जिसमें पूर्व भारतीय कप्तान मिताली राज ख्य अतिथि होंगी।

इंग्लैंड के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए भारत की टीम

सूर्यकुमार यादव (कप्तान), संजू मसन (विकेटकीपर), अभिषेक शर्मा, लक वर्मा, हार्दिक पंड्या, रिंकू सिंह, नितीश ुमार रेड्डी, अक्षर पटेल (उपकप्तान), हर्षित णा, अर्शदीप सिंह, मोहम्मद शमी, वरुण क्रवर्ती, रवि बिश्नोई, वाशिंगटन सुंदर, ध्रुव ुरेल (विकेटकीपर)।

बोपन्ना और झांग की जोड़ी ऑस्ट्रेलियाई ओपन मिश्रित युगल के दूसरे दौर में पहुंची

मेलबर्न । भारत के रोहन बोपन्ना और चीन की शुआइ झांग की जोड़ी ऑस्ट्रेलियाई ओपन मिश्रित युगल में इवान डोडिग और क्रिस्टिना म्लादेनोविच को 6.4, 6.4 से हराकर दूसरे दौर में पहुंच गई। पुरूष युगल के पहले ही दौर से बाहर होने के बाद दुनिया के पूर्व नंबर एक युगल खिलाड़ी बोपन्ना ने एक घंटे 12 मिनट तक चले इस मुकाबले में शानदार प्रदर्शन किया। अब बोपन्ना और झांग का सामना अमेरिका के टेलर टाउनसेंड और मोनेगास्क के हुगो निस और ऑस्ट्रेलिया के वाइल्ड कार्ड धारक मेडिसन इंगलिस और जैसन कुबर के बीच होने वाले मैच के विजेता से होगा। बोपन्ना 2023 में सानिया मिर्जा के साथ यहां फाइनल में पहुंचे थे। बोपन्ना 2024 ऑस्ट्रेलियाई ओपन में मैथ्यू एबडेन के साथ खिताबी जीत के बाद युगल रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंचे थे। वह 43 वर्ष की उम्र में खिताब जीतने के साथ यह कारनामा करने वाले सबसे उम्रदराज खिलाड़ी भी बने थे।

भारतीय टीम का बल्लेबाजी कोच बनना चाहते हैं पीटरसन

लंदन (एजेंसी)। इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर केविन पीटरसन ने भारतीय क्रिकेट टीम का बल्लेबाजी कोच बनना चाहते हैं। ऑस्ट्रेलिया दौर के बाद भारतीय बोर्ड को टीम इंडिया के लिए एक बल्लेबाजी कोच की जरूरत महसूस हुई है। इसी को देखते हुए पीटरसन ने टीम इंडिया के बल्लेबाजी कोच बनने में रुचि जताई है। भारतीय टीम पिछले साल टी20 विश्व कप जीतने के बाद ही बल्लेबाजी कोच के

बिना खेल रही है। विश्वकप तक मुख्य कोच रहे राहुल द्रविड़ के समय विक्रम राठौर मुख्य कोच थे। वहीं द्रविड़ के बाद जगह गौतम गंभीर मुख्य कोच बने। गंभीर के साथ अभिक नायर टीम इंडिया के सहायक कोच बने, जबकि द अफ्रीका के पूर्व तेज गेंदबाज मौर्न मोर्कल गेंदबाजी कोच के रुप में जुड़े। टी दिलीप टीम इंडिया के फील्डिंग कोच बने हे, जबकि रेयान टेन डेशखाटे को टीम इंडिया का दूसरा असिस्टेंट कोच बनाया गया। गंभीर के कार्यकाल में भारतीय टीम की बल्लेबाजी राब रही है। सोशल मीडिया पर टीम इंडिया नए बल्लेबाज कोच की तलाश को लेकर ई गई एक पोस्ट के जवाब में पीटरसन ने खा कि, भारतीय टीम का प्रदर्शन पिछले छ समय में बल्लेबाजी में यशस्वी जायसवाल आधारित रहा है और अन्य बल्लेबाज भावित नहीं कर पाये हैं। ऐसे में टीम को ल्लेबाजी कोच की जरुरत है जो बल्लेबाजों को लाह देकर उनकी गलतियां सुधार सके।

2026 विश्व कप जीतना चाहते हैं हरमनप्रीत

नई दिल्ली । भारत की सीनियर पुरुष हॉकी टीम के कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने कहा है कि वह अपने करियर में आज तक विश्व कप में पदक नहीं जीत पाये हैं और इस कमी को 2026 में होने वाले टूर्नामेंट में पूरा करना चाहते हैं। भारत ने विश्व कप में अभी तक तीन पदक जीते हैं। उसने 1971 (बार्सिलोना) में कांस्य, 1973 में रजत (एम्स्टेलवीन, नीदरलैंड) और 1975 (कुआलालंपुर) में स्वर्ण पदक जीता था। इसके बाद से ही भारतीय टीम विश्वकप में पदक नहीं जीत पायी है। हरमनप्रीत तोक्यो और पेरिस ओलंपिक में कांस्य पदक जीतने वाली भारतीय टीम के सदस्य थे। पेरिस ओलंपिक खेलों में उनकी कप्तानी में टीम ने कांस्य पदक जीता था। वह 2016 में लखनऊ में जूनियर विश्व कप जीतने वाली भारतीय टीम के सदस्य भी थे। हरमनप्रीत ने कहा कि हमारा लक्ष्य हमेशा ओलंपिक में स्वर्ण पदक और विश्व कप में पदक जीतना होगा। हमने पेरिस में जिस तरह से प्रदर्शन किया उससे पता चलता है कि हम किसी भी शीर्ष टीम का सामना करके जीत हासिल कर सकते हैं। हमने लंबे समय से विश्व कप में पदक नहीं जीता है और मैं अपने करियर में इसे जीतना चाहता हूं। हरमनप्रीत ने कहा कि उम्मीद है कि हम अपने करियर के दौरान उन सुनहरे दिनों को फिर से हासिल कर सकेंगे।

भारत के लिए खेलने का सपना अभी भी जिंदा है : करुण नायर

नई दिल्ली (एजेंसी)। स्पोर्ट्स डेस्क = लंबे समय तक मैदान से दूर रहने और करीब तीन साल पहले सोशल मीडिया पर एक उदास पोस्ट के बाद करुण नायर ने क्रिकेट में सनसनीखेज वापसी की है। उन्होंने मौजूदा विजय हजारे ट्रॉफी में पांच शतक बनाए और अब वह आठ साल बाद भारतीय जर्सी पहनने को लेकर आशावादी हैं। करुण ने विदर्भ के लिए 756 की शानदार औसत से 756 रन बनाए हैं, अब रनों के भूखे दिखते हैं, और वे उस निराश खिलाड़ी से बिल्कुल अलग हैं, जिसमें उन्होंने लिखा था, 'प्रिय क्रिकेट, कृपया मुझे एक और मौका दें।'

क्या वह अवसर उनके पास तब आएगा जब चयनकर्ता इंग्लैंड के खिलाफ घरेलू एकदिवसीय मैचों और आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी के लिए भारत की एकदिवसीय टीमों की घोषणा करेंगे? केवल समय ही बताएगा, लेकिन उनके पास 'सपने' देखने के अच्छे कारण हैं। करुण ने कहा, 'मेरा सपना हमेशा देश के लिए खेलना होता है। इसलिए, हां, सपना अभी भी जिंदा है। यही कारण है कि हम यह खेल खेलते हैं, अपने देश के लिए खेलना। इसलिए, मेरा एकमात्र लक्ष्य देश के लिए खेलना था।'

अपने करियर में कई बार बड़ी असफलताओं और करीबी हार का सामना करने वाले करुण बहुत आगे के बारे में नहीं सोचना चाहते। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि यह मेरी तीसरी वापसी है (हंसते हुए)। और मुझे वही करना जारी रखना होगा जो मैं इस समय कर रहा हूं। मैं जितने भी मैच खेलता हूं, उसमें जब भी संभव हो रन बनाता रहूंगा। मैं यही कर सकता हूं। बाकी सब मेरे नियंत्रण में नहीं है। लेकिन जब तक यह (चयन) नहीं हो जाता, यह सिर्फ एक सपना है। यह अभी भी नहीं हुआ है। लेकिन फिर से, जैसा कि मैंने कहा, मैं एक बार में एक पारी पर ध्यान केंद्रित करना चाहूंगा।' अपने रन बनाने के तरीके पर वापस आने के लिए उन्होंने अतीत से अलग क्या किया है? उन्होंने कहा, 'मैंने कुछ भी अलग नहीं किया है। कोई रहस्य नहीं है। मुझे लगता है कि यह सिर्फ सालों की कड़ी मेहनत और लगन का नतीजा है, आप जानते हैं, यह सब एक साथ मिलकर हुआ है। शायद आप कह सकते हैं, हर दिन को एक नए दिन की तरह लेना और यह सुनिश्चित करना कि मैं अपनी हर पारी का सम्मान करूं।' ऐसे भी दिन थे जब 33 वर्षीय खिलाड़ी अपने क्रिकेट भविष्य को लेकर आशंकित था, जब घरेलू मैचों और आईपीएल में रन पूरी तरह से खत्म हो गए थे। उन्होंने कहा, 'अगर मैं कहूं कि मुझे डर नहीं था तो मैं झूठ बोलूंगा। मुझे लगता है कि किसी के मन में भी ऐसी भावनाएं आ सकती हैं। लेकिन मुझे कभी नहीं लगा कि मेरा करियर खत्म हो जाएगा। मुझे बस यह सोचना था कि यह कहां जा रहा है? मैं क्या कर रहा हूं? यह कैसे हुआ? आपको उस दौर से बाहर आने और यह समझने में थोड़ा समय लगता है कि क्या हो रहा है और फिर आपको क्या करना चाहिए। इसलिए, मैंने खुद से कहा कि मुझे फिर से शून्य से शुरुआत करने की जरूरत है। और खुद को कुछ साल दें और देखें कि यह कहां जाता है। और फिर मैं तय कर सकता हूं कि मुझे क्या करना है। तो, यही मेरी सोच थी।'

इस कठिन दौर ने उन्हें खुद के और अपने खेल के बारे में ज़्यादा जागरूक बना दिया। उन्होंने कहा, 'यह एक कठिन परिस्थिति थी। भावनात्मक रूप से, मानसिक रूप से। लेकिन हां, इसने मुझे एक व्यक्ति के रूप में और मेरे क्रिकेट के बारे में बहुत कुछ सिखाया। इसलिए मैं उन सीखों के लिए वास्तव में आभारी हूं। इसके बिना, मुझे नहीं लगता कि मैं इस समय इस स्थिति में होता।'

संक्षिप्त समाचार

ट्रंप ने फिल्म स्टार मेल गिब्सन और सिलवेस्टर स्टेलोन को सौंपी बड़ी जिम्मेदारी

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने गुरुवार को फिल्म अभिनेता जॉन वॉइट, मेल गिब्सन और सिलवेस्टर स्टेलोन को हॉलीवुड के लिए अपना विशेष राजदूत नियुक्त किया है। ट्रंप ने सोशल मीडिया पर साझा एक पोस्ट में इसकी जानकारी दी। ट्रंप ने ये भी लिखा कि हॉलीवुड मुश्किल समय से गुजर रहा है और ये तीनों उसका स्वर्ण युग वापस लेकर आएंगे। ट्रंप ने सोशल मीडिया मंच ट्रुथ पर साझा पोस्ट में लिखा कि ये मेरे लिए सम्मान की बात है कि जॉन वॉइट, मेल गिब्सन और सिलेवस्टर स्टेलोन, मुश्किलों से जूझ रहे, लेकिन महान हॉलीवुड के विशेष राजदूत होंगे। वे मेरे विशेष प्रतिनिधि के तौर पर सेवाएं देंगे और हॉलीवुड को फिर से मजबूत और बेहतर बनाएंगे। ट्रंप ने ये भी लिखा कि हॉलीवुड बीते कई वर्षों में अपना काफी व्यापार खो चुका है। ट्रंप ने लिखा कि ये तीनों लोग बहुत प्रतिभाशाली हैं और मेरे आंख और कान बनकर रहेंगे। जो भी वे सुझाव देंगे, उस पर अमल किया जाएगा। ये फिर से हॉलीवुड के स्वर्ण युग को वापस लाएंगे। इस महीने की शुरुआत में ट्रंप ने अपनी व्हाइट हाउस की टीम में भी कुछ अहम नियुक्तियों का एलान किया था इनमें स्टैनले ई वुडवार्ड को राष्ट्रपति का सहयोगी और विशेष अभियोजक, रॉबर्ट ग्रैबियल जूनियर को राष्ट्रपति के नीति मामलों का सलाहकार और निकोलस एफ लूना को रणनीतिक स्टाफ का डिप्टी चीफ नियुक्त करने का एलान किया था। साथ ही विलियम ब्यू हैरिसन को डिप्टी चीफ ऑफ स्टाफ ऑपरेशन नियुक्त किया था। डोनाल्ड ट्रंप आगामी 20 जनवरी को अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति के तौर पर शपथ लेंगे। बीते नवंबर में राष्ट्रपति चुनाव में ट्रंप ने डेमोक्रेट उम्मीदवार कमला हैरिस को हराकर चुनाव में जोरदार जीत हासिल की थी।

बांग्लादेश में ह्यूमन मेटापन्यूमो वायरस से पहली मौत

ढाका, एजेंसी। ह्यूमन मेटापन्यूमोवायरस के दुनियाभर से मामले सामने आ रहे है। बांग्लादेश में भी इस वायरस से एक महिला की मौत की खबर सामने आई है। महिला पहले से ही कई तरह की स्वास्थ्य जटिलताओं से जूझ रही थी। ह्यूमन मेटापन्यूमोवायरस से मरने वाली महिला संजीदा अख्तर का रविवार से अस्पताल में इलाज चल रहा था, मगर बुधवार को महिला ने दम तोड़ दिया। अस्पताल के सीनियर कंसल्टेंट अरिफुल बशर ने गुरुवार एक बयान जारी कर कहा कि महिला पहले से ही मोटापे, किडनी की समस्या और फेफड़ों संबंधी बीमारियों से पीड़ित थी। बता दें कि बांग्लादेश में एचएमपीवी का पहला मामला सामने आने के कुछ दिनों बाद महिला की मौत हुई है। महिला की रिपोर्ट पॉजिटिव आई थी। महामारी विज्ञान रोग नियंत्रण और अनुसंधान संस्थान (आईईडीसीआर) में वायरोलॉजी के प्रमुख अहमद नौशेर आलम ने कहा कि महिला का निमोनिया के एक प्रकार क्लेबसिएला न्यूमोनिया के लिए भी परीक्षण किया गया था जो पॉजिटिव आया। उन्होंने बताया कि मरीज ने विदेश यात्रा नहीं की थी। आईईडीसीआर की निदेशक तहमीना शिरीन ने पहले कहा था कि एचएमपीवी का पहली बार बांग्लादेश में 2017 में पता चला था। तब से, वायरस की पहचान लगभग हर साल सर्दियों में की जाती रही है। अमेरिकी रोग नियंत्रण और रोकथाम केंद्रों के अनुसार, 2001 में खोजा गया एचएमपीवी रेस्पिरेटरी सिंसिटियल वायरस न्यूमोविरिडे का वेरिएंट है।

दबाव डालने से चीन की प्रगति नहीं रुकेगी

बीजिंग, एजेंसी। चीनी वाणिज्य मंत्रालय के प्रवक्ता ने हाल में चीन से संबंधित अमेरिका के कई व्यापारिक प्रतिबंधों के बारे में बयान जारी किया। प्रवक्ता ने कहा कि हाल में बाइडन सरकार ने अपने शेष कार्यकाल में चीन पर कई व्यापारिक प्रतिबंध जारी किए और तथाकथित राष्ट्रीय सुरक्षा के बहाने चीन को सेमीकंडक्टर के निर्यात पर नियंत्रण बढ़ाया। इसके साथ बाइडन सरकार ने अमेरिका में चीनी कनेक्टेड कार के सॉफ्टवेयर, हार्डवेयर व वाहन के उपयोग पर प्रतिबंध लगाया और चीन समेत कुछ देशों के यूएवी व्यवस्था के खिलाफ सूचना, संचार प्रौद्योगिकी और सेवा सुरक्षा की समीक्षा शुरू की। कई चीनी कंपनियों पर प्रतिबंध लगाया गया।

सिंगापुर विवि में इस्राइल-हमास युद्ध को लेकर हुए प्रदर्शन की जांच शुरू, छात्रों के खिलाफ केस

सिंगापुर सिटी, एजेंसी। सिंगापुर के राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में सोमवार को इस्राइल-हमास युद्ध को लेकर हुए विरोध प्रदर्शन का मामला जोर पकड़ रहा है। विवि में येरुशलम के हिब्रू विवि के साथ एक शोध गठबंधन का छात्रों ने विरोध किया। विवि परिसर में हुए विरोध प्रदर्शन पर सिंगापुर ने छात्रों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। वहीं सिंगापुर सरकार ने एक बार फिर फलस्तीनियों की मदद का एलान किया है।

एक मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक विवि में क्रिएट रिसर्च बिल्डिंग के सामने छात्रों ने 100 जोड़ी जूते और सफेद कफन रखकर विरोध किया। छात्रों ने इस्राइल हमास युद्ध में जान गंवाने वाले फलस्तीन छात्रों के प्रति शोक व्यक्त किया। स्टूडेंट्स फॉर फलस्तीन सिंगापुर के नेतृत्व में इस हुए प्रदर्शन में छात्रों ने सिंगापुर से इस्राइल

के साथ शैक्षिणिक, आर्थिक और राजनीतिक संबंध समाप्त करने की मांग की। विरोध प्रदर्शन करने वाले छात्रों ने बताया कि उन्होंने क्रिएट रिसर्च बिल्डिंग को इसलिए चुना क्योंकि इसमें येरुशलम के हिब्रू विश्वविद्यालय के साथ अनुसंधान गठबंधन है। यह गठबंधन गाजा में नरसंहार का मुखर और वित्तीय रूप से समर्थन करता है। छात्रों ने सिंगापुर के विश्वविद्यालयों से इस्राइली विवि के साथ सहयोग समाप्त करने का आह्वान किया। इसके अलावा छात्र संगठन ने विवि से इस्राइली सेना से जुड़ी कंपनियों के साथ सभी वित्तीय निवेशों से अलग होने तथा छात्र कार्यकर्ताओं पर पुलिस निगरानी और धमकी बंद करने का भी आग्रह किया। बिना अनुमति सभा करने के नियम का पालन नहीं हुआः पुलिस विरोध प्रदर्शन करने पर पुलिस ने छात्रों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर ली है। पुलिस ने कहा कि सिंगापुर में सार्वजनिक सभाएं सार्वजनिक व्यवस्था अधिनियम 2009 के तहत होती हैं। यहां पुलिस की अनुमति के बिना सार्वजनिक सभा का आयोजन करना या उसमें भाग लेना अपराध माना जाता है। पुलिस ऐसी सभाओं को अनुमति नहीं देगी जो दूसरे देशों या विदेशी संस्थाओं के राजनीतिक कारणों की वकालत करती हों या जिनमें भावनाओं को भड़काने और सार्वजनिक व्यवस्था को नुकसान पहुंचाने की क्षमता हो। विवि के प्रवक्ता ने कहा कि यह हमारे कैंपस की संपत्ति पर एक अनाधिकृत कृत्य है और रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। डॉलर से अधिक की मानवीय सहायता दी है। सिंगापुर के विदेश मंत्री विवियन बालाकृष्णन ने गुरुवार को कहा कि विदेश मामलों के दूसरे मंत्री मोहम्मद मलिकी ओस्मान एक चैरिटी संगठन को चेक प्रदान करने के लिए जॉर्डन का दौरा करेंगे।

हिंसक झड़प में एक सैनिक समेत 16 लोगों की मौत

जुबा, एजेंसी। नागेरो काउंटी में दक्षिण सूडान पीपुल्स डिफेंस फोर्सेज (एसएसपीडीएफ) और सूडान पीपुल्स लिबरेशन आर्मी-इन-ओपपोजिशन (एसपीएलए-आईओ) के बीच झड़पों में एक सैनिक सहित 16 लोगों की मौत हो गई। समाचार एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, नागेरो काउंटी के कमिश्नर हेनरी बंगाडा असाया ने कहा कि हिंसा के कारण 79,000 से अधिक लोग विस्थापित हो गए हैं। बंगाडा ने गुरुवार को सिन्हुआ को फोन पर बताया, बुधवार शाम को भी लड़ाई जारी थी। मैंने देखा कि भारी सैन्य हथियार उस जगह जा रहे थे, जहां लड़ाई शुरू हुई थी। उन्होंने बताया कि लड़ाई पश्चिमी बहर अल गजल राज्य के बाजिया तक फैल गई है। एसएसपीडीएफ के प्रवक्ता लुल रुई कोआंग ने कहा कि हिंसक झड़प तब शुरू हुई, जब एसपीएलए-आईओ बलों ने कुबरी-बू ब्रिज पर एक अवैध चौकी को हटाने से इनकार कर दिया।

कोआंग ने कहा, शुरू में हमें लगा कि सड़क अवरोध हटाने का विरोध एक अधिकारी कर रहा है और उसकी इस हरकत में एसपीएलए-आईओ के कुछ तत्व शामिल थे लेकिन बाद में हम पर कुब्री-बू पुल पर हमला किया गया। हमने उन्हें खदेड़ दिया, लेकिन वे फिर आ गए। कोआंग के अनुसार, एसपीएलए-आईओ बलों ने मंगलवार शाम को एसएसपीडीएफ के कब्जे वाले क्षेत्र में प्रवेश किया और घात लगाकर हमला किया, जिसके कारण एक सैनिक की मौत हो गई और तीन अन्य घायल हो गए। एसएसपीडीएफ बलों को कुब्री-बू में दो और जमोई में एक तीसरे हमले का सामना करना पड़ा। हालांकि, नागेरो में एसपीएलए-आईओ सेक्टर कमांडर अली सोलोमन साइमन ने एसएसपीडीएफ को छावनी स्थल पर एसपीएलए-आईओ बलों पर हमला करके संघर्ष शुरू करने के लिए दोषी ठहराया।

अमेरिकी बच्चों ने एज़ यू विश गीत गाकर दर्शकों को आश्चर्यचकित किया

बीजिंग, एजेंसी। चीनी विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता क्वो च्याखुन ने एक नियमित प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की। एक रिपोर्टर ने पूछा कि हाल ही में, पेइचिंग के स्वर्ग मंदिर में अमेरिकी बच्चों के गायक मंडली वन वॉयस द्वारा चीनी गीत एज़ यू विश गाए जाने का एक वीडियो सोशल मीडिया पर बहुत लोकप्रिय हुआ, जिसे दस लाख से अधिक लाइक मिले और नेटिज़ेंस ने कहा कि उन्होंने वास्तव में अच्छा गाया। इस पर प्रवक्ता की क्या टिप्पणी है

इस संबंध में क्वो च्याखुन ने कहा कि इस वीडियो को व्यापक रूप से प्रसारित किया गया है और अच्छी प्रतिक्रिया मिली है, जो एक बार फिर दिखाता है कि चीन और अमेरिका के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान को मजबूत करना लोकप्रिय है और जनता की राय के अनुरूप है। नवंबर 2023 में, चीनी राष्ट्रपति शी चिनफिंग ने सैन फ्रांसिस्को में घोषणा की कि अगले पांच वर्षों में 50,000 अमेरिकी युवाओं को आदान-प्रदान और अध्ययन के लिए चीन आने के लिए आमंत्रित किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि इस पहल से प्रेरित होकर, 2024 में कुल 16,000 से अधिक अमेरिकी युवा आदान-प्रदान और अध्ययन के लिए चीन आए हैं। उन्होंने चीन में नए दोस्त बनाए, नई भाषा सीखी, चीनी संस्कृति का अनुभव किया और आधुनिक चीन को महसूस किया। देशों के बीच आदान-प्रदान की ताकत उनके लोगों के बीच मैत्री में निहित है।

बेटे के पास ओपनएआई के खिलाफ दस्तावेज थे, उसे मार डाला

सुचिर बालाजी की मौत पर मां ने खोला राज

पूर्णिमा राव ने अमेरिकी में टकर कार्लसन को एक इंटरव्यू दिया

मेरे बेटे के पास ओपनएआई के खिलाफ सबूत थे।

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के सैन फ्रांसिस्को में भारतीय-अमेरिकी और ओपनएआई व्हिसलब्लोअर सुचिर बालाजी की मौत की गुत्थी सुलझ ही नहीं रही। अब उनकी मां पूर्णिमा राव ने टकर कार्लसन को एक इंटरव्यू दिया है, जिसमें उन्होंने अपने बेटे की मौत और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की दुनिया में अपारदर्शिता और गोपनीयता को लेकर गंभीर आरोप लगाए हैं।

पूर्णिमा राव ने कहा कि चै .जीपीटी के निर्माताओं ने ओपनएआई में कुछ छुपाने के लिए मेरे बेटे को मार डा ा है जो वे चाहते हैं कि किसी को पता न चले।

क्या सुचिर बालाजी ने कं आत्महत्या

इंटरव्यू में पूर्णिमा राव ने भी कहा, मेडिकल चीफ के परिक्षव के सैन

फ्रांसिस्को कार्यालय ने घोषणा की थी कि उनके बेटे की मृत्यु आत्महत्या से हुई है। हालांकि, जब उन्होंने उनसे पूछा कि क्या उन्हें लगता है कि वह खुद को मार सकते हैं और क्या वह हाल ही में उदास थे।

पूर्णिमा राव ने बताया, मेरे बेटे ने मरने से एक दिन पहले अपना जन्मदिन मनाया था। हमें इस बारे में और क्या बताने की जरूरत है कि वह डिप्रेशन में थे। उन्होंने कहा कि उन्हें अपने जन्मदिन का गिफ्ट भी अपने पिता से उसी दिन मिला था, जिसके एक दिन बाद उन्हें मृत पाया गया। पूर्णिमा राव ने ओपनएआई के खिलाफ गंभीर आरोप लगाए, राव ने रिकॉर्ड पर कहा कि मेरे बेटे के पास ओपनएआई के खिलाफ दस्तावेज थे। उन्होंने उस पर हमला किया और उसे मार डाला उनकी मृत्यु के बाद वो दस्तावेज गायब थे।

पूर्णिमा राव ने चैटजीपीटी निर्माता पर जांच और संभावित गवाहों को दबाने का आरोप लगाते हुए कहा, हर कोई दबा हुआ है, कोई भी सामने आकर सच बताने के लिए तैयार नहीं है। यहां तक कि वकीलों को भी यह कहने के लिए मजबूर किया गया है कि यह एक आत्महत्या है।

एलन मस्क ने अपने एक्स हैंडल पर टकर कार्लसन के साथ सुचिर बालाजी की मां के इंटरव्यू को साझा किया और इसे बेहद चिंताजनक बताया।

ओपनएआई की आलोचना करते हुए सुचिर बालाजी की मां ने अधिकारियों पर आरोप लगाते हुए कहा, मौत का कारण निर्धारित करने और मुझे यह बताने में कि यह एक आत्महत्या थी, उन्हें (अधिकारियों को) 14 मिनट से अधिक का समय लगा।

पाकिस्तान में आर्मी चीफ से मिले पीटीआई चेयरमैन

समझौते के दावे पर इमरान खान बोले- नवाज शरीफ नहीं हूं, सरकार से डील नहीं करूंगा

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान में इमरान खान की पार्टी पीटीआई के चीफ गौहर अली खान ने माना है कि उन्होंने सेना प्रमुख असीम मुनीर से मुलाकात की है। पीटीआई के नेता लगातार इस बात से इनकार कर रहे थे। दरअसल, इमरान खान ने गुरुवार को खुलासा कर दिया कि गौहर और जनरल मुनीर की मुलाकात हुई है। उन्होंने कहा कि पीटीआई लंबे समय से दूसरे पक्ष को बातचीत की मेज पर लाने की कोशिश कर रही थी। इसके बाद गौहर ने भी माना कि सेना प्रमुख से उनकी मुलाकात हुई।

इससे पहले जिओ न्यूज ने सूत्रों के हवाले से बताया था कि पीटीआई चीफ को जनरल मुनीर से मिलने के लिए सोमवार को हेलिकॉप्टर से पेशावर ले जाया गया था। जनरल मुनीर पहले से पेशावर में मौजूद थे। इमरान खान ने समझौते को लेकर सोशल मीडिया पर कहा कि वे नवाज शरीफ नहीं हैं कि जेल से बाहर आने के लिए सरकारों से डील करेंगे। इमरान खान ने पार्टी कार्यकर्ताओं से 8 फरवरी को ब्लैक डे मनाने को कहा है। उन्होंने इसके लिए अभी से तैयारियां शुरू कर देने को कहा है।

पाकिस्तान में 8 फरवरी 2004 को चुनाव हुए थे। इस चुनाव से पहले इमरान खान की पार्टी से 'बैट' चुनाव चिन्ह छीन लिया गया था।

गौहर ने अदियाला जेल कोर्ट रूम में पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि उन्होंने जनरल मुनीर के सामने पार्टी की सभी चिंताएं और मांगे रखी हैं। इस दौरान उनके साथ खैबर पख्तूनख्वा के मुख्यमंत्री अली अमीन गंडापुर भी थे। यह तीसरा मौका था जब पीटीआई के अधिकारी और सरकार के बीच बातचीत हुई। इसमें पीटीआई ने मुनीर के सामने लिखित मांगे रखीं। रिपोर्ट के मुताबिक जल्द ही पीटीआई के अधिकारी सरकार के और अहम नेताओं से मुलाकात करेंगे।

पीटीआई की 2 अहम मांगे 1. 9 मई 2023 और 24 नवंबर 2024 से जुड़ी घटनाओं की जांच के लिए सुप्रीम कोर्ट 2 अलग-अलग एजेंसी का गठन करे। 2. पीटीआई से जुड़े सभी राजनीतिक कैदियों क जमानत मिले, सजा कम हो। पाकिस्तान के पूर्व पीएम इमरान खान को 9 मई को इस्लामा ाद हाई कोर्ट के बाहर से गिरफ्तार किया गय था। इससे बौखलाए उनके समर्थकों ने उत त मचा दिया। उन्होंने पीएम आवास के साथ साथ आर्मी हेडक्वाटर, सेना के कई अफसरों के घर पर हमला बोल दिया। वहां जमकर तो फोड़ की, वाहनों को आग के हवाले कर दि ा। इसमें हजारों लोगों को गिरफ्तार किया या था। 24 नवंबर 2024 को इमरान ख न की रिहाई के लिए इमरान खान के स र्थकों ने राजधानी इस्लामाबाद में प्रदर्शन किया था। सरकार ने इसे सख्ती से इसे दबा दिया था।

लॉन्चिंग के कुछ देर बाद ही स्पेसएक्स का अंतरिक्षयान तबाह, मस्क बोले- मनोरंजन की गारंटी है

वॉशिंगटन, एजेंसी। एलन मस्क की कंपनी स्पेसएक्स को झटका लगा है। दरअसल स्पेसएक्स ने गुरुवार सुबह अपने स्टारशिप रॉकेट को लॉन्च किया था, लेकिन लॉन्चिंग के कुछ देर बाद ही अंतरिक्षयान का स्पेसएक्स से संपर्क टूट गया और तबाह होने के बाद अंतरिक्षयान का मलबा हवा में फैल गया। एलन मस्क ने इसका वीडियो सोशल मीडिया पर साझा किया और लिखा कि सफलता अनिश्चित है, लेकिन मनोरंजन की गारंटी है।

एलन मस्क की कंपनी ने कहा कि टेक्सास के बोका चिका से उड़ान भरने के कुछ देर बाद ही अंतरिक्ष यान के छह इंजन एक-एक करके बंद हो गए। उड़ान के केवल 8 1/2 मिनट बाद ही अंतरिक्षयान का संपर्क टूट गया। यह घटना तब हुई, जब रॉकेट के सुपर हैवी बूस्टर ने अंतरिक्षयान से अलग होना शुरू किया था। यह स्टारशिप रॉकेट की सातवीं परीक्षण उड़ान थी। स्पेसएक्स के मिशन कंट्रोल के कम्युनिकेशन मैनेजर का कहना है कि स्टारशिप से संचार टूटने की वजह ऊपरी चरण में हुई तकनीकी खामी थी और कुछ मिनट बाद ही अंतरिक्षयान पूरी तरह से नष्ट हो गया और उसका मलबा आकाश में बिखर गया। स्पेसएक्स के सीईओ एलन मस्क ने एक वीडियो सोशल मीडिया पर पोस्ट किया। जिसमें अंतरिक्षयान के मलबे के टुकड़े आसमान में बिखरे दिखाई दे रहे हैं। इस वीडियो के साथ मस्क ने लिखा कि सफलता अनिश्चित है, लेकिन मनोरंजन की गारंटी है। अंतरिक्षयान को टेक्सास में मैक्सिको की खाड़ी से उड़ान भरी थी और अंतरिक्षयान के साथ 10 डमी उपग्रह भेजे गए थे। अंतरिक्षयान को अपग्रेड किए जाने के बाद यह स्टारशिप रॉकेट की पहली उड़ान थी। हालांकि रॉकेट तबाह होने से कुछ मिनट पहले दुनिया ने एक अदभुत नजारा देखा, जब बूस्टर ने सफलतापूर्वक जमीन पर लैंडिंग की और जिस तरह से लॉन्च पैड के बड़े मैकेनिकल आर्म्स ने बूस्टर को पकड़ा, वह अपने आप में बेहद खास था। हालांकि कुछ देर बाद ही यह खुशी निराशा में बदल गई, जब स्टारशिप रॉकेट तबाह हो गया। 400 फीट (123 मीटर) लंबा स्टारशिप स्पेस्क्राफ्ट दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे ताकतवर रॉकेट था। जब रॉकेट से संपर्क टूटा, उस वक्त वह 146 किलोमीटर की ऊंचाई पर मौजूद था और 13,245 मील प्रतिघंटे की रफ्तार से उड़ान भर रहा था।

हमास से जंग रोकने के खिलाफ इजराइल के रक्षा मंत्री, नेतन्याहू सरकार से समर्थन वापसी की धमकी दी

तेल अवीव/दोहा, एजेंसी। इजराइल के राष्ट्रीय सुरक्षा मंत्री और दक्षिणपंथी नेता बेन-ग्विर इतामार ने हमास के साथ सीजफायर डील का विरोध किया है। गुरुवार शाम बेन-ग्विर ने डील को मंजूरी देने पर सरकार से समर्थन वापस लेने की धमकी दी। इजराइल टाइम्स के मुताबिक ग्विर ने हमास के साथ समझौते को बड़ी लापरवाही कहा है। उन्होंने कहा कि उनकी ओत्जमा येहुदित पार्टी नेतन्याहू की लिकुड पार्टी से गठबंधन तोड़ देगी। साथ ही दोबारा सरकार में शामिल होने के लिए गाजा में फिर से युद्ध शुरू करने की शर्त भी रखी है।

इजराइल और हमास ने सीजफायर डील पर साइन कर दिए हैं। इजराइल के प्रधानमंत्री कार्यालय ने इसकी पुष्टि की है। डील को लेकर आज सिक्योरिटी कैबिनेट की मीटिंग होगी। सरकार शनिवार को इसे मंजूरी देगी। इसके बाद 19 जनवरी से सीजफायर लागू होगा।

डील मंजूरी को लेकर कल नहीं हो पाई मीटिंग: इससे पहले गुरुवार को डील को मंजूरी देने के लिए कैबिनेट की मीटिंग होनी थी। लेकिन हमास की मांगों को लेकर प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने मीटिंग कर रद्द कर दी थी। नेतन्याहू ने आरोप लगाया था कि हमास आखिरी समय में समझौते की शर्तों से मुकर रहा है।

इजराइल टाइम्स के मुताबिक, हमास ने फिलिस्तीनी कैदियों की पहचान से जुड़ा मुद्दा उठाया था, जिसे बाद में मध्यस्थों की मदद से हल कर

लिया गया। बुधवार को कतर के प्रधानमंत्री ने डील के फाइनल होने पुष्टि हुई थी। ये डील 3 फेज में पूरी होगी। पहले फेज में इजराइल के 33 बंधकों को रिहा किया जाएगा। बदले में इजराइल भी 250 फिलिस्तीनी कैदियों को रिहा करेगा। इजराइली सेना भी गाजा से पीछे हटेगी।

कैसे ल ागू होगी डील: डील के मुताबिक स जफायर का पहला फेज 42 दिन ा होगा। पहले फेज में हमास 33 इजराइली बंधकों को रिहा करेगा। बद ने में इजराइल भी हमास के 250 कै दियों को रिहा करेगा। साथ ही इजराइल सेना गाजा की सीमा से 700 मीटर पीछे लौटेगी। सीजफायर के लिए पिछले कई हफ्तों से कतर की राजधानी दोहा में बातचीत चल रही थी। इस बातचीत में मिस्र और अमेरिका भी शामिल थे। अल जजीरा की रिपोर्ट के मुताबिक कतर प्रधानमंत्री थानी ने हमास और इजराइल के प्रतिनिधियों से बुधवार को मुलाकात की, जिसके बाद ये डील पूरी हुई। बंधकों की पहली फेज की रिहाई के 15 दिन बाद हमास बाकी बंधकों को रिहा करेगा। इस बीच दोनों पक्ष स्थायी सीजफायर पर बात करेंगे।

बाइडेन और ट्रम्प में क्रेडिट वॉर: अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन और नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने बुधवार को सीजफायर का क्रेडिट लेने का दावा किया। व्हाइट हाउस ने इस डील में ट्रम्प के प्रतिनिधि को भी शामिल किया था। ट्रम्प ने सोशल मीडिया पर पोस्ट करते हुए कहा कि ये ऐतिहासिक समझौता, राष्ट्रपति चुनाव में हमारी जीत की वजह से हो पाया। ट्रम्प ने कहा कि ये डील मेरे प्रशासन की शांति स्थापित करने और अमेरिका व उसके सहयोगियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के प्रयास का सबूत है। सीजफायर के लिए हमारे कूटनीतिक प्रयास कभी रुके नहीं। यह समझौता हमास पर बढ़ते दबाव, क्षेत्रीय समीकरणों में बदलाव और लेबनान में सीजफायर के बाद ही संभव हो सका। यह अमेरिका की कूटनीति का नतीजा है। डोनाल्ड ट्रम्प ने अपने शपथग्रहण से पहले हमास को सीजफायर करने का अल्टीमेटम दिया था।

कतर और अमेरिका की मध्यस्थता में डील: इस समझौते के लिए कतर की राजधानी दोहा में मिस्र, कतर और अमेरिका की मदद से बातचीत की गई। इसमें इजराइल का प्रतिनिधित्व मोसाद चीफ डेविड बार्निया और शिन बेट चीफ रोनेन बार ने किया। वहीं, अमेरिका की तरफ से यहां पर ट्रम्प के दूत स्टीव विटकॉफ और बाइडेन के दूत ब्रेट मैकगर्क मौजूद रहे।

बिहार के श्रम मंत्री को धमकी देने वाला आजमगढ़ से गिरफ्तार

पटना। बिहार के श्रम मंत्री संतोष सिंह को धमकी देने के मामले में कार्रवाई हुई है। यूपी के आजमगढ़ से आरोपी संजय यादव को गिरफ्तार किया है। पटना की सेंट्रल एसपी स्वीटी सहरावत ने बताया कि डीएसपी के नेतृत्व में एक एसआईटी का गठन कर अनुसंधान शुरू की गई। इसमें धमकी भरे कॉल के नंबर की जांच हुई, तब लोकेशन आजमगढ़ जिले के फूलपुर थाना क्षेत्र का मिला। पटना पुलिस ने यूपी के फूलपुर पुलिस से संपर्क साधा। इसके बाद धमकी देने वाले युवक संजय को गिरफ्तार किया गया। आरोपी संजय यादव ने गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई के नाम पर नीतिश के श्रम मंत्री संतोष सिंह को धमकी दी थी। मंत्री से 30 लाख की डिमांड की गई थी। रुपए नहीं देने पर अंजाम भुगतने की बात कही गई थी। यूपी में गिरफ्तारी के बाद पटना पुलिस फ्लाइट से यूपी पहुंची। न्यायिक प्रक्रिया के बाद पटना लेकर आई। पूछताछ में यादव ने बताया कि वहां 3 महीने पहले मुंबई से यूपी अपने घर आया था। अपने घर के निर्माण कार्यों में लगा था। आर्थिक तंगी से परेशान होकर बिहार सरकार के कई मंत्रियों का नंबर निकाला, फोन करने लगा। इसमें उसका एक कॉल बिहार सरकार के श्रम संसाधन मंत्री संतोष कुमार सिंह का लगा। तभी आरोपी ने 30 लाख की रंगदारी मांगी, नहीं देने पर अंजाम भुगतने की धमकी दी।

महाराष्ट्र में तीन साल के दौरान 95,150 सड़क हादसे, 41,612 लोगों ने गंवाई जान

मुंबई। पिछले तीन वर्षों में महाराष्ट्र में कुल 95,150 सड़क दुर्घटनाएं हुई हैं, जिनमें 41,612 लोगों की जान चली गई है। सामने आए आंकड़ों के अनुसार राज्य में सड़क दुर्घटनाओं का सिलसिला जारी है। पिछले तीन सालों में यानी 2022 से 2024 तक राज्य में कुल 41,612 लोगों की मौत हुई है। इसका मतलब यह है कि दुर्घटना मृत्यु दर लगभग 43.73 प्रतिशत है। जो कि निश्चित रूप से चिंताजनक बात है। यह आंकड़े राज्य परिवहन विभाग (आरटीओ) द्वारा उपलब्ध कराई गई जानकारी के अनुसार सामने आए हैं। आंकड़ों से पता चला है कि राज्य में 64 प्रतिशत मौतें पीछे की सीट पर बैठे दोपहिया वाहन चलाने वाले लोगों की होती हैं। इनमें से 80 प्रतिशत मामलों में शव बिना हेलमेट के पाए गए। वहीं बात करें मुंबई की तो पिछले साल जनवरी से नवंबर के बीच मुंबई और महानगर क्षेत्र (एमएमआर) में 4,935 सड़क दुर्घटनाएं हुईं। इनमें से अकेले मुंबई में 2,319 सड़क दुर्घटनाएं हुईं। मुंबई महानगर क्षेत्र (एमएमआर) में दुर्घटनाओं में 1,108 लोग मारे गये। इसी अवधि के दौरान राज्य में 32,801 सड़क दुर्घटनाएं हुईं, जिनमें 13,823 लोगों की मौत हुई। इस बीच, बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं को रोकने के लिए मुंबई सहित पूरे महाराष्ट्र में रडार आधारित इंटरसेप्टर वाहन तैनात किए जा रहे हैं। जो कंपनियां प्रति घंटे 1,000 ई-चालान भेज सकेंगी, उन्हें काम करने की अनुमति दी जाएगी। इन वाहनों के शुरू हो जाने पर अगले 15 से 30 दिनों में राज्य भर में मृत्यु दर में कमी आने की संभावना है।

पूर्व आईएएस प्रोबेशनर पूजा खेडकर को गिरफ्तारी से राहत

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को पूर्व आईएएस प्रोबेशनर पूजा खेडकर को गिरफ्तारी से 14 फरवरी तक राहत दी। पूला पर सिविल सेवा परीक्षा में धोखाधड़ी करने और गलत तरीके से ओबीसी और विकलांगता कोटा का लाभ उठाने का आरोप लगा है। जस्टिस बी वी नागरत्ना और सतीश चंद्र शर्मा की पीठ ने अग्रिम जमानत की मांग वाली पूजा की याचिका पर दिल्ली सरकार और संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) को नोटिस दिया है। मामले की सुनवाई 14 फरवरी को होगी। पूजा पर आरोप है कि उन्होंने यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा 2022 के लिए आवेदन करते समय गलत जानकारी दी थी, ताकि वे आरक्षण लाभ ले सके। हालांकि, उन्होंने इन सभी आरोपों का खंडन किया है।

लालच-चालाकी नहीं आई काम, तिरुपति बालाजी मंदिर से सोना चुराते गिरफ्तार

-आउटसोर्स कर्मचारी कई दिनों से कर रहा था चोरी, 46 लाख का सोना बरामद

तिरुपति। आंध्र प्रदेश के तिरुमला तिरुपति देवस्थानम के कर्मचारी को भगवान वेंकटेश्वर स्वामी के मंदिर से आधा किलो से ज्यादा सोना चोरी करने के आरोप में गिरफ्तार किया है। कर्मचारी का नाम वी पेंचलैया है। उसने पिछले एक साल में 10 से 15 बार सोने के बिस्किट और ज्वेलरी चुराई। चोरी किए गया सोना 650 ग्राम था और उसकी कीमत 46 लाख रुपए है। तिरुपति मंदिर में लोग प्रसाद, साधारण सिक्कों से लेकर कीमती सोने और चांदी चढ़ाते हैं। मंदिर की दानपेटी में यह डाला जाता है। सोने की चोरी ने मंदिर प्रशासन में हड़कंप मचा दी है, जिस कर्मचारी ने मंदिर में सोने की चोरी की उसे एग्रीगोस कंपनी के जरिए से आउटसोर्स किया गया था। वह श्रीवारी परकमणि में तैनात था। वह धीरे-धीरे चोरी कर रहा था। खास बात है कि इस बार कर्मचारी वीरशेट्टी पेंचलय्या को मंदिर के भंडार से सोना और चांदी की वस्तुएं चुराते हुए रंगे हाथ पकड़ा गया। आरोपी कर्मचारी पेंचलय्या दो साल से तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) के लिए काम कर रहा था। इस दौरान उसने कई बार चोरी की। वह सोना चुराता और छिपाकर बाहर ले जाता था ताकि किसी को शक न हो। पुलिस ने बताया कि उस पर पर नजर रखी जा रही थी। उसे 100 ग्राम सोने का बिस्किट चुराते हुए पकड़ा गया। यह उसने चुराकर ट्रॉली के पाइप में छिपा दिया था। पुलिस पूछताछ में आरोपी ने सोने के बिस्कुट और गहने सहित कुल 655 ग्राम सोना और 157 ग्राम चांदी चुराने की बात कबूल की है। पुलिस ने उससे चोरी का सामान बरामद कर लिया है।

उद्धव की शिवसेना के नेता का छलका दर्द बोले- हमारी हालत भी कांग्रेस जैसी हो गई

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र को राजनैतिक चश्मे से देखा जाए तो सत्ता पक्ष हो या विपक्ष कोई भी खुश नहीं है। यहां आए दिन राज्य के उपमुख्यमंत्री अजित पवार दिल्ली के चक्कर लगाते दिख रहे हैं तो इधर विपक्षी दल उद्धव ठाकरे की शिवसेना के नेता का दर्द छलकता दिख रहा है। हाल ही में एक वरिष्ठ नेता और विधायक ने शिवसेना यूबीटी की तुलना कांग्रेस की हालत से कर दी। खास बात है कि ये घटनाक्रम ऐसे समय पर हुए हैं, जब मुंबई में बृहमुंबई महानगरपालिका की तैयारियां जारी हैं।

विधायक भास्कर जाधव ने पार्टी के काम करने के तरीकों पर सवाल उठा दिए। सोमवार को उन्होंने रत्नागिरी जिले में चिपलून और आसपास के क्षेत्रों के पदाधिकारियों के साथ बैठक की थी। उन्होंने कहा, यह कहते हुए दुख होता है, लेकिन हमारी पार्टी की हालत कांग्रेस जैसी हो गई है। हमारे पास काम नहीं करने वाले पदाधिकारियों और नेताओं को हटाने की हिम्मत

नहीं है। वरिष्ठ नेताओं और पदाधिकारियों के सुझाव सुनने वाला कोई नहीं है। उन्होंने यह भी सुझाव दिया है कि पार्टी के पदाधिकारियों का निश्चित कार्यकाल होना चाहिए। खास बात है कि उस दौरान बैठक में पूर्व सांसद विनायक राउत और उद्धव ठाकरे के करीबी संजय कदम भी मौजूद थे। जाधव ने कहा, हमें गलत फैसलों पर विचार करना होगा और आगे की प्रक्रिया बेहतर करनी होगी। यह संगठन को मजबूत करेगा और आगामी चुनावों में अहम भूमिका निभाएगा।

उन्होंने कहा कि भाजपा आज हिन्दुत्व सिखा रही है, लेकिन बालासाहब ठाकरे थे, जो ताकतवर कांग्रेस के खिलाफ खड़े हुए थे। उन्होंने कहा, पार्टी के कार्यकर्ता संगठन के लिए मेहनत करना चाहते हैं, लेकिन दुर्भाग्य से नेता उन लोगों का पक्ष लेते हैं, जो पैसा देते हैं। पार्टी कार्यकर्ता तब ही मेहनत कर सकेंगे, जब नेता ईमानदार होंगे। शिवसेना आग है और कभी कभी हमें जलते कोयलों पर चलना पड़ता है। इस पर, पार्टी के वरिष्ठ नेता संजय राउत ने कहा कि जाधव ने जो भी कहा, उस पर विचार किया जाएगा। साथ ही उन्होंने कहा कि ऐसे समय पर वरिष्ठ नेताओं को देखना चाहिए कि वह क्या बोल रहे हैं। वह जाधव की तरफ से पार्टी के काम करने के तरीकों पर सवाल उठाए जाने से नाराज दिखे।

अंतरिम जमानत के बाद जेल से रिहा होकर अपने आश्रम पहुंचे आसाराम बापू

जोधपुर । 2013 के बलात्कार मामले में राजस्थान हाईकोर्ट से अंतरिम जमानत मिलने के बाद आसाराम को जेल से रिहा कर दिया गया। इसके बाद वे जोधपुर स्थित पाल गांव के अपने आश्रम में पहुंचे, जहां उनके सेवादारों ने आतिशबाजी कर आसाराम का स्वागत किया। जोधपुर के मणाई आश्रम में नाबालिग शिष्या से बलात्कार के मामले में गिरफ्तारी के बाद 2 सितंबर 2013 को आसाराम को जेल में भेजा गया था। 25 अप्रैल 2018 को जोधपुर की विशेष पॉक्सो कोर्ट ने आसाराम को दोषी करार देकर उम्रकैद की सजा सुनाई थी। 11 साल 4 महीने और 12 दिन की सजा काटने के बाद उन्हें स्वास्थ्य आधार पर अंतरिम जमानत मिली। राजस्थान हाईकोर्ट ने आसाराम को उनकी उम्र और बिगड़ते स्वास्थ्य का हवाला देकर 31 मार्च तक जमानत दे दी। उनके वकील निशांत बोरदा ने कहा कि जमानत आवेदन में 7 जनवरी के सुप्रीम कोर्ट के एक पूर्व फैसले का हवाला दिया है, इसमें गुजरात के एक अलग मामले में जमानत दी गई थी।

कोर्ट ने जमानत के लिए कुछ शर्तें लगाईं हैं, इसमें आसाराम अपने अनुयायियों से समूह में नहीं मिल सकते, सभाओं को संबोधित नहीं कर सकते या मीडिया से बात नहीं कर सकते, उन्हें अपने साथ तैनात तीन सुरक्षाकर्मियों का खर्च उठाना होगा। इसके अलावा, उन्हें देश भर में किसी भी आश्रम में रहने और आश्रम या अस्पताल में इलाज कराने की अनुमति शामिल है।

मायावती ने बिना नाम लिए शाह पर किया हमला, बाबा साहेब का अपमान किया, पश्चाताप भी नहीं किया

लखनऊ (एजेंसी)। बसपा सुप्रीमो और पूर्व सीएम मायावती का 69वां जन्म दिन बुधवार को लखनऊ में पार्टी दफ्तर में मनाया गया। इस मौके पर मायावती ने बिना नाम लिए केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की सरकारों में बाबा साहेब से लेकर सभी दलित चिंतकों की अवहेलना की गई है। बीजेपी भी मामले में पीछे नहीं है। इस पार्टी के बड़े नेता और मंत्री ने संसद में बाबा साहेब का अपमान किया है और इसका पश्चाता भी नहीं किया है।

गौरतलब है कि पिछले दिनों शीतकालीन सत्र के दौरान बाबा साहेब आंबेडकर पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह की टिप्पणी को लेकर काफी विवाद हुआ था। कांग्रेस सहित अन्य विपक्षी दलों ने शाह का भाषण सोशल मीडिया पर शेयर कर माफी मांगने की मांग की थी। मायावती ने कहा कि गरीब दलितों के लिए हमने अपनी सरकार में

जो योजनाएं चाले की, उन्हें कई राज्यों ने लागू किया। पिछले कुछ सालों से दलित वोट बैंक को तोड़ने के लिए सपा, कांग्रेस और बीजेपी के लोग लगे हैं। इन तीनों दलों से हमें सावधान रहना होगा है। आज के समय में अल्पलसंख्याक समुदाय के लोग भी दबा महसूस कर रहे हैं। गरीबी और बेरोजगारी से सब परेशान हैं। बसपा कार्यकर्ताओं से अपील कर मायावती ने कहा कि कांग्रेस, बीजेपी और अन्य जातिवादी पार्टियों से सतर्क हो जाओ। अपने अभियन को बढ़ाओ। हमें दुख इस बात का है कि चुनाव में हमारे लोग ऐसी सरकारों को सत्ता में लाते हैं जो पिछड़ों और दलितों को दबाने का काम करते हैं।

कर्नाटक में फिर शुरु हुई तकरार

नए सीएम का इंतजार: ढाई साल पूरे हुए अब सिद्धारमैया को छोड़ना होगी सीएम की कुर्सी?

बेंगलुरु (एजेंसी)। कर्नाटक में एक बार फिर सीएम की कुर्सी को लेकर तकरार बढ़ती नजर आ रही है। हालांकि, अब तक पार्टी या किसी नेता ने आधिकारिक तौर पर कुछ नहीं कहा है। इसी बीच खबरें हैं कि राज्य सरकार में मंत्री आरबी टिम्मापुर ने भी सीएम बनने की इच्छा जाहिर कर दी है। खास बात है कि ये घटनाक्रम ऐसे समय पर हो रहे हैं, जब मुख्यमंत्री सिद्धारमैया लगभग आधा कार्यकाल पूरा कर चुके हैं। 2023 में चुनाव जीतने के बाद राज्य में कथित तौर पर ढाई साल बाद सीएम बदलना तय हुआ था।

टिम्मापुर ने कहा, दलित को क्यों मुख्यमंत्री पद नहीं दिया जाना चाहिए? मुझे सीएम क्यों नहीं बनाया जाना चाहिए? खास बात है कि राज्य सरकार में दलित नेता कई अहम पदों पर रहे, लेकिन अब तक कोई भी सीएम नहीं रहा है। कहा जा रहा है कि मुख्यमंत्री पद की रेस में डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार सबसे प्रबल दावेदार हैं। दरअसल, 2023 विधानसभा चुनाव में जीत के बाद कहा जा रहा था कि शिवकुमार सीएम पद के लिए दावेदारी पेश कर रहे हैं।जानकारों का कहना है कि दलित नेता पर सहमति बनाने के लिए एससी एसटी विधायकों की बैठक बुलाई गई थी, लेकिन कांग्रेस महासचिव रणदीप सुरजेवाला के दखल के बाद इसे रद्द कर दिया गया। कथित तौर पर शिवकुमार के कहने पर हस्तक्षेप किया गया था। जी परमेश्वरा का कहना है, जैसा कि दिखाया जा रहा कि इसे कैंसिल कर दिया ग ा है। ऐसा नहीं है, सिर्फ टाला गया है।

उन्होंने कहा, कोई भी बैठक को नहीं रोक सकता । अगर कोई भी कहता है कि वे दलित मुद्दों र बात करने के लिए बैठक बर्दाश्त नहीं कर सकते, तो हम उन्हें करारा जवाबदेंगे। ा मारे पास क्षमता और ताकत है।

रिपोर्ट के अनुसार, पार्टी के नेताओं का कहना है कि अपना उत्तराधिकारी चुनने के लिए सिद्धारमैया रणनीतिक रुख अपना रहे हैं। एक नेता ने कहा, यह खुला राज है कि वह दलित मुख्यमंत्री के आसपास चर्चाएं बढ़ा रहे हैं, ताकि पार्टी के अंदर विरोध को कम किया जा सके। खासतौर से ऐसे समय पर जब उनका आधा कार्यकाल पूरा रहो रहा है। हालांकि, उनकी इस रणनीति का खासतौर से शिवकुमार कैंप विरोध कर रहा है।

वर्क वीजा पर रूस ले जाकर युवाओं को यूक्रेन के साथ जंग में उतार दिया

-कारपेंटर, रसोइयों को रूस में बनाया सैनिक

वाराणसी (एजेंसी)। रसोइया और कारपेंटर के वीजा पर रूस गए उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ और मऊ के 14 युवकों को वहां की सेना में भर्ती कराकर रूस-यूक्रेन की जंग में उतार दिया। इनमें से अब तक 3 युवकों की मौत हो गई। 2 की पैर में गोली लगने के बाद भारत वापसी हुई। 9 परिवारों को अभी भी अपने बच्चों के घर लौटने का इंतजार है। परिवार वालों ने सरकार से बच्चों को सकुशल वापस लाने की गुहार लगाई है। अब भारतीय विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रंधीर जायसवाल ने इस मुद्दे को फिर से रूस के सामने सख्ती के साथ उठाया। इसके बाद रूस ने जल्द ही भारतीयों को वापस भेजने का आश्वासन दिया। ऐसे में अब इन 9 परिवारों के अपनों के लौटने की उम्मीद जाग गई है।

मऊ-आजमगढ़ जिले का एजेंट विनोद पूर्वांचल के 14 लोगों को रूस ले गया था। वहां पर 2 लाख रुपए महीने की सैलरी मिलने की बात कही गई। उसने सभी के पासपोर्ट बनवाए। फिर सभी का रूस में कारपेंटर, कुक और सिक्योरिटी गार्ड के काम के लिए वीजा बनवाया। फिर सभी को रूस ले गया। अप्रैल

तक सभी की अपने घर वालों से बात होती रही। उसके बाद नहीं। विनोद की भी आखिरी बार अप्रैल में पिता से बात हुई थी। उसके बाद से उससे संपर्क नहीं हो पा रहा। अब तक आजमगढ़ के कन्हैया यादव और मऊ के श्यामसुंदर और सुनील यादव की रूस-यूक्रेन जंग में मौत हो गई है। आजमगढ़ के राकेश कुमार और मऊ के बृजेश यादव घायल होने के बाद घर लौट आए। वहीं पूर्वांचल से गए विनोद यादव, जोगिंदर यादव, अरविंद यादव, रामचंद्रा, अजहरुद्दीन खान, हुमेश्वर प्रसाद, दीपक, धीरेंद्र कुमार का अब तक कुछ पता नहीं चल पाया है। घर वालों को उनके आने का इंतजार है।

कन्हैया यादव की गोली लगने से मौत

आजमगढ़ के बनकटा के रहने वाले कन्हैया यादव (41) की रूस और यूक्रेन के बीच जारी युद्ध के दौरान गोली लगने से मौत हो गई। उसका शव 23 दिसंबर को गांव लाया गया। पिता फौजदार यादव ने बताया- कन्हैया एक एजेंट के जरिए रसोइए का वीजा हासिल कर 16 जनवरी, 2024 को रूस गया था। वहां उसे कुछ दिन रसोइए की ट्रेनिंग दी गई। इसके बाद उसे सेना की ट्रेनिंग देकर रूसी सेना के साथ युद्ध के लिए भेज दिया गया। उन्होंने बताया कि युद्ध में कन्हैया घायल हो गया और इलाज के दौरान जून में उसकी मौत हो गई। कन्हैया ने 9 मई को युद्ध में घायल होने की सूचना घर पर दी थी। वह 25 मई तक घर वालों के संपर्क में था, लेकिन इसके बाद कुछ पता नहीं। मास्को में भारतीय दूतावास की ओर से 6 दिसंबर को फोन आया था और 17 जून को इलाज के दौरान मौत हो गई। इसके बाद 23 दिसंबर को शव उसके पैतृक गांव लाया गया। कन्हैया के परिवार में पत्नी गीता यादव, दो बेटे अजय (23) और विजय (19) हैं। अजय यादव का आरोप है कि रूस की सरकार ने 30 लाख रुपए मुआवजे के तौर पर दिया है, लेकिन परिवार को अभी तक यह मुआवजा नहीं मिला।

शरद पवार ने मराठी साहित्यिक समारोह का उद्घाटन करने पीएम को भेजा आमंत्रण

यह सम्मेलन दिल्ली में 21 से 23 फरवरी तक आयोजित किया जाएगा

मुंबई (एजेंसी)। एनसीपी (एसपी) प्रमुख शरद पवार ने पीएम नरेंद्र मोदी को एक प्रमुख मराठी साहित्यिक समारोह का उद्घाटन करने के लिए आमंत्रित किया है। इस कदम को मराठी को शास्त्रीय भाषा का दर्जा देने के लिए केंद्र के प्रति आभार के रूप में देखा जा रहा है। इस निमंत्रण ने शरद पवार की राजनीतिक रणनीति के बारे में अटकलों को भी जन्म दे दिया है, क्योंकि पिछले साल महाराष्ट्र चुनावों में खराब प्रदर्शन के बाद उनकी पार्टी चुनौतियों का सामना कर रही है।

पीएम मोदी को इस सम्मेलन के लिए आमंत्रित किया है। आयोजन समिति के अध्यक्ष खुद शरद पवार हैं। यह कार्यक्रम अखिल भारतीय मराठी साहित्य महामंडल के बैनर तले आयोजित किया जाता है। पीएम मोदी को भेजे निमंत्रण में शरद पवार ने कहा कि यह पहली बार है कि यह सम्मेलन दिल्ली में 21-23 फरवरी तक आयोजित किया जा रहा है और याद दिलाया कि इस कार्यक्रम के 37वें संस्करण का उद्घाटन पूर्व पीएम जवाहरलाल नेहरू ने किया था।

शरद पवार ने सम्मेलन के

ऐतिहासिक महत्व बताते हुए कहा कि यह 1878 में शुरू हुआ था। तब इसे पहली बार न्यायमूर्ति महादेव गोविंद रानाडे ने पुणे में ग्रंथकार सम्मेलन के रूप में आयोजित किया था। इसमें लोकमान्य तिलक, नामदार गोखले, वी डी सावरकर और काकासाहेब गाडगिल जैसी हस्तियां शामिल हुई थी। पीएम मोदी को लिखे अपने पत्र में उन्होंने हाल ही में मराठी को शास्त्रीय भाषा के रूप में मान्यता दिए जाने के मद्देनजर पीएम मोदी के इस कार्यक्रम का उद्घाटन किए जाने की उपयुक्तता पर जोर दिया। पवार ने लिखा कि हाल ही में आपके कार्यकाल के दौरान मराठी भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा देने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया। इस पृष्ठभूमि में, यह उचित होगा कि इस वर्ष मराठी भाषा और संस्कृति के इस प्रभावशाली संगम का उद्घाटन आपके हाथों हो।

एनसीपी(एसपी) सहयोगी शिवसेना (यूबीटी) ने एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण पेश करते हुए इस बात पर जोर दिया कि शास्त्रीय भाषा का दर्जा सामूहिक प्रयासों का परिणाम है। शिवसेना (यूबीटी) के सांसद संजय राउत ने कहा कि पिछले 30-35 सालों में हर राजनीतिक नेता और सीएम ने मराठी को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिलाने के लिए काम किया। यह एक बड़ा सम्मान है। यह सामूहिक योगदान के कारण है, न कि किसी एक पार्टी या किसी नेता के कारण।

अवैध घुसपैठ रोकने भारत लगा रहा बाड़, बढ़ रही रार

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत-बांग्लादेश के बीच इनदिनों सबकुछ सही नहीं चल रहा है। रविवार को बांग्लादेशी विदेश मंत्रालय ने भारतीय उच्चायुक्त को तलब किया है। बांग्लादेश ने दोनों देशों की सीमा पर बीएसएफ द्वारा लगाए जा रहे बाड़ को लेकर तीखी प्रतिक्रिया जाहिर की है। इसके बाद दोनों देशों के बीच एक नया विवाद खड़ा हो गया है। दरअसल आजादी के बाद से भारत लगातार अपने पड़ोसी देशों से सीमा विवाद पर उलझा है। भारत पहले से ही सीमा को लेकर पाकिस्तान और चीन के साथ उलझा हुआ है। अब बांग्लादेश भी टेंशन दे रहा है। इसका ताजा उदाहरण बांग्लादेश विदेश मंत्रालय द्वारा भारतीय उच्चायुक्त को रविवार को तलब करना।

बांग्लादेश-भारत सीमा पर बाड़ के निर्माण को लेकर दोनों देशों में विवाद पैदा हो गया है। भारत बांग्लादेश से लगातार हो रहे घुसपैठ को रोकने के लिए सीमा पर बाड़ का बना रहा है, लेकिन न केवल सीमा पर बने गांव बल्कि बांग्लादेशी सरकार की तरफ से तीखी प्रतिक्रिया आई है। बांग्लादेश ने भारतीय उच्चायुक्त प्रणय वर्मा को तलब किया था। इसके बाद से भारत-बांग्लादेश के रिश्तों में खटास दिख रही है। रिश्तों की ये खटास शेख हसीना के सत्ता से बेदखल होने के बाद से पैदा हुई जो कि आज भी जारी है।

बांग्लादेश में वर्तमान में नोबेल शांति पुरस्कार विजेता मो. यूनुस की अंतरिम देश को चला रही है। यूनुस के सत्ता आने के बाद से बांग्लादेश में भारत विरोधी लहर बनी हुई है। बांग्लादेश लगातार भारत से हसीना को डिपोर्ट करने की मांग कर रहा है। तब उधर भारत के कट्टर दुश्मन पाकिस्तान से प्यार वाली बातें कर रहा हैं। जहां यूनुस सरकार पाकिस्तान से लगातार रिश्तों को बेहतर कर रही है। इसी कड़ी में पाकिस्तान से अलग होने के बाद से बांग्लादेश ने पहली बार वीजा को आसान करने पर जोर दिया है। प केस्तान के साथ व्यापार को बढ़ाने पर भी जोर दिया ज रहा है। माना जा रहा है, बांग्लादेश की वर्तमान अंतरिम सरकार कट्टरपंथियों के प्रति प्रेम वाली भावन दिखा रही है।

इधर बांग्लादेश ने भारतीय उच्चायुक्त को तलब कर कहा, भारत द्विपक्षीय समझौते व उल्लंघन कर रहा है। भारत-बांग्लादेश सीमा पर पांच स्थानों पर बाड़ लगाने की कोशिश कर रहा है। सीम पर नया विवाद- भारतीय उच्चायुक्त बांग्लादेश के विदे श सचिव जशीम उद्दीन से मुलाकात करने पहुंचे। करी 45 मिनट तक बैठक चली। बैठक के बाद भारत य उच्चायुक्त ने कहा, 'मैंने विदेश सचिव से मुलाका कर क्राइम मुक्त बॉर्डर सुनिश्चित करने, तस्करी, अपराधियों की आवाजाही और मानव तस्करी व चुनौतियों का प्रभावी ढंग से समाधान करने की भा त की प्रतिबद्धता पर चर्चा की।